बिहार सरकार

जीविका

मधेपुरा जिला में जीविका के बढ़ते कदम

उड़ान

मौन क्रांति की अग्रदूत महिलाओं की कहानियाँ

उड़ान

बिहार सरकार

जीविका

(गरीबी निवारण हेतु बिहार सरकार की पहल)

बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति

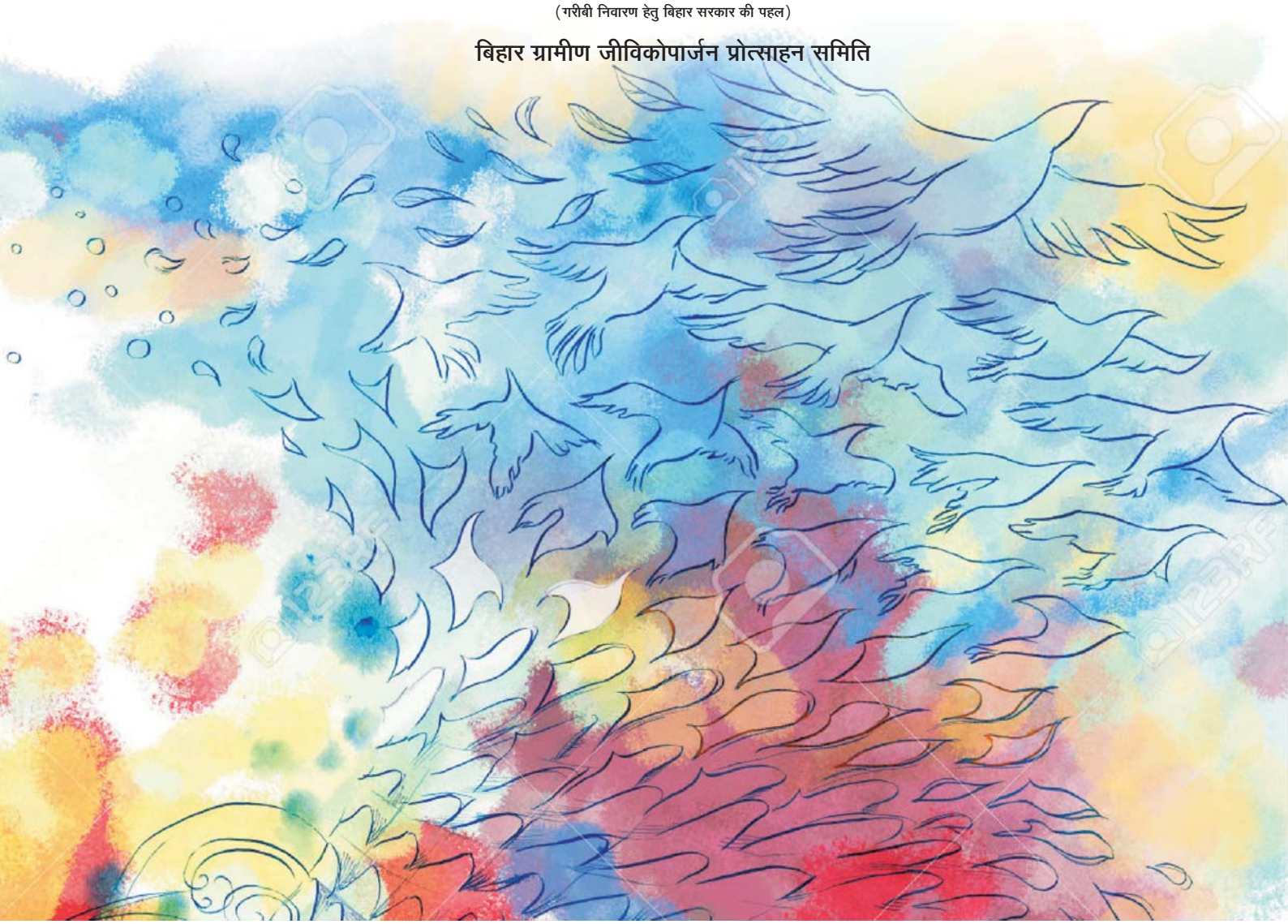

मार्गदर्शन	:	श्री बालामुरूगन डी., मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी
निर्देशन	:	श्रीमती महुआ राय चौधरी (परियोजना समन्वयक – गवर्नेंस एवं नॉलेज मैनेजमेंट)
		श्री अजय कुमार (जिला परियोजना प्रबंधक –मधेपुरा)
संकलन एवं संपादन	:	श्री पवन कुमार प्रियदर्शी (परियोजना प्रबंधक–संचार)
		श्री राजीव रंजन (प्रबंधक – संचार, समस्तीपुर) श्री विवेक कुमार (प्रबंधक – संचार, मधेपुरा)
रूपरेखा	:	श्रीमती प्रिया प्रियदर्शी, डी.टी.पी. ऑपरेटर–सह–डिजाइनर
प्रकाशक	:	जीविका जिला परियोजना समन्वयन इकाई – मधेपुरा, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, बिहार

श्री बालामुरुगन डी.
मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी, जीविका
सह राज्य मिशन निदेशक

संदेश

'उड़ान–मौन क्रांति की अग्रदूत महिलाओं की कहानियाँ' मधेपुरा जिला जीविका टीम के समन्वित प्रयास का सार्थक परिणाम है। पुस्तक में जीविका से जुड़ी दीदियों की सफलताओं को रेखांकित करना एक बड़ी उपलब्धि है। इस पुस्तिका द्वारा मधेपुरा में जीविका की यात्रा को काफी बारीकी एवं प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत किया गया है। जीविका से सम्बद्ध महिलाओं के उत्साह एवं उनकी उपलब्धियों की कहानियाँ प्रेरणाप्रद, शिक्षाप्रद एवं जीविका के उद्देश्यों की सफलता को रेखांकित करती है। कहानियों से यह पता चलता है कि जीविका दीदियों ने अपने संकल्प के प्रति समर्पण बनाये रखा जो उनके लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में सबसे बड़ा आधार बना।

जीविका द्वारा समाजिक बदलाव की दिशा में किये जा रहे कार्य काबिले तारीफ हैं और मैं इनकी निरंतर सफलता की कामना करता हूँ।

(बालामुरुगन डी0)
मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी

मो. सौहेल,
जिला पदाधिकारी,
मधेपुरा।

संदेश

मधेपुरा में महिलाओं के उत्थान, स्वाबलंबीकरण एवं सशक्तीकरण की दिशा में जीविका परियोजना का अहम योगदान है। जीविका द्वारा महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तीकरण की दिशा में लगातार उल्लेखनीय कार्य किये जा रहे हैं। समाज में फैली कुरीति, बुराइयों एवं अंधविश्वास के खिलाफ जीविका की दीदियों का संघर्ष जारी है। वे अपने छोटे–छोटे प्रयासों से बड़े उद्देश्यों को प्राप्त कर रही हैं।

जीविका की दीदियों के संघर्ष, प्रयास एवं पहल को कहानी के रूप में पुस्तक का स्वरूप दिया जाना काफी सराहनीय है। इस पुस्तक से समाज के अन्य वर्ग भी प्रेरणा लेंगे, ऐसी मेरी आशा है।

मैं इस पुस्तक के सफल प्रकाशन की मंगलकामना करता हूँ।

(मो० सौहेल)
जिलाधिकारी, मधेपुरा

श्री अजय कुमार सिंह
जिला परियोजना प्रबंधक
जीविका

संदेश

मधेपुरा की गरीब दीदियों ने जीविका से जुड़कर अपने आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति को संवारा है। यह उनके संकल्प एवं दृढ़ इच्छाशक्ति का परिणाम है। यह अपने आप में एक अद्‌भुत उदाहरण है। हमने उनके द्वारा किये गए प्रयासों को इस पुस्तक के माध्यम से आपके समक्ष प्रस्तुत किया है। आय संवर्द्धन एवं जीविकोपार्जन के अनेक क्षेत्रों में दीदियों द्वारा प्रारंभ की गयी आर्थिक गतिविधियों में से कुछ चुनिन्दा उदाहरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। दीदियों के मौन आंदोलन से वस्तुस्थिति का सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि किस तरह दीदियों के परिवार में अपेक्षित बदलाव हो रहा है। जीविका को इस मुकाम तक पहुँचाने में सचिव, ग्रामीण विकास विभाग एवं जीविका के पूर्व कार्यपालक पदाधिकारी श्री अरविन्द कुमार चौधरी महोदय का अविस्मरणीय योगदान रहा है। वहीं, जीविका के वर्तमान मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी, श्री बालामुरुगण डी. महोदय को तीव्र गति से परियोजना को आगे बढ़ा रहे हैं। मैं जीविका की दीदियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ कि कवि की कल्पना की उड़ान से भी ऊँची सफलताएँ प्राप्त करें।

इस पुस्तक में तथ्यों के संकलन एवं प्रस्तुति में मधेपुरा के वर्तमान एवं पूर्व संचार प्रबंधक श्री विवेक कुमार एवं श्री राजीव रंजन का योगदान प्रशंसनीय है।

AK Singh

(अजय कुमार सिंह)
जिला परियोजना प्रबंधक – मधेपुरा

विषय सूची

विषय	पेज संख्या
अध्याय 1 – मधेपुरा एक संक्षिप्त इतिहास	01–01
अध्याय 2 – जीविका एक परिचय	02–05
अध्याय 3 – मधेपुरा में जीविका की उपलब्धि	06–07
अध्याय 4 – संस्था निर्माण एवं क्षमतावर्द्धन से खुला विकास का द्वार	08–13
अध्याय 5 – सूक्ष्म वित्त पोषण : सामुदायिक संगठनों को बनाया सबल	14–18
अध्याय 6 – तकनीकी ज्ञान से समृद्ध होती कृषि	19–23
अध्याय 7 – पशुपालन : आर्थिक स्वावलंबन	24–27
अध्याय 8 – उत्पादक समूह : गाँव की नारी बनी व्यपारी	28–38
अध्याय 9 – आजीविका का खुला नया द्वार	39–45
अध्याय 10 – मलबरी की खेती : सुनहरे भविष्य की तस्वीर	46–48
अध्याय 11 – मुर्गी पालन : बदली जीविका दीदियों की किस्मत	49–51
अध्याय 12 – महिला किसान सशक्तीकरण परियोजना	52–53
अध्याय 13 – बदलाव : खुले में शौच से मुक्ति अभियान में अग्रणी	54–57
अध्याय 14 – प्रयास : मुख्यमंत्री संथाल सुनिश्चित रोजगार कार्यक्रम	58–58
अध्याय 15 – मिशन अंत्योदय : ग्राम समृद्धि एवं स्वच्छता पखवाड़ा	59–59
अध्याय 16 – सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जीविका दीदियों की जंग	60–61

अध्याय - 01

मधेपुरा : एक संक्षिप्त इतिहास

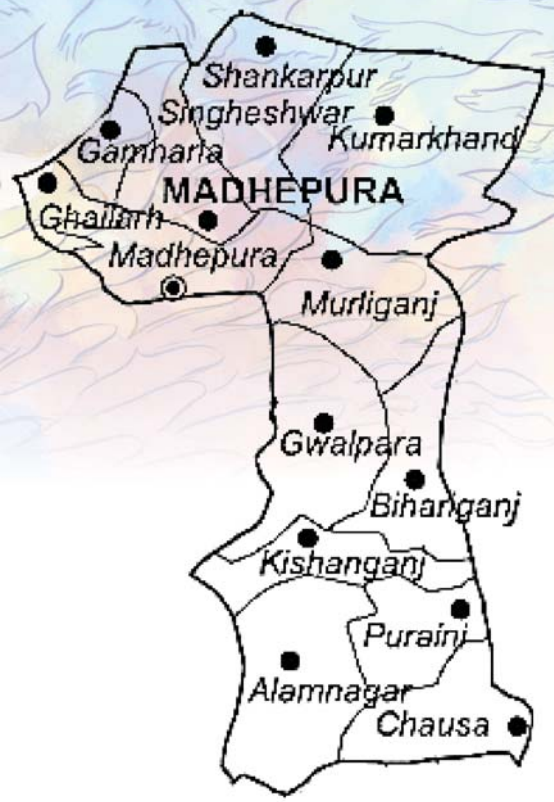

बिहार के कुल 38 जिलों में से एक मधेपुरा चारों तरफ से कुल 6 जिलों से घिरा हुआ है। इसके उत्तर में अररिया तथा सुपौल, दक्षिण में खगड़िया तथा भागलपुर, पूरब में पूर्णिया और पश्चिम में सहरसा जिला हैं। जिले का कुल क्षेत्रफल 1788 वर्ग किलोमीटर है। 02 अनुमंडल मधेपुरा और उदाकिशुनगंज, 13 प्रखंड तथा 13 अंचल से बने इस जिले की कुल आबादी 2011 की जनगणना के अनुसार 20 लाख 1 हजार 7 सौ 62 की आबादी है, जिसमें 10 लाख 47 हजार 5 सौ 99 पुरूषों की तथा 9 लाख 54 हजार 203 महिलाओं की आबादी है। जिले में कुल 170 पंचायत है। 09 मई 1981 को मधेपुरा एक जिला के रूप में सहरसा से अलग हुआ और मधेपुरा तथा उदाकिशुनगंज अनुमंडल को मिलाकर एक जिले का रूप इसे दिया गया। इससे पूर्व 01 अप्रैल 1954 को सहरसा, भागलपुर जिला से अलग होकर जिला बना था, वैसे मधेपुरा 03 सितम्बर 1945 से ही भागलपुर जिला के अंतर्गत सबडिवीजन के रूप में था। वर्तमान मधेपुरा 09 मई 1845 को सबडिवीजन के रूप में अस्तित्व में आया। उस समय सहरसा जो आज जिला है, मधेपुरा का रेवन्यू सर्किल था। जब सहरसा 01 अप्रैल 1954 को जिला बना तो मधेपुरा सहरसा जिले के अंतर्गत एक अनुमंडल था।

मधेपुरा में कुल नगर निकायों की संख्या 02 है एक मधेपुरा एवं दूसरा मुरलीगंज। जिले में कुल 21 थाने हैं। मधेपुरा में लिंग अनुपात 1 हजार की पुरूषों की आबादी पर 914 महिलाएं मात्र है।

जिला का क्षेत्रफल–1788 वर्ग कि0मी0 है, वहीं आबादी का घनत्व (स्क्वायर किलोमीटर)–1116 है।

मधेपुरा में कुल कृषि योग्य भूमि–324311.56 एकड़ तथा गैर कृषि योग्य भूमि–121226.07 एकड़ है। इस जिले की मुख्य फसल–चावल, गेहूं, मक्का, पटवा है तथा इस जिले के दक्षिण सीमा से कोसी नदी गुजरती है।

अध्याय - 02

जीविका : एक परिचय

बिहार के उत्तर पूर्व में स्थित कोसी क्षेत्र लगातार प्राकृतिक आपदाओं की मार झेलता रहा है। इस वजह से यहाँ बुनियादी सुविधाएं और जीविकोपार्जन से जुड़ी गतिविधियाँ सुचारू रूप से कार्यान्वित नहीं हो पा रही थी। वर्ष 2008 में भी कुशहा बांध टूटने के कारण पूरा कोसी क्षेत्र प्रलयकारी बाढ़ की चपेट में आ गया था। इससे यहाँ जान–माल की भारी क्षति हुई, जिसका असर खेतो एवं पशुओं पर भी दिखा। पहले से ही गरीबी की मार झेल रहे कोसीवासियों के लिए जीवनयापन कर पाना बहुत कठिन था। ऐसे में बड़ी संख्या में गरीब परिवार रोजी–रोटी की तलाश में मधेपुरा से दूसरे प्रदेशों की ओर पलायन करने लगे।

जीविका की शुरुआत

स्थिति की गंभीरता को देखते हुए बिहार सरकार ने विश्व बैंक सम्पोषित कोसी फ्लड रिकवरी प्रोजेक्ट की शुरुआत की थी। इसके तहत एक ओर जहाँ भवन निर्माण एवं यातायात के साधनों के विकास का जिम्मा उक्त प्रोजेक्ट ने अपने पास रखा वहीं जीविकोपार्जन की पुनर्प्राप्ति एवं सामुदायिक विकास का कार्य 'जीविका' को सौंपा गया। इसी योजना के तहत मधेपुरा जिले में जीविका परियोजना की शुरुआत की गई। 2008 में आयी कोसी के बाढ़ में बुरी तरह तबाह हुए जिले के कुमारखंड प्रखंड में अक्टूबर 2009 को गांधी जयंती के मौके पर ''जीविका'' ने अपना पहला कदम रखा। कुमारखंड में काम शुरू करने के बाद मधेपुरा जिले के 05 अन्य प्रखंडों यथा मधेपुरा सदर, उदाकिशुनगंज, बिहारीगंज, ग्वालपाड़ा एवं मुरलीगंज में अपना विस्तार करते हुए दिसम्बर 2010 से अपने कार्यक्रमों की शुरुआत कर दी।

इन प्रखंडों में मिली सफलता को देखते हुए जिले के बाकी 7 प्रखंडों – सिंहेश्वर, गम्हरिया, घैलाढ़, शंकरपुर, चौसा, पुरैनी एवं आलमनगर को भी जनवरी 2014 से राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन (एस.आर.एल.एम.) के तहत कार्यान्वित किया गया। भारत सरकार द्वारा संचालित स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना को ही राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एन.आर.एल.एम.) के रूप में पूरे देश में लागू किया गया है। खास बात यह है कि पहले की योजना आपूर्ति आधारित थी जबकि नए रूप में शुरू किए गए राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन को मांग के आधार पर क्रियान्वित किया जा रहा है। इसके अलावा एस.जी.एस.वाई की व्यवस्थागत खामियों को भी इसमें दूर करने का प्रयास किया गया है।

चरण	समय	प्रखंड
प्रथम चरण	अक्टूबर 2009	कुमारखंड
द्वितीय चरण	दिसम्बर 2010	मधेपुरा सदर, उदाकिशुनगंज, बिहारीगंज, ग्वालपाड़ा, मुरलीगंज
तृतीय चरण	जनवरी 2014	सिंहेश्वर, गम्हरिया, घेलाढ़, शंकरपुर, चौसा, पुरैनी, आलमनगर

उद्देश्य एवं कार्यप्रणाली

जीविका का मूल उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र की गरीब महिलाओं को स्थायी आजीविका उपलब्ध कराते हुए उन्हें सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से सशक्त बनाना है ताकि वे गरीबी के दुष्चक्र से बाहर निकल सकें। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु जीविका द्वारा सर्वप्रथम गाँवों का सामाजिक एवं आर्थिक आकलन करने के बाद एक समान स्तर की 10 से 15 गरीब एवं अत्यंत गरीब महिलाओं को मिलाकर एक स्वयं सहायता समूह (एस.एच.जी.) का गठन किया जाता है। यह समूह इनके लिए एक मंच प्रदान करता है, जहाँ उनमें विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक मुद्दों को लेकर समझ पैदा होती है और इससे उन्हें अपने जीवन स्तर में बदलाव लाने में मदद मिलती है।

समूह का गठन होने के बाद सदस्यों को विभिन्न मॉड्यूल्स का प्रशिक्षण दिया जाता है। पहले मॉड्यूल के अंतर्गत गरीबी, गरीबी का दुष्चक्र, इससे बाहर निकलने के रास्ते और स्वयं सहायता समूह की आवश्यकता आदि के बारे में बताया जाता है। इसी तरह दूसरे मॉड्यूल के तहत समूह की बैठक की प्रक्रिया, एजेंडा, समूह के नियम, बचत, लेन–देन आदि की जानकारी दी जाती है। बैठक की प्रक्रिया में प्रार्थना एवं परिचय जैसे विषय शामिल हैं। समूह के सदस्य आपसी परिचय के माध्यम से एक दूसरे को अच्छी तरह जान–समझ पाती हैं और उनमें आपसी विश्वास एवं एकता का वातावरण पैदा होता है। साथ ही उनमें दूसरों के सामने अपनी बातें रखने की क्षमता भी विकसित होती है।

मॉड्यूल तीन में नेतृत्व का महत्त्व, इसकी जिम्मेदारी और बुक्स ऑफ रिकॉर्ड की महत्ता आदि पर प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके बाद चौथे मॉड्यूल में समूह के कार्यों की सीमाएं एवं ग्राम संगठन की आवश्यकता के बारे में बताया जाता है। इसके अतिरिक्त महिलाओं को नियमित रूप से स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वच्छता के अलावा विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराई जाती है। इन प्रशिक्षणों एवं जानकारियों से महिलाओं में जागरूकता एवं बौद्धिक क्षमता का स्तर बढ़ता है। परिणामस्वरूप आगे चलकर वे सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का समुचित लाभ ले पाती हैं।

इसी तरह आर्थिक सशक्तीकरण की दिशा में जीविका महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ने के लिए प्रोत्साहित करती है। इसके लिए सबसे पहले उन्हें नियमित रूप से सामूहिक बचत के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। महिलाएँ अपनी सीमित आय में से जरूरी राशि बचाकर समूह स्तर पर एक समान बचत करती हैं। इसके बाद उनकी आवश्यकताओं और उनके पास उपलब्ध संसाधनों का आकलन किया जाता है एवं जरूरत के अनुरूप अतिरिक्त संसाधन मुहैया कराया जाता है ताकि वे अपने लिए कोई आजीविका शुरू कर सकें। इससे ग्रामीण स्तर पर उन्हें स्वरोजगार उपलब्ध कराने में मदद मिलती है। जीविकोपार्जन से जुड़ी गतिविधियों में मुख्य रूप से कृषि, पशुपालन (गाय, भैंस या बकरी पालन), बैकयार्ड मुर्गी पालन, चाय, पान, सब्जी, अंडा, किराना, नाश्ते, मिठाई, कपड़े, चूड़ी आदि की छोटी दुकानें व अन्य प्रकार के छोटे–मोटे व्यवसाय शामिल हैं। इन गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए जीविका प्रयास कर रही है ताकि ग्रामीण महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार लाया जा सके।

जीविका सम्पोषित स्वयं सहायता समूहों का जीवन चक्र

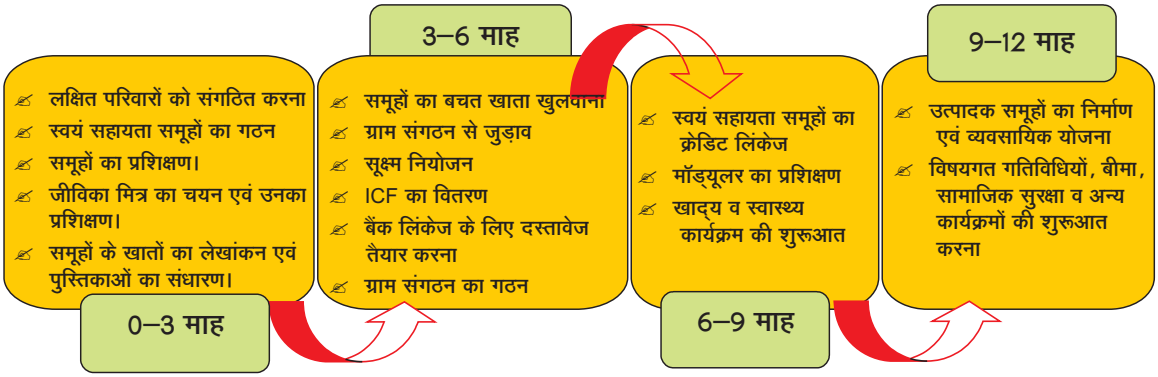

बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति
जीविका
(गरीबी निवारण हेतु बिहार सरकार की पहल)
राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन
मतदाता जागरूकता अभियान
माणिकपुर संकुल, मधेपुरा सदर, मधेपुरा
बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति
जीविका
(गरीबी निवारण हेतु बिहार सरकार की पहल)
राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन
मतदाता जागरूकता अभियान
प्रखंड परियोजना क्रियान्वयन इकाई-मधेपुरा सदर, मधेपुरा

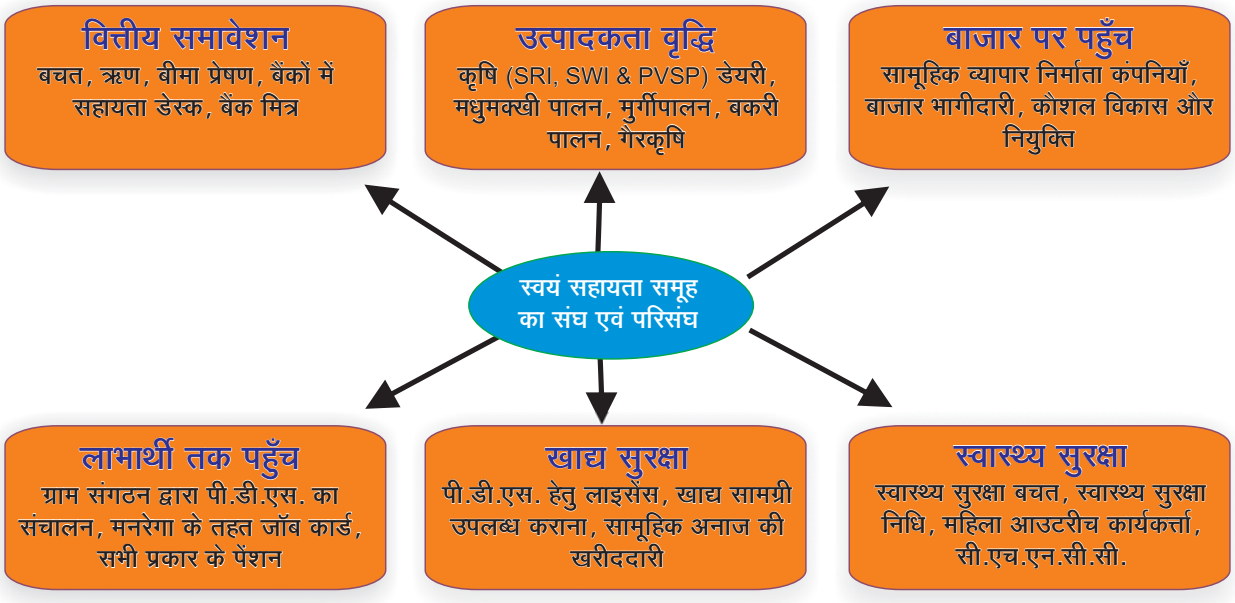
वित्तीय समावेशन
बचत, ऋण, बीमा प्रेषण, बैंकों में सहायता डेस्क, बैंक मित्र
उत्पादकता वृद्धि
कृषि (SRI, SWI & PVSP) डेयरी, मधुमक्खी पालन, मुर्गीपालन, बकरी पालन, गैरकृषि
बाजार पर पहुँच
सामूहिक व्यापार निर्माता कंपनियाँ, बाजार भागीदारी, कौशल विकास और नियुक्ति
स्वयं सहायता समूह का संघ एवं परिसंघ
लाभार्थी तक पहुँच
ग्राम संगठन द्वारा पी.डी.एस. का संचालन, मनरेगा के तहत जॉब कार्ड, सभी प्रकार के पेंशन
खाद्य सुरक्षा
पी.डी.एस. हेतु लाइसेंस, खाद्य सामग्री उपलब्ध कराना, सामूहिक अनाज की खरीददारी
स्वास्थ्य सुरक्षा
स्वास्थ्य सुरक्षा बचत, स्वास्थ्य सुरक्षा निधि, महिला आउटरीच कार्यकर्त्ता, सी.एच.एन.सी.सी.

ग्राम संगठन (वी.ओ.)

15 से 25 स्वयं सहायता समूहों को मिलाकर एक ग्राम संगठन का निर्माण किया जाता है। यह विभिन्न समूहों के बीच कड़ी का काम करता है तथा उन समूहों के कार्यकलाप पर निगरानी, समस्याओं का समाधान, पूंजी संग्रह और विकास योजनाओं को समूहों के सदस्यों तक पहुँचाने में सहयोग और समन्वय का काम करता है।

संकुल स्तरीय संघ (सी.एल.एफ.)

25 से 40 ग्राम संगठनों को मिलाकर एक संकुल स्तरीय संघ (सी.एल.एफ.) का गठन किया जाता है। यह ग्राम संगठनों को नेतृत्व प्रदान करता है एवं उनके बीच आपसी समन्वय स्थापित करता है। सीएलएफ सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं से संपर्क स्थापित कर ग्रामीण विकास से संबंधित कार्यकमों से ग्राम संगठन के सदस्यों को जोड़ता और समन्वय स्थापित करता है।

सी.एल.एफ. का एक प्रमुख काम ग्राम संगठन स्तर पर माइक्रो–प्लानिंग कर उसे सक्षम आजीविका गतिविधियों से जोड़ने में सहायता प्रदान करना है। सी.एल.एफ. ग्राम संगठनों के लिए वार्षिक कार्य योजना तैयार करता है, जिससे परियोजना के मूल कार्यक्रमों को समुदाय के माध्यम से लागू किया जा सके। साथ ही यह ग्राम संगठनों में वित्तीय लेनदेन का अंकेक्षण करवाता है ताकि इसके काम काज में पारदर्शिता बरती जा सके। इस तरह सामुदायिक संगठन के स्तर पर सी.एल.एफ. के रूप में एक मजबूत निकाय की परिकल्पना की गई है।

अध्याय - 03

मधेपुरा में जीविका की उपलब्धि

बिहार में 2 अक्टूबर 2007 को जीविका की शुरूआत होने के उपरान्त अक्टूबर 2009 से इसकी गतिविधियों का क्रमगत विस्तार अबतक मधेपुरा के सभी प्रखण्डों में हो चुका है। दिसम्बर 2017 तक इस जिले में जीविका की उपलब्धि निम्नवत है:–

बिहार में ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले निर्धनों को स्वरोजगार के माध्यम से सशक्त करने के उद्देश्य से बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन परियोजना की स्थापना की गयी। इसका संचालन बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति द्वारा किया जाता है। जीविका की शुरूआत 2 अक्टूबर 2007 को हुई। परियोजना के प्रथम चरण में राज्य के छह जिलों मधुबनी, मुजफ्फरपुर, खगड़िया, नालंदा, गया एवं पूर्णिया के कुल 18 प्रखंडों में कार्य प्रारंभ किया गया। 02 अक्टूबर 2009 को इसका विस्तार उपर्युक्त जिलों के 24 अन्य प्रखंडों के अतिरिक्त मधेपुरा एवं सुपौल जिलों के एक–एक प्रखंड में किया गया। जिसमें मधेपुरा का कुमारखंड है। 01 जुलाई 2010 से मधेपुरा के उपर्युक्त एक प्रखंड को कोसी फलड रिकवरी प्रोजेक्ट के तहत जीविका परियोजना में शामिल किया गया। इनके अलावा परियोजना में मधेपुरा जिले के 05 अन्य प्रखंडों में भी 23 दिसंबर 2010 से कार्य प्रारंभ किया गया। मधेपुरा जिले के छह प्रखंडों में कोसी फलड रिकवरी प्रोजक्ट के चौथे अवयव के अंतर्गत जीविकोपार्जन की पुर्नप्राप्ति तथा संवर्द्धन हेतु परियोजना में अपनायी गयी सामुदायिक संस्था के माडल के अनुसार कार्य किया गया। जनवरी 2014 को तीसरे चरण में मधेपुरा के शेष सभी 7 प्रखंडों में कार्य प्रारंभ हुआ। अभी बी.टी.डी.पी. के तहत मधेपुरा के दो प्रखंडों पुरैनी एवं सिंघेश्वर में कार्य किया जा रहा है।

मधेपुरा में जीविका की उपलब्धियाँ (दिसंबर 2017)

क्र.	विवरणी	कुल अद्यतन उपलब्धि
1	प्रखंडों की संख्या	13
2	पंचायतों की संख्या	170
3	स्वयं सहायता समूह की संख्या	20204
4	स्वयं सहायता समूह के सदस्यों की संख्या	245092
5	ग्राम संगठन की संख्या	1411
6	संकुल स्तरीय संघ की संख्या	27
7	स्वयं सहायता समूहों की संख्या जिनका बैंक खाता उपलब्ध है	16268
8	स्वयं सहायता समूहों की संख्या जिन्हें प्रारंभिक पूंजी प्राप्त है।	11315
9	स्वय सहायता समूहों की संख्या जिन्हें चक्रीय/परिक्रमी निधि है।	13877
10	स्वयं सहायता समूहों की संख्या जिन्हैं बैंक से ऋण प्राप्त है	12451
11	बैंक से प्राप्त ऋण की राशि (करोड़ में)	32.89
12	ग्राम संगठन की संख्या जिनका बैंक खाता उपलब्ध है।	1193
13	हस्ताक्षर साक्षर समूह सदस्यों की संख्या	90275
14	ग्राम संगठनों की संख्या जिनको खाद्य सुरक्षा निधि प्राप्त है	636
15	ग्राम संगठन की संख्या जिनको स्वास्थ्य सुरक्षा निधि प्राप्त है।	966
16	कृषि प्रक्षेत्र में सम्मिलित कुल परिवारों की संख्या	55549
17	मुर्गी पालन गतिविधि से जुड़े परिवारों की संख्या	7216
18	कुल मदर यूनिटों की संख्या	26
19	नॉनफॉर्म गतिविधि से जुड़े परिवारों की संख्या	2584
20	पी.जी. की कुल संख्या	9
21	जूट गतिविधि से जुड़े परिवारों की संख्या	1931
22	मलबरी गतिविधि से जुड़े परिवारों की संख्या	666
23	कुल माईक्रोइंटरप्राईजेज	302
24	रोजगार प्राप्त युवाओं की संख्या	584
25	शौचालययुक्त परिवारों की संख्या	17426
26	सामुदायिक कैडर	
	o जीविका मित्र की संख्या	1702
	o लेखापाल की संख्या	235
	o वी.आर.पी. की संख्या	462
	o सी.आर.पी. की संख्या	505
	o जे.आर.पी. की संख्या	14
	o बैंक मित्र की संख्या	69
	o पी.आर.पी. की संख्या	59
	o एस.ई.डब्ल्यू. की संख्या	14

अध्याय - 04

संस्था निर्माण एवं क्षमतावर्द्धन से खुला विकास का द्वार

किसी देश या राज्य की सबसे बड़ी पूंजी उसका मानव संसाधन होता है. जब हम जन समूह से किसी विशेष उद्देश्य की प्राप्ति की आशा करते हैं तब हमें संस्था निर्माण की आवश्कयता होती है। इस विशेष उद्देश्य की प्राप्ति में संस्थाओं का उतना ही महत्त्वपूर्ण स्थान है जितना की संस्था में शामिल लोगों का क्षमतावान होना। जीविका परियोजना में सामुदायिक संस्थानों का निर्माण सबसे प्रमुख गतिविधि है। इसके तहत तीन प्रकार के सामुदायिक संस्थानों का गठन किया जाता है। "समूह में शक्ति है" को सूत्र वाक्य मानते हुए परियोजना अपने बृहत्तर उद्देश्य की प्राप्ति हेतु सबसे पहले समान आर्थिक एवं सामाजिक स्तर के 10–15 महिलाओं का एक स्वयं सहायता समूह बनाती है। फिर 15 से 25 समूहों को मिला कर एक ग्राम संगठन बनाया जाता है। इसके बाद 25 से 40 ग्राम संगठनों को मिलाकर सर्वोच्च स्तर की इकाई संकुल स्तरीय संघ का गठन किया जाता है। इन तीन संगठनों के अतिरिक्त एक अन्य संगठन–जिसे उत्पादक समूह कहा जाता है–का गठन आर्थिक गतिविधियों को संचालित करने के उद्देश्य से किया जाता है। किसी भी वैधानिक संस्था का अपने अस्तित्व में आने के साथ ही अनेक आवश्यक नियमों के आबद्ध होना अपेक्षित हैं। यह बात उपर्युक्त सभी संगठनों पर भी लागू है। समूह बनने के साथ ही उसके कुशल संचालन के लिए उसमें पंचसूत्र के नियमों का पालन अनिवार्य हो जाता है। इसके तहत नियमित बैठक, नियमित बचत, नियमित लेन–देन, नियमित ऋण वापसी एवं लेखा–जोखा जैसे नियम समूह के लिए अनिवार्य व्यवहार नियम होते हैं। प्रत्येक समूह लोकतांत्रिक विधि से समूह के सफल संचालन के लिए तीन पदधारकों, अध्यक्ष, सचिव एवं कोषाध्यक्ष का चुनाव करते हैं जो, समूह से सम्बंधित भिन्न–भिन्न जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हैं। आम सहमति बनती है एवं सदस्यों की छोटी–मोटी आवश्कताओं की पूर्ति होती हैं। जैसे–जैसे समूह पुराना होता है उसके सदस्यों की जरूरतें भी बड़ी होती जाती है। इन बड़ी जरूरतों को पूरा करने के लिए एक बड़े मंच की आवश्कता महसूस होती है. एक ऐसा मंच जो सदस्यों की बढ़ती आवश्कताओं की पूर्ति कर सके।

इसी उद्देश्य से 15 से 25 समूहों को मिलाकर एक ग्राम संगठन बनाया जाता है। अध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष के अतिरिक्त ग्राम संगठन में उपाध्यक्ष एवं उपसचिव भी होते हैं। समूह से जुड़े विभिन्न मुद्दों एवं आवश्यकताओं के आकलन एवं मूल्यांकन के लिए ग्राम संगठन में विभिन्न प्रकार की उपसमितियां बनी होती हैं जो ग्राम संगठन की बैठक में जरूरत के मुताबिक अपना रिपोर्ट प्रस्तुत करती हैं। एक नवगठित ग्राम संगठन की माह में एक बार बैठक होती है। आगे चलकर यह पाक्षिक

बैठक में तब्दील हो जाता है। इस प्रकार किसी एक गाँव में सामान्यतया एक से दो ग्राम संगठन हो सकता है। ग्राम संगठन के स्तर पर परियोजना द्वारा कई महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है। स्वास्थ्य सुरक्षा एवं खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम उनमें से महत्त्वपूर्ण हैं। ग्राम संगठन की बैठकों में समूह से प्राप्त मांगों, आवश्कताओं एवं भविष्य में होने वाली गतिविधियों पर गहराई से चर्चाकर सर्वसम्मति से निर्णय लिया जाता है। कहा जा सकता है कि ग्रामीण स्तर की समस्याओं एवं जरुरतों की पूर्ति हेतु ग्राम संगठन एक मजबूत मंच के रूप में कार्य करता है। ग्राम संगठन की सभी सदस्यों में निर्णय लेने की क्षमता का विकास हो पाए, इस उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष ग्राम संगठन के पदाधिकारियों को चुनाव के माध्यम से बदला जाता है।

जब उद्देश्य बहुत बड़ा हो, जिसका प्रभाव प्रखंड स्तर तक पड़े एवं जिससे एक बड़ा समुदाय प्रभावित होता हो, तब बात संकुल स्तरीय संघ की आती है। एक संकुल स्तरीय संघ में 25 से 40 ग्राम संगठन शामिल होते हैं। प्रत्येक ग्राम संगठन के अध्यक्ष एवं सचिव इसकी कार्यकारिणी के सदस्य होते हैं। दिन प्रतिदिन की कार्यवाही को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए इसके पदाधिकारियों का चयन भी लोकतान्त्रिक प्रक्रिया द्वारा किया जाता है। संकुल स्तरीय संघ का कार्य एवं अधिकार क्षेत्र बहुत बड़ा होता है। यह अनुबंधित संस्था अपने सदस्यों के हित के लिए सभी सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं के बीच सेतु का काम करता है। सदस्यों की वित्तीय एवं बीमा संबंधी जरूरतों की पूर्ति के अलावे यह संस्थान ग्राम संगठन स्तर की सभी गतिविधियों का अनुश्रवण एवं मूल्यांकन करता है। अपने अंगीकृत ग्राम संगठनों में इच्छित गतिविधि के संपादन हेतु राशि की उपलब्धता को सुनिश्चित करना संकुल स्तरीय संघ की जिम्मेदारी है।

जीविका परियोजना का मूल उद्देश्य संस्था निर्माण कर उसका क्षमतावर्धन करना है ताकि ग्रामीण महिलाओं को अपने अधिकार के प्रति जागरूक किया जा सके। सदस्यों का क्षमतावर्द्धन करने के लिए परियोजना में एक समर्पित प्रशिक्षण प्रणाली आरम्भ से ही स्थापित है जो विभिन्न स्तरों पर सभी संस्थानों के सदस्यों के क्षमतावर्धन का कार्य करती है। समुदाय आधारित आजीविका के विभिन्न अवयवों को प्रभावी बनाने के उद्देश्य से न केवल समूह के सदस्यों का क्षमतावर्धन किया जाता है बल्कि विभिन्न स्तर के संस्थानों के कुशल प्रबंधन में शामिल सभी प्रकार के सामुदायिक साधन सेवियों को भी अनिवार्य रूप से क्षमतावान बनाया जाता है। इसी विशिष्ट गुण के कारण परियोजना की अपनी विशिष्ट पहचान है. समूह गठन के साथ ही सदस्यों के क्षमतावर्धन हेतु मोडूलर प्रशिक्षण दिया जाता है। जिसका मुख्य उद्देश्य समूह क्यों, गरीबी के कारण, गरीबी का दुष्चक्र जैसी महत्त्वपूर्ण बातों के प्रति सदस्यों को संवेदनशील बनाना होता है। ग्राम संगठन के गठन का उद्देश्य उसके कार्य एवं जिम्मेदारी जैसे दूसरे महत्वपूर्ण बातों को ग्राम संगठन के प्रशिक्षण में बतलाया जाता है। परियोजना द्वारा समय समय पर जरूरत के हिसाब से विभिन्न माध्यमों के द्वारा नयी नयी गतिविधियों पर महिलाओं को प्रशिक्षित किया जाता है।

समूह गठन, समूह की आदर्श बैठक, लेखांकन की पुस्तिकाओं का संधारण, बैंकिंग लेन–देन, नवीनतम कृषि तकनीक, गैर कृषि गतिविधि, न्यूनतम वित्तीय साक्षरता, क्रय विक्रय, कौशल विकास जैसी तमाम गतिविधियों के लिए समूह के सदस्यों के साथ उसके साधन सेवियों को भी सघन रूप से प्रशिक्षित किया जाता है। सामुदायिक साधन सेवी (CRP) के रूप में परियोजना के पास एक बहुत बड़ी फौज है जो पुराने समूह की प्रशिक्षित सदस्य होती है। जिनका काम परियोजना के नए क्षेत्रों में समूह गठन से लेकर उसका प्रशिक्षण देना होता है। वहीँ संकुल स्तरीय संघ के स्तर पर समुदाय के द्वारा स्वप्रबंधित प्रशिक्षण एवं शिक्षण केंद्र की भूमिका अति महत्त्वपूर्ण है जहाँ समुदाय सम्बंधित सभी प्रकार के प्रशिक्षणों की समुचित व्यवस्था होती है। इसका प्रबंधन स्वयं समुदाय द्वारा ही किया जाता है।

समूह की शक्ति से बदला समाज

- ज्योति जीविका स्वयं सहायता समूह आदर्श समूह के रूप में स्थापित है।
- समूह की दीदियों द्वारा पंच सूत्रा का पालन किया जा रहा है।
- समूह की सभी दीदियां विभिन्न प्रकार के रोजगार से जुड़ी है।
- समूह की सभी दीदी ने शौचालय निर्माण कर समूह को पहला ओ.डी.एफ. एस.एच. जी. का श्रेय दिलवाया।

ज्योति जीविका स्वयं सहायता समूह, ग्राम–यदुआपट्टी, पंचायत–ईसराईन खुर्द, वार्ड–03, प्रखंड– कुमारखंड, जिला–मधेपुरा की आदर्श समूह के रूप में है। इस समूह ने जोविका के सभी मानकों को पूरा कर दूसरे समूहों के लिए भी आदर्श स्थापित करने का काम किया है। ज्योति जीविका स्वयं सहायता समूह की सभी सदस्य पंच सूत्रा का पालन कर रही हैं। समूह की बैठक नियमित रूप से हो रही है। समूह की सभी सदस्य नियमित रूप से बचत एवं लेन–देन कर रही हैं। समूह की सदस्य नियमित ऋण वापसी भी कर रही हैं। समूह के लेखांकन की प्रक्रिया भी सराहनीय है। बैंक के साथ जुड़ाव के बाद बैंक द्वारा 50 हजार एवं 1.50 लाख की राशि ऋण के रूप में प्रदान की गयी।

इस समूह की विशेषता यह है कि समूह की सभी दीदी किसी न किसी स्वरोजगार से जुड़ी हैं। कोई दीदी जहां अपना सिलाई–कटाई का केन्द्र चला रही हैं तो कोई दीदी किराने की दुकान का संचालन कर अपने परिवार की आय बढ़ा रही हैं। कई दीदियों के पति मोटर गैरेज, साइकिल आदि की दुकान भी चला रहे हैं। दुकानों के संचालन में जीविका दीदियों द्वारा समूह से आर्थिक मदद ली गयी। समूहों की मदद के बाद सभी दीदी आर्थिक स्थिति को मजबूत कर बेहतर तरीके से परिवारिक जीवन का संचालन कर रही हैं। कई दीदियों द्वारा अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा दिलवाने का कार्य भी किया जा रहा है। इस समूह की खासियत इससे भी समझी जा सकती है कि यह जिले का पहला समूह है जो पूरी तरह खुले में शौच से मुक्त है। इस समूह की सभी दीदी ने अपने–अपने घरों में शौचालय का निर्माण कर खुले में शौच की सामाजिक कुरीति के खिलाफ जंग लड़कर उस पर फतह हासिल की है। ज्योति जीविका स्वयं सहायता समूह की दीदियों के सशक्तीकरण की कहानी यहीं खत्म नहीं होती बल्कि इन्होंने खुले में शौच से मुक्त मधेपुरा बनाने में अपना योगदान देते हुए 17 समूहों की 213 दीदियों के घरों में शौचालय बनाने के लिए प्रेरित किया। ज्योति जीविका स्वयं सहायता समूह के इस कार्य की भी सभी मुक्त कंठ से प्रशंसा कर रहे हैं। समूह की दीदियों ने शराबबंदी सहित अन्य सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ भी जंग लड़कर उसमें सफलता प्राप्त की है।

आजीविका संवर्द्धन के क्षेत्र में अव्वल है, प्रभात ग्राम संगठन

प्रभात महिला जीविका ग्राम संगठन, मधेपुरा का गठन 28 सितम्बर 2013 को कुमारखंड प्रखंड के परमानंदपुर में जब किया गया तो ग्राम संगठन से जुड़ी दीदियों के आंखों में सुनहरे भविष्य की ललक साफ तौर पर महसूस की जा सकती थी। ग्राम संगठन से जुड़े समूह सदस्य अपने जीवन एवं समाज की बेहतरी के लिए कृतसंकल्प थे। गठन के समय से ही ग्राम संगठन के सदस्यों ने विभिन्न तरीकों से अपने सदस्यों के लिए आजीविका संवर्द्धन का कार्य करनाा आरंभ कर दिया। विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षणोपरांत ग्राम संगठन की दीदियां काफी जागरूक एवं सशक्त हो गयीं। कल तक समूह स्तर पर जिन समस्याओं के समाधान में उन्हें कठिनाई होती थी, उन समस्याओं का मुकाबला अब ग्राम संगठन स्तर पर मजबूती के साथ किया जाने लगा। ग्राम संगठन की विभिन्न उपसमितियां अपने–अपने दायित्वों का निर्वाह कुशलतापूर्वक कर ग्राम संगठन की बेहतरी में अपना योगदान प्रदान कर रही हैं। इस ग्राम संगठन में कुल 21 स्वयं सहायता समूहों का जुड़ाव है इसमें 252 दीदियां जुड़ी हैं, जिसमें 154 दीदियां अनुसूचित जाति/जनजाति परिवारों से हैं। इन दीदियों में से कृषि संबंधित गतिविधियों से 114 दीदियां, दुग्ध उत्पादन गतिविधियों से 23 दीदियां, मुर्गी पालन गतिविधियों से 37 दीदियाँ, मलबरी गतिविधि से 6 दीदियां, बकरी पालन से 17 दीदियां, स्वरोजगार से 43 दीदियाँ जुड़ी हैं जो अपने आय को बढ़ाकर अपने परिवार की तरक्की के लिए कार्य कर रही हैं।

- प्रभात महिला ग्राम संगठन एक आदर्श ग्राम संगठन है।
- ग्राम संगठन की सभी दीदियां आजीविका की विभिन्न गतिविधियों से जुड़ी हुई हैं।
- सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ ग्राम संगठन ने काफी बेहतर कार्य किया है।
- ग्राम संगठन की सभी उपसमिति बेहतर तरीके से कार्य कर रही है। जीविका स्वयं सहायता समूह आदर्श समूह के रूप में स्थापित है।
- समूह की दीदियों द्वारा पंच सूत्रा का पालन किया जा रहा है।

ग्राम संगठन स्तर पर कार्यरत समितियों में सामाजिक कार्य उपसमिति, खरीददारी उपसमिति, सामाजिक अंकेक्षण उपसमिति, ऋणवापसी उपसमिति, बैंक जुड़ाव उपसमिति, जीविकोपार्जन उपसमिति, खाद्य सुरक्षा उपसमिति, स्वास्थ्य पोषण एवं स्वच्छता उपसमिति आदि सक्रियता से कार्य कर ग्राम संगठन से जुड़े समूह सदस्यों के जीवन को बेहतर बनाने का कार्य कर रही हैं। समितियों की सक्रियता का नतीजा ही है कि जीविका दीदियों के जीविकोपार्जन गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए आजाद उत्पाद समूह का गठन किया गया है। इस ग्राम संगठन द्वारा सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ भी कई स्तर पर कार्य किया जा रहा है। शराबबंदी हो या दहेज मुक्त एवं बाल विवाह मुक्त समाज बनाने की बात हो, सभी में इस ग्राम संगठन की दीदियां बढ़–चढ़ कर भाग ले रही हैं।

नाम : शीलम कुमारी
पद : सामुदायिक उत्प्रेरक
पति : सुनील कुमार
पता : लालपुर, सरोपट्टी, वार्ड–7, सिंहेश्वर
समूह : जमुना जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : स्वर्ग जीविका ग्राम संगठन

- पति के अकेले काम करने से छह लोगों का परिवार बड़ी मुश्किल से चल पा रहा था।
- जीविका से जुड़ी और बाद में सीएम के रूप में काम करना आरंभ किया।
- सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ विभिन्न स्तरों पर कार्य किया।
- जीविका से जुड़ने के बाद शीलम ने खुद का व्यक्तित्व निखारा, वहीं सैकड़ो महिलाओं का जीवन इनके प्रयास से बदल गया।

समाज के लिए मिसाल बनी शीलम

हौसले अगर बुलंद हो तो मंजिल को प्राप्त करना मुश्किल नहीं होता। इसे साबित किया सिंघेश्वर प्रखंडान्तर्गत लालपुर सरोपट्टी की शीलम कुमारी ने। मैट्रिक पास शीलम पहले एक गृहिणी थी और उनके पति सुनील कुमार गैराज मिस्त्री। शीलम हमेशा महसूस करती थी कि अकेले पति की कमाई से छह लोगों के बड़े परिवार को चलाना कठिन है। वह हमेशा पति की मदद करने और परिवार की बेहतरी के लिए सोचती रहती थी, लेकिन कहीं से कोई रास्ता उन्हें नजर नहीं आता था। दिन–प्रतिदिन कठिनाइयां बढ़ती जा रही थीं और परिवार के समक्ष आर्थिक संकट निरंतर गहरा होता जा रहा था। इन्हीं कठिनाइयों के बीच वर्ष 2014 में वह अपनी बहन की ससुराल गयी हुई थी, तो उसे वहां जीविका की गतिविधियों के बारे में पता चला था। जीविका के काम करने के तरीके और उससे होने वाले फायदे को जानकर शीलम काफी खुश हुई और जब अपने गांव लौटी तो वहां भी उसने जीविका के बारे में जानने और उससे जुड़ने का प्रयास किया लेकिन ऐसा नहीं हो पाया क्योंकि उस समय तक उसकी पंचायत में जीविका की शुरूआत नहीं हुई थी।

वर्ष 2015 के आरंभ में जब उनकी पंचायत में जीविका की शुरूआत हुई तो शीलम कुमारी जहाँ खुद तो जीविका से जुड़ी हीं, अन्य महिलाओं को भी जीविका से जुड़ने को प्रेरित किया और जीविका से जुड़ने के बाद होने वाले फायदों के बारे में जानकारी दी। जमुना जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़कर शीलम ने नियमित बचत, बैठक, लेनदेन आदि करना आरंभ कर दिया। इसी बीच समूहों के संचालन के लिए सी.एम. की आवश्यकता महसूस हुई। शीलम की लगनशीलता, ईमानदारी और उनकी जानकारी को ध्यान में रखकर समूह ने उन्हें सी.एम. के रूप में चयनित कर लिया। सी.एम. के रूप में चयनित होने के बाद तो शीलम ने दीदियों की बेहतरी के लिए काम करना प्रारंभ कर दिया। सामाजिक कुरीतियों के विरोध के साथ सबके घरों में शौचालय निर्माण, साफ–सफाई, बच्चों को स्कूल भेजना, सबको साक्षर करना जैसी गतिविधियों शीलम ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। उसके प्रयास से आज दर्जनों दीदियों के जीवन में परिवर्तन आया है। शीलम के प्रयास से ही महिलाएँ आज आत्मविश्वास से लबरेज हैं।

कुंती देवीः महिला सशक्तीकरण की मिसाल

महिला सशक्तीकरण की एक बड़ी मिसाल कुमारखंड प्रखंड के सुखासन, रानीपट्टी की कुंती देवी हैं। कुंती देवी आज खुद सशक्त हो गरीब और लाचार महिलाओं को सशक्त करने की मुहिम में शामिल हैं। कुंती देवी दुर्गा जीविका स्वयं सहायता समूह की कोषाध्यक्ष, विक्रम ग्राम संगठन की सचिव एवं सूरज संकुल स्तरीय संघ की अध्यक्ष हैं। जीविका से जुड़ने के पूर्व कुंती देवी एक आम महिला थी, जिसे अपने परिवार के जीवनयापन के लिए काफी मशकक्त करनी पड़ती थी। पति अनिल मंडल काम की तलाश में बाहर प्रदेश कमाने चले गये और वह 2 लड़के और 1 लड़की के साथ खुद की जरूरतों के लिए मजदूरी करने को विवश थी। इसी क्रम में कुंती देवी को 2010 में जीविका से जुड़ने का मौका मिला और फिर उसने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। कल तक किसी से सीधे मुंह बात करने में संकोच करने वाली कुंती सामाजिक मुद्दों पर मुखर होकर सामने आ गयी। समूह, ग्राम संगठन एवं सीएलएफ की गतिविधियों में जुड़ने के साथ उन्होंनें जीविका में सीआरपी के रूप में कार्य करना आरंभ किया। सीआरपी के रूप में कार्य कर कुंती देवी अपने प्रखंड के अलावे आस–पास के कई प्रखंडों में जाकर 500 से ज्यादा महिलाओं को जीविका से जोड़ा। कुंती बताती हैं कि सीआरपी के रूप में वे अभी तक 40 समूह एवं 13 ग्राम संगठनों का गठन कर चुकी हैं। कुंती देवी की सक्रियता को देखते हुए जीविका ने सीएलएफ में उनकी समझ को बढ़ाने के लिए उन्हें आंध्र प्रदेश भेजा। आंध्र प्रदेश के अलावे उन्हें कई बार पटना में मुख्यमंत्री, बिहार के समक्ष भी अपने अनुभवों को रखने का मौका मिला। कुंती देवी बताती हैं कि जीविका से जुड़ने के बाद उन्हें जीविका से आर्थिक मदद मिली और उन्होंने खेती प्रारंभ की, जिसके बाद उन्होंने अपने परिवार को शैक्षणिक गतिविधियों से जोड़ा। आज उनके सभी बच्चे स्कूल भी जाते हैं। साथ ही उन्होंने अपने मकान की मरम्मती भी करायी और उसे रहने लायक बनाया। यही नहीं कुंती देवी बिक्रम ग्राम संगठन जिसकी वे सचिव हैं, में 60 से ज्यादा किसानों को कृषि गतिविधियों से जोड़कर उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बना रही हैं।

नाम	:	कुन्ती देवी
पद	:	कम्युनिटि रिसोर्स पर्सन (सीआरपी)
पति	:	श्री अनिल मंडल
पता	:	सुखासन,रानीपट्टी, कुमारखंड
समूह	:	दुर्गा जीविका स्वयं सहायता समूह

- कुंती देवी महिला सशक्तीकरण की अलख जगा रही हैं।
- कल तक कुंती देवी एक सामान्य महिला थीं, जिन्हें किसी और से बात करने में भी संकोच होता था।
- जीविका से जुड़ने के बाद उन्होंने सीआरपी के रूप में काम किया और 40 से ज्यादा समूह और 13 ग्राम संगठनों का गठन किया।
- कुंती देवी की महिलाओं के मुद्दे पर सक्रियता को देखते हुए जिला प्रशासन, मधेपुरा द्वारा सम्मानित भी किया गया।
- कुंती देवी आर्थिक रूप से सशक्त हैं, और उनके बच्चे भी शिक्षण कार्य से जुड़े हुए हैं।

अध्याय - 05

सूक्ष्म वित्त पोषण: सामुदायिक संगठनों को बनाया सबल

''जीविका'' सामुदायिक संगठनों के माध्यम से गरीब परिवारों के जीविकोपार्जन संबंधी संसाधनों को बढ़ाने के उद्देश्य से काम करती है। अतः समान स्तर की महिलाओं का समूह बनाकर एवं उन्हें चरणबद्ध तरीके से प्रशिक्षित एवं सशक्त किया जाता है ताकि वे अपने वित्त संबंधी निर्णय खुद ले सकें। इसके अलावा जीविका परियोजना सूक्ष्म वित्त से संबंधित विभिन्न गतिविधियों को सामुदायिक संगठनों यथा स्वयं सहायता समूहों एवं ग्राम संगठनों का अभिन्न अंग बनाने के लिए भी प्रयासरत है। इसी क्रम में जीविका के स्वयं सहायता समूहों के बीच बचत एवं पैसों की आपसी लेन–देन को प्रोत्साहित करने एवं पैसों की लेन–देन की लेखांकन पद्धति हेतु प्रशिक्षित किया जाता है। इस प्रकार ग्रामीण महिलाओं को वित्तीय एवं बैंकिंग गतिविधियों से जोड़ने के उद्देश्य की भी पूर्ति हो रही है। जीविका के इस प्रयास का परिणाम यह है कि बड़े पैमाने पर ग्रामीण महिलाओं में वित्तीय जागरूकता बढ़ी है।

चरणबद्ध तरीके से होता है यह काम

समूह का गठन एवं बचत : जीविका द्वारा सबसे पहले समान स्तर की 10–12 गरीब महिलाओं को मिलाकर एक समूह का गठन किया जाता है। समूह गठित होते ही समूह से जुड़ीं सभी महिलाएँ अपनी सीमित आय में से हर सप्ताह एक निश्चित राशि बचत करती हैं। इस तरह समूह के पास हर सप्ताह सामूहिक बचत की कुछ राशि जमा हो जाती है। बचत की राशि निश्चित एवं एक समान होती है और यह नियमित रूप से जमा होती है। इससे महिलाओं में समान स्वामित्व की भावना बनी रहती है।

आपसी लेन–देन एवं ऋण वापसी : सामूहिक बचत से एकत्रित धनराशि से सदस्य महिलाएँ अपनी छोटी–छोटी जरूरतें पूरी करती हैं और इसके बदले उन्हें 2 रुपये प्रति सैकड़ा की दर से ब्याज समूह में अदा करना पड़ता है। वे किश्तों में कर्ज का नियमित भुगतान करती हैं। इससे प्राप्त ब्याज से समूह की आमदनी होती है। दूसरी तरफ, महिलाओं को अपनी जरूरत के वक्त महाजन से अधिक व्याज पर कर्ज नहीं लेना पड़ता है। इससे स्वच्छ बैंकिंग की आदत विकसित होती है।

बैंक से जुड़ाव : समूह की अवधि तीन माह होने पर समूह का बैंक खाता खुलवाया जाता है। किन्तु इसके पहले यह देखा जाता है कि समूह में पंचसूत्र का पालन हो रहा है या नहीं। पंचसूत्र का पालन करने वाले समूहों का ही बैंक खाता खुलवाया जाता है।

सूक्ष्म नियोजन : बैंक खाता खुल जाने के बाद समूह के सदस्यों का सूक्ष्म नियोजन किया जाता है। सूक्ष्म नियोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें समुदाय अपनी समस्त जरूरतों का आकलन करता है और सदस्य, समूह एवं संगठन के स्तर पर उपलब्ध संसाधनों के आधार पर आने वाली समस्याओं के समाधान के लिए निर्णय लेता है। इसमें समूह के सदस्यों की आर्थिक एवं जीविकोपार्जन संबंधी जरूरतों की पहचान की जाती है। जीविका परियोजना के अंतर्गत माइक्रो प्लानिंग (एमपी) अर्थात सूक्ष्म नियोजन पर काफी जोर दिया जाता है ताकि सामुदायिक संगठन सदस्यों की जरूरतों का आकलन करें और भविष्य के लिए योजना बनाकर निर्णय लें।

आरंभिक पूंजीकरण निधि (आईसीएफ) : समूह का सूक्ष्म नियोजन होने के बाद प्रखंड परियोजना क्रियान्वयन इकाई में गठित ऋण समिति की बैठक होती है, जिसे एलसीएम कहते हैं। एलसीएम में माइक्रो प्लानिंग एवं आईसीएफ के लिए आवेदन पर विचार किया जाता है। इसके बाद जीविका परियोजना समूह को शुरुआत में आरंभिक पूंजीकरण निधि (आईसीएफ) के रूप में 30,000 से 60,000 रुपये और परिक्रमी निधि (रिवॉल्विंग फंड) के तौर पर 15,000 रुपये प्रदान करती है। परियोजना की तरफ से प्रत्येक समूह को 30,000 से 75,000 रुपये तक की राशि प्रदान की जाती है। इससे समूह को शुरुआती पूंजी मिल जाती है।

बैंक क्रेडिट लिंकेज : समूह के सदस्यों की जरूरतों की पूर्ति केवल बचत के पैसे से नहीं की जा सकती है। ऐसे में समूह के द्वारा बैंक से ऋण लेने की प्रक्रिया शुरू होती है। समूह को बैंक से ऋण की पहली किश्त मिलतह हैं। वहीं प्रत्येक माह ऋण खातों का सही संचालन होने की स्थिति में एक साल के उपरान्त बैंक समूहों को ऋण की दूसरी किश्त भी प्रदान करती है।

जीविकोपार्जन गतिविधियाँ : समूह की दीदियां अपनी बचत राशि, जीविका से प्राप्त आईसीएफ की राशि और बैंक से प्राप्त ऋण का उपयोग छोटे–मोटे व्यवसाय शुरू करने, कृषि कार्य, पशुपालन, मुर्गीपालन, ऑटो रिक्शा खरीदने आदि के लिए करती हैं, जिससे उनके घर की आमदनी बढ़ सके।

कर्ज की वापसी : समूह की दीदियां जीविकोपार्जन गतिविधियों से जो आय अर्जित करती हैं, उससे वे अपने घर की मूलभूत जरूरतों को पूरा करने के अलावा समूह या बैंक से लिए कर्ज की राशि की वापसी करती हैं। समूह की दीदियों पर कर्ज का भार ज्यादा न पड़े, इसके लिए छोटी–छोटी मासिक किश्तों में कर्ज की वापसी का प्रावधान है। इसमें बैंकों का एनपीए भी नहीं होता और जरूरत पड़ने पर उन्हें दोबारा कर्ज आसानी से मिल जाता है। समूह की दीदियों के द्वारा समय पर कर्ज भुगतान करने की आदत से बैंकों में जीविका के स्वयं सहायता समूहों की साख बढ़ी है।

मधेपुरा जिले में जीविका के स्वयं सहायता समूहों द्वारा बड़े पैमाने पर वित्तीय लेन–देन हुआ है। मधेपुरा में नवम्बर 2017 तक 20060 स्वयं सहायता समूहों का गठन किया जा चुका है। इनमें से 15929 समूहों का बैंक खाता खुल चुका है। अब तक जीविका की ओर से 11193 समूहों को आईसीएफ दिया जा चुका है। वहीं 12544 समूहों को बैंक से वित्त पोषण हो चुका है। मधेपुरा में 1375 ग्राम संगठनों का गठन किया जा चुका है, जिनमें से अधिकांश के पास अपने बैंक खाते हैं। इसके अलावा मधेपुरा में स्थापित हो चुके 27 संकुल स्तरीय संघों में से भी अधिकांश के बैंक खाते खुल चुके हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में इतने बड़े पैमाने पर वित्तीय लेनदेन जीविका के प्रयास की वजह से संभव हुआ है। बैंकों ने ग्रामीण क्षेत्र की इन महिलाओं का वित्त पोषण करने में रुचि दिखाई है।

मधेपुरा में जीविका समूहों के सूक्ष्म वित्त पोषण की अद्यतन की स्थिति

क्र. सं.	विवरणी	मौजूदा स्थिति
1	स्वयं सहायता समूहों की संख्या जिनका बैंक खाता उपलब्ध है	15929
2	स्वयं सहायता समूहों की संख्या जिन्हें प्रारंभिक पूंजी प्राप्त है	11193
3	आरंभिक पूंजीकरण निधि की राशि	80805000
4	स्वयं सहायता समूहों की संख्या जिन्हें बैंक से ऋण प्राप्त है	12544
5	बैंक से प्राप्त ऋण की राशि	328877633
6	ग्राम संगठन की संख्या जिनका बैंक खाता उपलब्ध है	1158
7	हस्ताक्षर साक्षर समूह सदस्यों की संख्या	88975
8	बैंक से दूसरी किश्त के रूप में ऋण प्राप्त करने वाले समूह	2566
9	बीमा योजना से लाभान्वित परिवारों की संख्या	20070

सूक्ष्म वित्त की दिशा में भावी योजना

वित्तीय गतिविधियों में ग्रामीण महिलाएँ ग्राम संगठन एवं संकुल स्तरीय संघ स्तर पर बैंकिंग प्रक्रियाओं में हिस्सा ले रही हैं। यहाँ बचत राशि जमा करने के अलावा समूह की दीदियों के बीच सूक्ष्म ऋण की राशि वितरित की जाती है। सूक्ष्म ऋण के ब्याज के पैसे से संगठनों को अच्छी आय हो रही है। इससे सामुदायिक संगठनों का कॉर्पस मनी पूंजी बढ़ रहा है। यह पूर्णतः महिलाओं का संगठन है और यहाँ सारे काम महिलाओं के द्वारा किए जाते हैं। ऋण वितरण से लेकर वित्तीय लेन–देन की निगरानी में गाँव की गरीब महिलाओं की सक्रीय भागीदारी होती है।

ग्राम संगठन एवं सीएलएफ में बढ़ रही वित्तीय गतिविधियों और महिलाओं द्वारा इसके सफल संचालन से भविष्य में ग्रामीण महिलाओं के द्वारा और ग्रामीण महिलाओं हेतु एक बैंकिंग क्रांति का सूत्रपात हो सकता है। साथ ही यह ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग जगत के लिए भी दूरगामी कदम साबित हो सकता है।

शहानाः बैंकिंग आदतों को दे रही बढ़ावा

शहाना खातुन मात्र इंटर पास है जो बैंक मित्र दीदी के नाम से लोकप्रिय हैं। वह महिलाओं को बैंक में खाता खोलने, राशि जमा करने व निकासी के कार्य में मदद करती हैं। कुमारखंड के रहटा में उत्तर बिहार ग्रामीण बैंक रहटा शाखा में वह कार्य कर रही है और आस–पास की महिलाओं को मदद कर रही है।

शहाना कार्यों के प्रति बहुत रूझान है। सरकार के संपूर्ण वित्तीय समावेशन के लक्ष्य को भी पूरा करने में वो पिछले 2011 से लगी हुई है। वे महिलाओं में बैंकिंग आदतों को भी बढ़ावा देती हैं। उनके द्वारा निरक्षर या कम पढ़ी–लिखी महिलाओं को वित्तीय शिक्षा देने का भी काम किया जाता है। महिलाओं के बैंकिंग से संबंधित परामर्श भी उनके द्वारा दिया जाता है।

शहाना खातुन जीविका से 2010 में ही समूह सदस्य के रूप में जुड़ गयी। बाद में फरवरी 2011 से उन्होंने सीएम के रूप में काम करना प्रारंभ कर दिया। शहाना खातुन की सक्रियता और उसके शैक्षणिक योग्यता को देखते हुए उन्हें अप्रैल 2011 बैंक मित्र के रूप में चयनित किया गया। शहाना बताती हैं कि जब उन्होंने बैंक मित्र के रूप में काम करना प्रारंभ किया तो काफी कठिनाई आई। पारिवारिक एवं सामाजिक स्तरों पर भी मुश्किलों का सामना किया लेकिन मैंने हिम्मत से काम लिया मुश्किलें आयीं परिस्थितियां अनुकूल होती चली गयी।

शहाना कहती हैं कि ''पूर्व में समूह की दीदियों में बैंकिंग कार्यों की समझ नहीं थी। दीदियां बैंक आना–जाना भी नहीं चाहती थी। खाता खुलवाने से लेकर जमा–निकासी में उन्हें काफी परेशानी होती थी। व्यक्तिगत खाता तो नहीं के बराबर था। मैंने धीरे–धीरे दीदियों को बैंकों के साथ जोड़ा। उनके मन में बैंक के प्रति जो डर था, उसे बाहर निकाला। फिर उन्होंने बैंकों में आना–जाना आरंभ की। आज 50 से ज्यादा दीदियों का व्यक्तिगत बैंक खाता उपलब्ध है। मेरे द्वारा दीदियों को जमा एवं निकासी में मदद प्रदान की जाती है। दीदियों ने व्यक्तिगत खातों का महत्व समझा। मैं उन्हें व्यक्तिगत खाता खोलने में भी मदद करती हूं।''

साथ ही अगर दीदियों का बैंक से कोई व्यक्तिगत कार्य भी होता है, तो उनकी मदद करती हूं। शहाना आगे कहती हैं कि इन कार्यों के अलावे दीदियों को बीमा के साथ भी जोड़ती हूं। आम आदमी बीमा योजना के बारे में जानकारी देकर उन्हें बीमित करवाने का भी कार्य करती हूं।

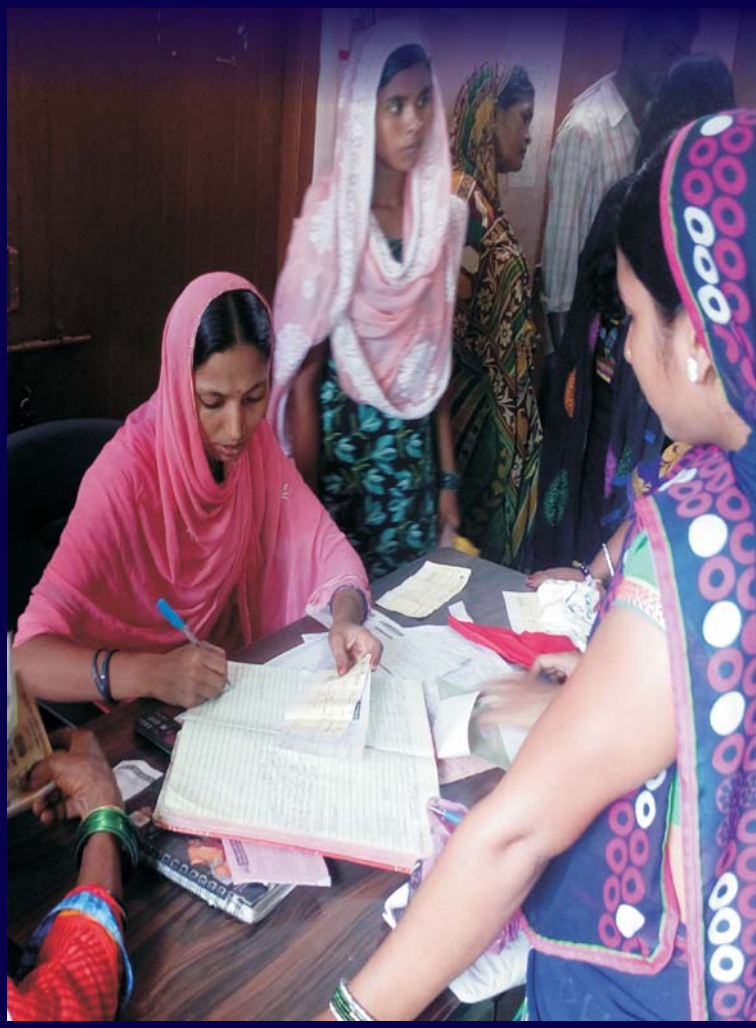

नाम	:	शहाना खातुन
पद	:	बैंक मित्र
पति	:	मो0 परवेज
पता	:	रहटा, वार्ड–04, कुमारखंड
बैंक	:	उत्तर बिहार ग्रामीण बैंक, रहटा, कुमारखंड
ग्राम संगठन	:	बिकम जीविका ग्राम संगठन,
संघ	:	सफल संकुल स्तरीय संघ

- शहाना 2011 से बैंक मित्र के रूप में कार्य कर रही है।
- शहाना बैंक मित्र दीदी के नाम से लोकप्रिय है।
- शहाना समूह की दीदियों को लेन–देन के अलावे व्यक्तिगत खाता खुलवाने, बीमा आदि कार्यों में मदद करती हैं।
- शहाना पहले सी.एम. के रूप में कार्य करती थीं।

नाम : प्रभा देवी
पता : राजगंज, पो0–बिहारीगंज, जिला–मधेपुरा
समूह : चांदनी जीविका स्वयं सहायता समूह
संगठन : नारी शक्ति जीविका महिला ग्राम संगठन
संघ : मुस्कान जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ।

- प्रभा देवी महिलाओं के उत्थान और बेहतरी के लिए निरंतर प्रयासरत् हैं।
- बैंकिंग कार्य में जीविका दीदियों को मदद प्रदान करती हैं।
- समूह की दीदियों को व्यक्तिगत खाता एवं बीमा के लिए भी जागरूक करती हैं।

प्रभा देवीः हौसले से मिली उड़ान

प्रभा देवी के लिए अपनी सफलता की मंजिल तय करना आसान नहीं रहा। जब उनका चयन बैंक मित्र के रूप में हुआ और वे बैंक जाने लगीं तो समाज के लोग उनपर फब्तियां कसते थे, उनका मजाक उड़ाते थे। कई लोगों ने तो उन्हें पागल तक कहना शुरू कर दिया था। लेकिन प्रभा देवी ने हिम्मत नहीं हारी और अपने लक्ष्य की और निरंतर बढ़ती रहीं। प्रभा देवी 2011 से ही जीविका से जुड़ी हुई हैं। वे चांदनी जीविका स्वयं सहायता समूह की सचिव भी हैं। जीविका से जुड़ने के पूर्व वे एक सामान्य गृहिणी थीं, जिनपर अपने परिवार, खासकर बच्चों को बेहतर भविष्य देने की जिम्मेदारी थी। इसी दौरान जीविका से जुड़ने के बाद उन्हें लगा कि उन्हें अपने आस–पास की गरीब, लाचार महिलाओं के लिए भी कुछ करना चाहिए। एम.ए. पास प्रभा देवी फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। उन्होंने हर स्तर पर समूह की महिलाओं की बेहतरी के लिए कार्य करना आरंभ कर दिया। इसी बीच उनका चयन बैंक मित्र के रूप में कर लिया गया। बैंक मित्र के रूप में भारतीय स्टेट बैंक, ए0एम0वाई0 शाखा बिहारीगंज में कार्य कर रही हैं।

प्रभा देवी बताती हैं कि पहले जब मैं बैंक जाती थी तो बैंक के स्टॉफ से भी डर लगता था, लेकिन धीरे–धीरे यह डर समाप्त हो गया। अब मैं अपने काम के अलावे बैंक के स्टॉफ के कार्यों में उनकी मदद करती हूँ। ''दीदियों के व्यक्तिगत खाता खुलवाने के साथ उन्हें बीमा से जोड़ने के लिए भी वे निरंतर प्रयास करती हैं। प्रभा देवी बताती हैं कि परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए बैंक मित्र के कार्य के अलावे उन्होंने सिलाई मशीन भी खरीदी है और इस सिलाई मशीन से वे सुबह–शाम कपड़ों की सिलाई भी करती हैं। कपड़ों की सिलाई के लिए उन्हें जीविका की दीदी काफी मदद करती हैं। सभी दीदियाँ उन्हीं के यहां कपड़ा सिलवाने आती हैं जिससे उन्हें काफी मदद मिलती है। प्रभा देवी कहती हैं कि भविष्य में वे चार–पांच सिलाई का मशीन खरीदना चाहती हैं और इसी व्यवसाय को विस्तार देना चाहती हैं।

प्रभा देवी कहती हैं कि जीविका से जुड़ने के पहले मेरी अपनी कोई पहचान नहीं थी। अब मेरी अपनी खुद की पहचान है। सभी प्रणाम दीदी कहते हैं। मेरा आत्मविश्वास भी काफी बढ़ा है। पहले किसी के सामने आने में, बात करने में डर जैसा लगता था लेकिन अब ऐसी बात नहीं है। अब किसी के सामने भी अपनी बात रख पाती हूं।

अध्याय - 06

तकनीकी ज्ञान से समृद्ध होती कृषि

बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है। बिहार की 70 प्रतिशत आबादी की आय का मुख्य जरिया कृषि है। हालाँकि ज्यादातर किसानों के पास खेती करने को अपने खेत नहीं है, वे या तो बटाई की खेती करते हैं या फिर पैसों के बदले खेत लेकर अपनी किस्मत आजमाते हैं। उन्नत कृषि तकनीक और सिचाईं की उपयुक्त व्यवस्था न होने के कारण बिहार में कृषि अच्छी नहीं होती है। अगर किसी तरह पैदावार अच्छी हो भी जाये तो उचित मूल्य पर बिक्री बड़ी समस्या बन जाती है। फसलों के भंडारण और विपणन की समस्या के कारण भी किसानों को उचित मूल्य नहीं मिल पाता है। बिहार में ज्यादातर किसान केवल अपने उपयोग के लिय ही खेती करते हैं। कम खेत होने की वजह से कृषि में आधुनिक तकनीक का उपयोग नहीं के बराबर ही किसान कर पाते थे। ऐसे में जीविका ने बिहार में किसानों को नई तकनीक और उन्नत खेती के जरिये समृद्ध बनाने के सफर की शुरुआत 2007 में की। किसानों के साथ बैठकों के माध्यम से उन्हें नई तकनीक और विधि की जानकारी दी गई। इसी कड़ी में 'प्रदान' की सहायता से श्रीविधि से धान की रोपाई की शुरुआत 2009 में हुई। बाद बिहार सरकार ने वर्ष 2010 को श्रीविधि वर्ष घोषित कर दिया। श्रीविधि तकनीक के जरिये किसानों ने कम मेहनत में अच्छी और दमदार फसल उपजाई और फिर इसी तकनीक से उपजी गेहूँ की फसल भी किसानों की किस्मत बदलने लगी। जीविका ने किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिये दो तरह से कार्य करना प्रारम्भ किया पहला है अच्छी पैदावार, और दूसरा है पैदावार का अच्छा मूल्य। अच्छी पैदावार के लिये किसानों को कई तरह के प्रशिक्षण और नई तकनीक की जानकारी दी गई. छोटे–छोटे हिस्सों में वैज्ञानिक तरीके से खेती करके उनके सुखद परिणामों से अवगत कराया गया। कम जमीन और कम खर्च में अच्छी पैदावार के लिये खेतों की तैयारी किस प्रकार करनी चाहिये इसको किसानों के सहयोग से तैयार करके बताया जाता है, ताकि किसान इसे अच्छी तरह समझ सकें। इसके लिये जीविका कृषि विज्ञान केंद्र, कृषि विश्वविद्यालयों और आत्मा जैसी संस्थाओं की मदद से किसानों को बेहतर पैदावार के गुण सिखाती है। पुरानी परम्परा को छोड़ एक झटके में आधुनिक खेती को अपनाना किसानों के लिये आसान नहीं था। पारम्परिक खेती से जो नतीजे किसानों को मिलते थे उनसे वे संतुष्ट तो नहीं थें फिर भी इसमे परिवर्तन को किसान आसानी से तैयार नही थे. इसके लिये महिलाओ के स्वयं सहायता समूहों की मदद ली गई, जिनके माध्यम से किसानों को खेती के बारे में विस्तृत जानकारी बैठकों के द्वारा दी गई।

जीविका ने किसानों को दो तरीके से अपनी आमदनी बढ़ाने का रास्ता

दिखाया। पहला है रासायनिक खादों का प्रयोग न करना तथा दूसरा है अन्न का उचित मूल्य। इसके लिये महिला किसान सशक्तीकरण परियोजना की शुरुआत वर्ष 2012 में की गई जिसमे, बिहार के 9 जिलों पूर्णिया, खगड़िया, नालंदा, गया, मधुबनी, मुजफ्फरपुर के साथ ही कोशी प्रमंडल के सहरसा, सुपौल और मधेपुरा के 15 प्रखंडो में इसकी शुरुआत की गई। महिला किसान सशक्तीकरण परियोजना का उद्देश्य किसानों को कम कीमत पर अच्छी उपज के साथ ही उनकी उपज का सही मूल्य मिलें इसकी भी कोशिश उत्पादक समूहों और उत्पादक कम्पनी के माध्यम से की जाती है। इसके तहत जैविक खेती के बारे में लोगो को इसके माध्यम से जानकारिया दी गई। जीवामृत, निमास्त्र के द्वारा जैविक खेती करने के तकनीक से किसानों को जोड़ा गया। इससे उन्हें दोहरा लाभ होने लगा। एक तरफ तो रासायनिक खाद पर हो रहे खर्च से किसानों को मुक्ति मिली तो दूसरी तरफ फसलों की पैदावार भी अच्छी होने लगी। इस परियोजना के तहत अबतक एक लाख उन्नीस हजार किसानों को जोड़ा जा चुका है। इन सब के साथ ही किसानों को अनुकूल मौसम में कैसे खेती करनी चाहिए इसके लिये भी जीविका ने वर्ष 2016 से बिहार के दो जिलों–गया और मधुबनी के दो–दो प्रखंडो में इसकी शुरुआत की है। इसके तहत अगले तीन साल छह महीनों में 200 गॉवों में कार्य किया जायेगा. इसका मकसद किसानों को खराब मौसम के बीच भी उन्नत किस्म के बीजों के माध्यम से अच्छी फसलों की उपज करना है। इस परियोजना के पायलट के तौर पर सूखा प्रभावित गया जिला और बाढ़ प्रभावित मधुबनी जिले का चयन किया गया है।

जीविका द्वारा किसानों को कई तरह से कृषि को उन्नत बनाने के लिय प्रशिक्षित किया जाता है,जिसमे कुछ प्रमुख है–

वैज्ञानिक तरीकों से सब्जियों का उत्पादन :

किसानों की आमदनी को बढ़ाने के लिय जीविका ने सब्जियों के उत्पादन में भी वैज्ञानिक तरीकों का प्रयोग करके किसानों को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाने की पहल की गई। किसानों को कृषि संस्थाआं के सहयोग से मिलकर प्रशिक्षित किया गया और उन्हें मौसम के अनुकूल सब्जियों के उत्पादन के गुर बताये गए। इसका काफी व्यापक असर पड़ा और तकनीक आधारित खेती किसानों के लिये वरदान साबित होने लगी है।

पोषण युक्त आहार का आधार किचेन गार्डनः

गरीब परिवारों के लिय छोटी सी जमीन से पूरे परिवार का पोषण युक्त भोजन का सपना पूरा कर रहा है किचेन गार्डन। केवल बीस फिट के आयताकार खेत में रोजाना प्रयोग होने वाली घरेलू सब्जियों का उत्पादन किसानों के लिय काफी लाभप्रद है। भिन्डी, करेला, तरोई, मिर्ची, टमाटर, साग जैसी कई सब्जियों का पूरे वर्ष न्यूनतम खर्च पर उत्पादन हो रहा है जिसकी वजह से गर्भवती महिलाओं और बच्चों को रोजाना हरी एवं पोषणयुक्त सब्जिया मिल रही है। कम मेहनत और कम लागत होने की वजह से किचेन गार्डन बहुत लोकप्रिय हो रहा है।

विपणन के लिय उत्पादक समूह है सक्रियः

किसानों के उत्पादों को बेहतर बाजार मूल्य के लिये जीविका में उत्पादक समूह का गठन किया गया है। उत्पादक समूह एक स्व–प्रबंधित व्यावसायिक संगठन है जिससे जुड़े सदस्य उत्पादकता, बाजार संबद्धता का कार्य उत्पादक समूह के माध्यम से करते है। इसका मुख्य उद्देश्य किसानों के उत्पाद का उचित मूल्य विपणन के माध्यम से दिलाना है। इसी तरह जीविका पुरे बिहार में आधुनिक कृषि के माध्यम से किसानों को अच्छी आमदनी और बेहतर उत्पादन के लिय जमीनी स्तर पर कार्य कर रही है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि आने वाले कुछ सालों में जीविका किसानों के साथ मिल कर बिहार में तकनीक आधारित कृषि को नया आयाम देते हुए इतिहास रचेगी।

श्रीविधि से खेती में महिलाएँ दो कदम आगे

श्रीविधि से खेती के क्षेत्र में भी जीविका स्वयं सहायता समूह की महिलाएं पुरूषों से दो कदम आगे हैं। मधेपुरा के कुमारखंड, मधेपुरा सदर, उदाकिशुनगंज आदि प्रखंडों में श्री विधि से धान की बेहतर खेती कर यहां की महिलाओं ने इसे साबित कर दिया है। मधेपुरा के विभिन्न प्रखंडों की लगभग 22 हजार महिलाएं लगभग 2248 एकड़ में श्रीविधि से धान की खेती करती आ रही हैं। जीविका द्वारा इन महिलाओं को कृषि के क्षेत्र में नयी तकनीक से जोड़ा गया है। इससे वे कम समय एवं कम लागत में अधिक अन्न उपजा रही हैं। मधेपुरा में जीविका द्वारा वर्ष 2012 से ही श्रीविधि से खेती की तकनीक पर कुमारखंड में कार्य किया जा रहा है।

लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह एवं ज्योति ग्राम संगठन, नयानगर, उदाकिशुनगंज से जुड़ी सुनीता देवी, पति–प्रदीप शर्मा कहती हैं कि जीविका से श्रीविधि तकनीक के बारे में जानकारी मिली। आज प्रति एकड़ 100 से 150 प्रतिशत अधिक उपज कर रही हूं। इस विधि से जहां मजदूरी कम लगता है, वहीं रासायनिक खाद के उपयोग भी के बराबर करते हैं जिससे आर्थिक लाभ काफी हो रहा है। वीर स्वयं सहायता समूह एवं सपना ग्राम संगठन, बराही, आनंदपुर से जुड़ी प्रभा देवी, पति नारायण यादव कहती हैं कि पिछले कई वर्षों से मैं श्रीविधि द्वारा खेती का कार्य कर रही हूं। काफी कम समय व मेहनत से उपज का आसान तरीका श्रीविधि से खेती करना है। प्राकृतिक आपदा, चाहे आंधी हो तूफान इस विधि से खेती करने से काफी कम नुकसान हो रहा है। प्रभा देवी कहती हैं कि श्रीविधि से खेती के पूर्व जीविका के भैया द्वारा हमें प्रशिक्षण दिया गया कि खेत की तैयारी कैसे करनी है, बिचरा की तैयारी कैसे करनी है। हमें कई फिल्में भी दिखाई गयी। कई बार तो खेत में भैया लोगों ने बिचरा लगाने की विधि भी खुद करके दिखायी।

इस विधि से महिलाओं को जोड़ना लाभदायक सिद्ध हो रहा है। इस कार्य से जिले भर में 22 हजार महिलाओं को जोड़ा जा चुका है जिसमें, कुमारखंड में 6000, सदर प्रखंड में 4600 तथा उदाकिशुनगंज प्रखंड में 4000 प्रमुख हैं। ये सारी महिलाएं कृषि के कार्य से जुड़कर आत्मनिर्भर बनी हैं।

''राधा स्वयं सहायता समूह, कोसी ग्राम संगठन, पकरिया तेरासी की सीता देवी, पति हरिलाल मंडल कहती हैं कि श्रीविधि से खेती करने से सामान्य विधि की अपेक्षा दो गुनी अधिक फसल होती है। वहीं, बीज की लागत भी कम होती है और खाद भी खेतों में करीब–करीब 25 फीसदी कम देना पड़ता है। इस विधि ने हमें काफी आर्थिक लाभ पहुंचाया है।''

- जीविका के प्रयास से 22 हजार से ज्यादा महिलाएं लगभग 2248 एकड़ में श्रीविधि से धान की खेती कर रही हैं।
- श्रीविधि की तकनीक से खेती कर महिला कृषक 100 से 150 प्रतिशत तक अधिक उपज कर रही हैं।
- प्राकृतिक आपदा की स्थिति में कम नुकसान का सामना करना पड़ता है।
- महिलाएँ कृषि के कार्य से जुड़कर आत्मनिर्भर बन रही हैं।

सब्जी की खेती से आयी समृद्धि

खेती में उन्नत तकनीक अपनाना समय की मांग है। जो किसान उन्नत तकनीक से खेती कर रहे हैं वे भरपूर मुनाफा कमा रहे हैं। उन्नत तकनीक से सब्जी की खेती करना फायदे का सौदा है। मधेपुरा का कुमारखंड प्रखंड सब्जी उत्पादन के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है। कुमारखंड के विभिन्न एक दर्जन गांवों की तरक्की का एकमात्र आधार अगर सब्जियों की खेती को, तो अतिशयोक्ति न होगी। यहां बड़े पैमाने पर महिलाएं सब्जी उगा कर समृद्ध हो रही हैं। परंपरागत खेती से इतर सब्जी की खेती से कुमारखंड की दो हजार से ज्यादा महिलाओं का जीवन खुशहाल है। अब बच्चों की पढ़ाई, इलाज एवं व्रत त्योहार के लिए सोचना नहीं पड़ता है। सब्जी उत्पादन से जहां महिलाओं ने अपने परिवार के जीवन स्तर को उंचा किया है, वहीं शिक्षा जैसे मुद्दों पर भी सक्रियता दिखा रही हैं।

सिकियाहर, भटनी के नंदू सरदार की पत्नी सुंदरी देवी ने कहा कि परंपरागत खेती के लिए जमीन भी ज्यादा चाहिए एवं पूंजी भी। दोनों में हमारे पास कुछ नहीं था। लेकिन गोभी, बैगन, कद्दू, करैला, भिंडी, नेनुआ आदि सब्जियों की खेती में तो बहुत ज्यादा जमीन चाहिए और ही पूंजी। सब्जियों की खेती में लागत कम और मुनाफा ज्यादा होता है। भोकराहा की रिंकी कुमारी पति–वासुदेव यादव ने कहा कि धान, गेहूं की फसल तैयार होने के बाद एक ही बार काटा जा सकता है, जबकि सब्जी प्रत्येक सप्ताह तोड़कर उसे मंडी में बेच दिया जाता हैं जिससे हर हफ्ते या हर महीने उन्हें कुछ ना कुछ आमदनी होती है। सिकियाहा, भरनी, के कमलेश्वरी मेहता की पत्नी राधा देवी कहती हैं कि अब बच्चों के स्कूल के फीस की चिंता नहीं रहती है। जिस सब्जी का सीजन रहता है, उसी की खेती की जाती है तथा इससे हमारी आमदनी बरकरार रहती है। उन्होंने बताया कि सब्जी की खेती में उन्हें जीविका की तरफ से कई प्रकार की मदद मिलती है। उन्होंने बताया कि यह काफी लाभप्रद है।

- कुमारखंड प्रखंड सब्जी की खेती के लिए अपनी पहचान बना चुका है।
- समूह की सदस्य परंपरागत खेती से इतर सब्जी की खेती से समृद्ध हो रही हैं।
- सब्जी की खेती कार्य से प्रखंड की 2.5 हजार समूह की सदस्य जुड़ी हुई हैं।
- जीविका द्वारा प्रशिक्षण के अलावे किचेन गार्डेन का किट भी दीदियों को उपलब्ध करवाया गया है।

सब्जी की खेती ने जीविका दीदियों के जीवन में काफी परिवर्तन लाया है। महिलाएं अपने–अपने घरों में भी छोटे–छोटे स्तर पर इस काम को कर लाभ कमा रही हैं और जीविका उन्हें इस काम के लिए प्रोत्साहित भी कर रही है। प्रखंड में करीब ढ़ाई हजार दीदियों को किचेन गार्डेन का किट उपलब्ध करवाया गया है, जिसमें सब्जी के 10 तरह के बीज उपलब्ध होते हैं। दीदियों को कई स्तरों पर प्रशिक्षण भी दिया जाता है, जिससे उन्हें इस कार्य में दक्षता हासिल हो और वे ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमा सकें।

ललिता देवीः मिश्रित सब्जी की खेती से स्वावलंबन

बिहार का शोक – कोसी नदी। इस नदी ने 2008 में सहरसा, मधेपुरा, सुपौल के लाखों लोगों की जिन्दगी में दुःखों का पहाड़ खड़ा कर दिया। जीविका की मदद से समूह सदस्यों को आत्मनिर्भर बनाये जाने के कई प्रयासों में एक प्रयास मिश्रित सब्जी की खेती भी प्रमुख है। मधेपुरा की सैकड़ों महिला किसान आज मिश्रित सब्जी की खेती कर काफी लाभ कमा रही हैं। मिश्रित सब्जी की खेती की गतिविधि मुख्य रूप से कुमारखंड में 2012 से आरंभ हुई। कुमारखंड प्रखंड के 50 ग्राम संगठनों से जुड़ी करीब 1000 से ज्यादा समूह सदस्य मिश्रित सब्जी की खेती अपने खेतों में कर रही हैं।

कुमारखंड प्रखंड के यदुआपट्टी के दामोदर यादव की पत्नी ललिता देवी अपने मिश्रित सब्जी की खेती के कारण अपनी एक अलग पहचान बना चुकी हैं। शंकर जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी ललिता बताती हैं कि– मिश्रित सब्जी की खेती एक ऐसी गतिविधि है, जिसमें हम एक साथ दो या दो से अधिक सब्जी का उत्पादन करते हैं। इस मिश्रित सब्जी के उत्पादन से जहां हमें आर्थिक रूप से फायदा होता है वहीं अनुपयोगी जमीन का उपयोग हो जाता है। यही नहीं मिश्रित सब्जी की खेती के दौरान उत्पादित किये जा रहे अलग–अलग किस्मों की सब्जी के पौधे एक दूसरे को पोषक तत्व भी उपलब्ध करवाते हैं। मिश्रित सब्जी की खेती छोटे भूखंडों में आसानी से की जाती है।

ललिता देवी बताती हैं कि पहले हमें मिश्रित सब्जी की खेती के बारे में जानकारी नहीं थी, जिसके कारण हमें इसके लाभ के बारे में भी नहीं पता था। जब हमने सितम्बर–अक्टूबर माह से इस कार्य को 3 कट्ठा जमीन में प्रारंभ किया तो हमें जनवरी से जून माह तक खीरा से लगभग 2300, करेला से 3200, परवल से 5000, हल्दी से 150 रूपया, नेनुआ से 2500 रूपया का लाभ हुआ। ललिता देवी कहती हैं कि पहले मैं साधारण तरीके से खेती किया करती थी। बाद में मुझे जीविका के भैया ने मिश्रित सब्जी की खेती के बारे में बताया, पहले तो हिचक हुई लेकिन मिश्रित सब्जी की खेती का कार्य शुरू किया, आज परिणाम सामने है। सच कहूं तो लाभ दोगुना हो गया। जीविका द्वारा इस क्षेत्र में इस तरह की खेती को बढ़ावा भी दिया जा रहा है। जिससे छोटे एवं कम जमीन वाली दीदियों को काफी आर्थिक लाभ प्राप्त हो रहा है।

नाम	:	ललिता देवी
पति	:	दामोदर यादव
पता	:	यदुआपट्टी, कुमारखंड
समूह	:	शंकर जीविका स्वयं सहायता समूह,
ग्राम संगठन	:	वीर जीविका ग्राम संगठन
संघ	:	किरण संकुल स्तरीय संघ

- मिश्रित सब्जी की खेती काफी लोकप्रिय हो रही है।
- कुमारखंड प्रखंड के 50 ग्राम संगठनों की 1000 से ज्यादा दीदियां मिश्रित सब्जी की खेती कार्य से जुड़ी हैं।
- इस तकनीक से छोटे एवं कम जमीन वाली दीदियों को काफी फायदा हो रहा है। इस तकनीक द्वारा अनुपयोगी जमीन का उपयोग हो जाता है।

अध्याय - 07

पशुपालन : आर्थिक स्वावलंबन

खेती के बाद पशुपालन ग्रामीण क्षेत्र की अर्थव्यवस्था का मूल आधार है। इसे जीविकोपार्जन का दूसरा प्रमुख साधन माना गया है। यही कारण है कि जीविका ने ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को पशुपालन के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे उनकी माली हालत तेजी से सुधर रही है। पशुपालन की वजह से न केवल उनके घर की आमदनी बढ़ी है वरन इससे उनके परिवार के स्वास्थ्य पर भी अनुकूल प्रभाव पड़ा है। जीविका के स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी गरीब महिलाओं ने अपनी छोटी–छोटी बचत के अलावा समूह से ऋण लेकर गाय, भैंस, बकरी आदि मवेशी खरीद कर पशुपालन के क्षेत्र में कदम रखा है और इससे उनके जीवन में उल्लेखनीय बदलाव आया है। महिलाएँ गाय और भैंस के दूध को बाजार में बेचकर रोजाना कुछ न कुछ आय अर्जित कर रही हैं जबकि इसका कुछ हिस्सा अपने खाने के लिए भी रखती हैं। इससे उनके यहाँ बच्चों में कुपोशण की समस्या दूर करने में काफी हद तक मदद मिली है और महिलाओं का भी स्वास्थ्य सुधरा है। खास बात यह है कि गरीबी में फंसी इन महिलाओं के लिए पहले मुश्किल घड़ी में दूसरों से मदद मांगने के अलावा दूसरा कोई चारा नहीं होता था, लेकिन अब ये पशुधन उनके लिए 'संकट मोचक' की भूमिका में भी हैं क्योंकि ऐसे वक्त पर वे इससे तत्काल जरूरी पैसे की व्यवस्था करने की हिम्मत रखती हैं। संक्षेप में कहें तो ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब परिवारों की आत्मनिर्भरता में पशुपालन की बड़ी भूमिका हो सकती है।

पशुपालन में महिलाओं की भूमिका सर्वोपरि

राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के मुताबिक देश में पशुपालन के क्षेत्र में 80 ये 90 लाख लोगों को सीधा रोजगार मिला है जबकि लगभग इतने ही लोग अप्रत्यक्ष तौर पर भी इससे जुड़े हैं। भारत आज दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश है और यहाँ विश्व के कुल दूध उत्पादन में से 13 फीसदी हिस्से का उत्पादन होता है। भारत में दूध उत्पादन का बड़ा हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों से आता है। खास बात यह है कि गाँवों में मवेशी पालन में महिलाओं की भूमिका सर्वोपरि है। महिलाएँ पशुपालन से जुड़े विभिन्न कार्यों यथा पशुओं की देखभाल, खानपान एवं पशु उत्पादों की बिक्री आदि में महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं। आंकडों के मुताबिक पशुपालन व दूध उत्पादन से जुड़े करीब 80 फीसदी से भी अधिक कार्यों की जिम्मेदारी सीधे तौर पर महिलाओं के ऊपर है। ऐसे में पशुपालन क्षेत्र के विकास को सीधे

महिलाओं के उत्थान से जोड़कर देखा जा सकता है। मवेशी खरीदने के लिए पर्याप्त पूंजी का अभाव और अन्य संस्थागत बाधाओं को यदि दूर कर दिया जाए तो पशुपालन के माध्यम से महिलाएँ सही अर्थ में आर्थिक रूप से स्वावलंबी बन सकेंगी।

बहरहाल, जीविका ने पशुपालन से जुड़ी इन बाधाओं को दूर करने के प्रयास किए हैं। मधेपुरा जिले के कुमारखंड, मुरलीगंज, बिहारीगंज, ग्वालपाड़ा आदि प्रखंडों, जहाँ जीविका ने 4–5 साल पहले काम करना शुरू कर दिया था, में इसका असर अब दिखने लगा है। यहाँ गाँवों की ज्यादातर गरीब महिलाएँ जीविका के स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हैं। ये महिलाएँ पहले छोटी–छोटी बचत कर समूह में अच्छा खासा धन जमा कर लेती हैं इसके बाद पूंजीगत जरूरतों को पूरा करने के लिए वे कर्ज का सहारा लेती हैं। ऐसा देखा गया है कि ये महिलाएँ समूह से उधार लेकर गाय, भैंस आदि खरीदने में खासी दिलचस्पी ले रही हैं। चूंकि गाँवों में सामूहिक स्तर पर कई महिलाएँ दूध उत्पादन से जुड़ गई हैं इसलिए अब दूध बेचने के लिए उन्हें अधिक दिक्कतों का सामना नहीं करना पड़ रहा है। स्थानीय स्तर पर दूध का बाजार उपलब्ध है। इस तरह पशुपालन के लिए पूंजीगत जरूरतों के साथ ही बाजार की समस्या भी दूर हुई है। मधेपुरा जिले में इस तरह के कई उदाहरण सामने हैं, जिनसे साबित होता है कि पशुपालन कार्य अपनाने से महिलाओं के जीवन में वाकई सकारात्मक बदलाव आया है। जिले में ऐसी कई महिलाएँ हैं, जिन्होंने जीविका के सहयोग से पशुपालन का काम अपनाया है और अपने घर की आय बढ़ाई है। जिले में एनडीडीबी जिले के धैलाढ़ एवं गम्हरिया प्रखंड में कार्य कर रही है।

नाम	:	गौरी देवी,
पति	:	सचिन कुमार
पता	:	रहटा, कुमारखंड
स्वयं सहायता समूह	:	गायत्री स्वयं सहायता समूह,
ग्राम संगठन	:	ज्योति ग्राम संगठन
संकुल स्तरीय संघ	:	किरण संकुल स्तरीय संघ

- मात्र आठवीं पास गौरी देवी आज एक कुशल व्यवसायी हैं।
- जीविका समूह से ऋण लेकर व्यवसाय किया आरंभ।
- श्रृंगार की दुकान चलाने के साथ वह गाय पालन भी कर रही हैं।
- आर्थिक स्थिति मजबूत होने के बाद बच्चों की पढ़ाई हुई शुरू।

गौरी देवी : बढ़ाया कदम और छू लिया आसमां

मधेपुरा जिले के कुमारखंड प्रखंड के रहटा गांव की गौरी देवी अपने गांव की आदर्श महिला है, जिसने अपने प्रयास से अपने परिवार को मुश्किलों एवं कठिनाइयों से बाहर निकाल कर उन्हें नवजीवन प्रदान किया। मात्र आठवीं पास गौरी देवी आज सफल महिला व्यवसायी है। वे सफलता पूर्वक अपने गांव में श्रृंगार की दुकान के संचालन के साथ गाय भी पाल रही हैं। गौरी देवी के पति सचिन बेरोजगार हैं तथा उनके ससुर चाय की दुकान चलाते थे। उन्हीं की दुकान पर गौरी और उनके पति मदद करती थीं। एक चाय की दुकान से पूरे परिवार का संचालन कठिनाई से हो रहा था। इसी दौरान 2009 में गौरी देवी को जीविका द्वारा बनाये जा रहे समूह से जुड़ने का मौका मिला। गौरी देवी बताती हैं कि 12 दिसम्बर 2009 को गायत्री स्वयं सहायता से जुड़ीं और फिर उन्होंने मुड़कर नहीं देखा। ज्योति ग्राम संगठन और किरण संकुल स्तरीय संघ से सम्बद्व गौरी देवी बताती हैं कि 2012 में उन्होंने दुकान के लिए कर्ज लिया। काफी सोच–विचार के बाद श्रृंगार की दुकान उन्होंने खोला और उसका नाम जीविका श्रृंगार स्टोर रखा। इस दुकान से औसत हर माह 10 हजार रूपये की आमदनी हो रही है। दुकान की बचत से ही एक गाय खरीदकर वे दूध बेचने का काम भी करती हैं। इससे भी उन्हें अच्छी आमदनी हो रही है। 17500 रूपया का कर्ज ब्याज सहित समूह को वापस कर दिया है। अब मात्र 7500 रूपया ही उनके ऊपर कर्ज है। उनके काम में उनके पति भी उनकी मदद करते हैं। गौरी देवी कहती हैं कि समूह के इस 7500 रूपया का कर्ज वापस कर फिर से नया कर्ज लेंगी और अपनी दुकान के पास ही पति के लिए रेडिमेड कपड़ों की दुकान खोलेंगी। गौरी देवी के चार बच्चे हैं और चारों बच्चे पढ़ाई कर रहे हैं। गौरी देवी कहती हैं हम पति पत्नी ने दसवीं से ज्यादा की पढ़ाई नहीं की लेकिन हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे ज्यादा से ज्यादा पढ़ाई करें।

गौरी देवी जीविका की प्रशंसा करते हुए कहती हैं कि अगर मैं जीविका से नहीं जुड़ती और जीविका हमें रास्ता नहीं दिखाती तो शायद मैं आज वह नहीं होती जो हूं। जीविका ने हमारी जिन्दगी बदल दी।

मीना देवीः स्याह अंधेरे के बाद लौटा उजाला

बदलते दौर और समाज के साथ महिलाएं भी अब उंची उड़ान भरने लगी हैं। इसी की एक बड़ी उदाहरण हैं कुमारखंड प्रखंड के खोकसी पंचायत अन्तर्गत रामगंज की मीना देवी। मीना देवी कल तक मजदूरी का काम करती थीं। पति भी खेती–बाड़ी का कार्य। इन सभी परिस्थितियों के बीच घर में आर्थिक कठिनाई निरंतर बनी रहती थी। मीना देवी के मन में हमेशा कुछ अपना काम या व्यवसाय करने का विचार आता था लेकिन उन्हें कुछ भी समझ नहीं आता था। इसी बीच वर्ष 2012 में उन्हें जीविका समूह से जुड़ने का मौका मिलला। मीना देवी सत्यम् समूह से जुड़ी और इसके फायदे के बारे में अवगत हुई। छोटी–छोटी बचत के फायदे मीना देवी ने कई बार महसूस किये। छोटी–छोटी आवश्यकताओं के लिए मीना देवी ने समूह से कई बार ऋण लिया। इसी बीच समूह में सूक्ष्म नियोजन प्रक्रिया के तहत हुई और आरंभिक पूंजीकरण की राशि समूह को प्राप्त हुई। मीना देवी ने भी पूर्व में अपनी कार्ययोजना के बारे में सूक्ष्म नियोजन प्रक्रिया के दौरान में जानकारी दे दी थी। समूह से उन्हें 10 हजार रूपये का ऋण प्राप्त हुआ। मीना देवी ने एक भैंस की पाडी खरीदी। मीना देवी ने उसका काफी बेहतर तरीके से लालन–पालन किया। डेढ़–दो साल के बार वह दूध देने योग्य हो गयी। मीना देवी ने उस भैंस से सुबह और शाम मिलाकर होने वाले चार किलो दूध को बाजार में बेचना शुरू कर दिया। आज उसे प्रति दिन 100 रूपया और औसतन महीने में 3 हजार रूपये की बचत होती। कल तक कठिनाई से हजार दो हजार रूपये आमदनी करने वाली मीना देवी आज आराम से 3 हजार से ज्यादा की आमदनी दूध बेचकर कर रही हैं जिससे वे अपने दोनों बच्चों को बेहतर शिक्षा दे ही रही हैं और घर परिवार की भी आर्थिक कठिनाई को दूर करने में मदद पहुंचा रही हैं। मीना देवी समूह से प्राप्त ऋण को भी वापस कर रही हैं।

मीना देवी का मानना है कि आने वाले दिनों में वे और भैसों को खरीदेंगी, ताकि उन्हें और ज्यादा आर्थिक लाभ हो सके। मीना देवी के लगन और हौसले को देखकर यह असंभव भी नहीं लगता।

नाम : मीना देवी
पति : विजेन्द्र पासवान
पता : रामगंज,खोकसी, ग्वालपाड़ा
समूह : सत्यम जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठनः भगवती जीविका ग्राम संगठन

- मीना देवी पहले मजदूर थीं। अब एक सफल व्यवसायी हैं।
- समूह से ऋण लेकर भैंस खरीदी, जिससे दूध को बेचकर लाभ कमा रही हैं।
- कल तक आमदनी का कोई निश्चित जरिया नहीं था, पर अब आर्थिक रूप से सशक्त हो गयी हैं।

अध्याय - 08

उत्पादक समूह : गाँव की नारी बनी व्यापारी

ग्रामीण विकास का मतलब केवल सड़क, बिजली, पानी जैसी बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध करा देना ही नहीं है। जब ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को जीविकोर्पाजन से संबंधित विभिन्न गतिविधियों से जोड़ा जाएगा, तभी ग्रामीण विकास का सपना पूरा होगा। जीविकोपार्जन को प्रोत्साहन मिलने से ही ग्रामीण परिवार अपने घर की आमदनी बढ़ा सकेंगे और इससे ही उनकी आर्थिक उन्नति संभव है। इसके लिए उनका कौशल विकास करने के साथ ही स्वरोजगार के लिए आवश्यक संसाधन मुहैया कराए जाने की आवश्यकता है।

ग्रामीण विकास की इसी अवधारणा को ध्यान में रखते हुए विश्व बैंक की मदद से वर्ष 2007 में बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति के तहत जीविका परियोजना की शुरुआत की गई थी। इसका मूल उद्देश्य ग्रामीण समुदायों विशेषकर महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ते हुए उन्हें सामाजिक एवं आर्थिक तौर पर सबल बनाना है। वास्तव में महिलाओं को जीविकोपार्जन से संबंधित गतिविधियों से जोड़ने के लिए जीविका ने कई तरह के प्रयास किए हैं और धरातल पर अब इसका असर दिखने भी लगा है। दरअसल ग्रामीण क्षेत्र में आज भी जीविकोपार्जन को सीधे तौर पर महज कृषि व पशुपालन के अलावा कुछ हद तक कृषि से जुड़े छोटे–मोटे उद्यमों से जोड़कर देखा जाता है लेकिन जीविका ने इन सबसे इतर अन्य व्यवसायों से भी ग्रामीण समुदाय खासकर महिलाओं को जोड़ने का प्रयास किया है। दिलचस्प बात यह है कि जीविका के सराहनीय प्रयास की बदौलत गाँव की गरीब महिलाएँ अब दुकानदारी जैसे कामों में हाथ आजमा रही हैं।

जीविका परियोजना की मदद से मधेपुरा जिले के सभी प्रखंडों में बड़ी संख्या में महिलाएँ किराना, मनिहारी, चाय, पान, मिठाई, अंडा, कपड़ा, फर्नीचर, साइकिल, बढ़ई, नास्ता, आदि की दुकान खोलकर आय अर्जित कर रही हैं और आत्मनिर्भर हो रही हैं। अब तक घर के ही कामों में उलझ कर रह जाने वाली इन महिलाओं ने अब सफल व्यापारी के तौर पर अपनी पहचान बनाई है। परिणामस्वरूप उनके परिवार की आमदनी बढ़ी है और वे गरीबी के दलदल से बाहर निकालने में सक्षम हुई हैं। इससे घर में भी उनकी इज्जत बढ़ी है। खास बात यह है कि गैर कृषि से जुड़े इन व्यवसायों के प्रति गाँवों में बढ़ते रुझान से कृषि पर लोगों की निर्भरता कम करने में मदद मिली है। जीविका ने महिलाओं को भी दुकान या अन्य छोटे–मोटे व्यवसायों से जोड़ने के लिए सामाजिक एवं आर्थिक तौर पर सक्षम बनाया है। दुकानदारी या अन्य तरह के कार्यों में आगे आने से

महिलाओं में आत्मनिर्भरता के साथ–साथ आत्मविश्वास भी बढ़ा है।

जीविका का उद्देश्य महिलाओं को सामाजिक एवं आर्थिक तौर पर सशक्त बनाना है। सामाजिक सशक्तीकरण की दिशा में जीविका के द्वारा समान स्तर की गरीब महिलाओं के समूहों का गठन किया जाता है। इसके बाद समूह को समय–समय पर विभिन्न मॉड्यूल्स का प्रशिक्षण दिया जाता है। पहले मॉड्यूल के अंतर्गत गरीबी, गरीबी का दुष्चक्र, इससे बाहर निकलने के रास्ते और स्वयं सहायता समूह की आवश्यकता आदि के बारे में बताया जाता है। इसी तरह दूसरे मॉड्यूल के तहत समूह की बैठक की प्रक्रिया, एजेंडा, समूह के नियम, बचत, लेनदेन आदि की जानकारी दी जाती है। बैठक की प्रक्रिया में प्रार्थना व परिचय जैसे विषय शामिल हैं। समूह सदस्य आपसी परिचय से एक दूसरे को अच्छी तरह जानती हैं और उनमें आपसी विश्वास एवं एकता का वातावरण पैदा होता है। साथ ही उनमें दूसरों के सामने अपनी बातें रखने की क्षमता भी विकसित होती है। मॉड्यूल तीन में नेतृत्व का महत्व, इसकी जिम्मेदारी और बुक्स ऑफ रिकॉर्ड की महत्ता आदि पर प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके बाद चौथे मॉड्यूल में समूह के कार्यों की सीमाएं एवं ग्राम संगठन की आवश्कता के बारे में बताया जाता है। इसके अतिरिक्त महिलाओं को नियमित रूप से स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वच्छता के अलावा विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराई जाती है। इन तमाम प्रशिक्षणों एवं जानकारियों से महिलाओं में जागरूकता और बौद्धिक क्षमता का स्तर बढ़ता है।

इसी तरह आर्थिक सशक्तीकरण की दिशा में जीविका सर्वप्रथम समूह से जुड़ी महिलाओं को साप्ताहिक बचत करने की आदत डालने के लिए प्रेरित करती है। इन छोटी–छोटी बचतों के सहारे समूह के पास एक बड़ी धन राशि एकत्र होती है। इसके अलावा जीविका की ओर से समूह को शुरूआत में आरंभिक पूंजी निवेश (आई.सी.एफ.) के रूप में 30,000 से 60,000 रुपये और परिक्रमी निधि (रिवॉल्विंग फंड) के तौर पर 15,000 रुपये दिए जाते हैं। बैंक से भी समुह को ऋण (कैश क्रेडिट) के तौर पर 50,000 रुपये दिलवाया जाता है। कुल मिलाकर समूह के लिए यह अच्छी रकम हो जाती है, जिससे समूह की महिलाओं के लिए अपना स्वरोजगार–कारोबार या कोई उद्यम शुरू करने के वास्ते उनकी शुरुआती पूंजीगत जरूरतें पूरी होती हैं।

सबसे बड़ी बात यह है कि समूह के बीच होने वाले हर तरह के वित्तीय लेनदेन समूह की दीदियां अपनी जरूरतों के अनुसार आपस में विचार–विमर्श करके तय करती हैं। इससे उनमें सामूहिक निर्णय क्षमता का भी विकास होता है। इसके अतिरिक्त आगे चलकर इन समूहों का संयोजन ग्राम संगठन एवं संकुल स्तरीय संघ से किया जाता है, जहाँ से समूह की बड़ी पूंजीगत जरूरतें पूरी होती रहती है। दूसरे शब्दों में कहें तो जीविका के सहयोग से गरीब महिलाओं को व्यवसाय शुरू करने के लिए पूंजी की दिक्कत आड़े नहीं आती। तमाम दिक्कतों के बावजूद व्यवसाय की दुनिया में कदम रख कर महिलाओं ने निश्चित तौर पर मिसाल कायम की है। इनमें से कुछ महिलाओं की कहानियाँ प्रस्तुत हैं।

जीविका दीदी चला रहीं है खाद – बीज की दुकान

सफलता की चाह हो तो कोई भी बाधा लांघी जा सकती है। मधेपुरा सदर प्रखंड की 60 दीदियों ने इसे साबित कर दिखाया। इन दीदियों ने ना केवल अपने प्रयास से अपनी समस्याओं का समाधान किया बल्कि उस समाधान से अपनी आर्थिक प्रगति का रास्ता भी तलाश लिया। सुखासन चकला गांव की दर्जनों महिलाएं जीविका समूह से जुड़ी थीं और छोटे–मोटे कार्यों से जुड़ी हुई थी। परंतु उनमें कई दीदियों की समस्या अलग थी। कई दीदी जो खेती कार्य से जुड़ी हुई थी और उनकी समस्या यह थी कि उन्हें खेती के लिए समय से खाद और बीज की प्राप्ति नहीं हो पाती थी। इन समस्याओं पर दीदियों में काफी चर्चा होती थी। आखिरकार उनलोगों ने उत्पादक समूह बनाने का निर्णय लिया, जो उनकी समस्या को थोड़ा कम कर सके। इस उत्पादक समूह के गठन के लिए 15 जनवरी को आमसभा का आयोजन किया गया। इस आमसभा में उज्जवल कृषि उत्पादक समूह का गठन किया गया। इस उत्पादक समूह में 60 दीदी सदस्य बनीं। उत्पादक समूह गठन के बाद दीदियों ने यह निर्णय लिया कि क्यों न हमलोग खाद–बीज के दुकान की ही शुरूआत करें। काफी विचार विमर्श एवं जानकारी लेने के बाद दीदियों ने जीविका के जिला कार्यालय से सहयोग मांगा। इस दौरान जीविकोपार्जन प्रबंधक द्वारा जिला कृषि पदाधिकारी, मधेपुरा से संपर्क किया गया जिसके बाद डीएओ ने बताया कि वे उत्पादक समूह को भी खाद–बीज दुकान का लाईसेंस प्रदान करते हैं। जिसके बाद दीदियों ने दुकान के लाईसेंस के लिए जिला कृषि कार्यालय में आवेदन दिया। आवेदन के 45 दिनों बाद उत्पादक समूह को खाद–बीज की दुकान का लाइसेंस प्राप्त हुआ। जीविका द्वारा उत्पादक समूह को 587477 रूपया सहयोग दिया गया। इसके बाद उत्पादक समूह द्वारा सुखासन में खाद–बीज की दुकान खोली गयी।

- समूह से जुड़ी दीदियों को खेती के लिए समय से खाद एवं बीज की प्राप्ति होती है।
- 60 दीदियों ने मिलकर एक उत्पादक समूह का गठन किया।
- उत्पादक समूह ने खाद–बीज बेचने का लाइसेंस प्राप्त किया।
- उत्पादक समूह द्वारा सुखासन में खाद–बीज की दुकान खोला गया।
- दीदियों को अच्छी गुणवत्ता वाला खाद–बीज मिलने लगा, वहीं उत्पादक समूह को भी लाभ होना प्रारंभ हो गया।

उत्पादक समूह द्वारा यूरिया, डीएपी, पोटाश, केल्सियम आदि की खरीददारी की गयी। जीविका से जुड़ी दीदी अपनी जरूरत के अनुसार खाद एवं बीज की खरीददारी अपने सुविधानुसार अपनी ही दुकान से करना शुरू की। इस खरीद–बिक्री से जहां एक तरफ खरीददार दीदी को बाजार से कम कीमत पर खाद–बीज की उपलब्धता होने लगी, वहीं दुकान को मुनाफा भी होने लगा। खास बात यह थी कि दीदियों को अच्छी गुणवत्ता वाला खाद–बीज मिलने लगा। पी.जी. ने खाद–बीज खरीद–बिक्री से 17450 रूपया का शुद्ध लाभांश जमा किया। पीजी से जुड़ी दीदी कहती हैं कि आने वाले समय में इस दुकान में दीदियों द्वारा निर्मित जैविक खाद भी बेचा जाएगा।

वीणा देवीः उम्मीद की किरण

ग्वालपाड़ा प्रखंड के सरौनीकला की रहने वाली अनिता देवी आजकल काफी खुश रहती हैं। उनकी खुशी का राज उनकी आर्थिक कठिनाइयों का समाधान है। कल तक वे एक सामान्य महिला थीं, जो मुश्किल से अपने परिवार का भरण–पोषण कर पा रही थीं। पति परदेश में काम करते हैं और वहां से वे इतना कमा कर घर नहीं भेज पाते थे कि घर की आर्थिक कठिनाईयों का समाधान हो सके। मात्र पांचवी तक पढ़ी अनिता देवी काफी दिनों से अपने परिवार को आर्थिक मदद पहुंचाने के लिए कुछ नया करना चाहती थी। इसी बीच अनिता देवी वर्ष 2012 में जीविका समूह से जुड़ी। समूह में जुड़ने के बाद उनमें कुछ नया करने का जज्बा आया। उन्हें लगा कि अगर वे कोई व्यवसाय करती हैं तो उससे वे अपने परिवार को बेहतर तरीके से चला सकती हैं। इसी बीच समूह में आई.सी.एफ. की राशि आई और अनिता देवी ने अपनी आर्थिक स्थिति का हवाला देकर होटल के व्यवसाय के लिए 35 हजार रूपया का ऋण समूह से मांगा। समूह द्वारा उनकी आवश्यकता को देखकर उन्हें ऋण उपलब्ध करा दिया गया। समूह से मिले पैसे से अनिता देवी ने वर्ष 2013 में होटल खोला। अनिता देवी इस होटल का पिछले तीन वर्षों से सफलता पूर्वक संचालित कर रही हैं। आरंभ में थोड़ी बहुत कठिनाई आई लेकिन बाद में सब ठीक हो गया। अनिता देवी को प्रतिमाह 3 से 4 हजार रूपया तक की बचत हो जाती है। धीरे–धीरे वे अपने होटल को बेहतर भी बना रही हैं और समूह से लिये गये ऋण को भी वापस कर रही हैं। अनिता देवी के पास अब समूह से लिये गए ऋण में से करीब 5 हजार रूपया और बकाया है। अनिता देवी ने कहना है कि इस ऋण को वापस करने के बाद थोड़ा पैसा और ऋण के रूप में लेंगी और अपने इस होटल में पूंजी लगाकर इसे और बेहतर बनायेंगी ताकि थोड़ी और आमदनी हो सके और वह अपने पति राजकुमार साह को परदेश से वापस बुला सकें। अनिता देवी द्वारा अपने परिवार के लिए जिस प्रकार अपना व्यवसाय आरंभ किया और उसमें सफलता पाई, उससे आस–पास और समूह की अन्य महिलाओं में भी कुछ अपना करने की प्रवृति बढ़ी है और यही कारण है कि इस क्षेत्र में महिलाएं विभिन्न व्यवसायों से जुड़कर अपने एवं अपने परिवार को आर्थिक मदद पहुंचा रही हैं।

नाम : वीणा देवी
पता : मल्लिक टोला, सिंहेश्वर
समूह : सुरज जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन : विश्वास जीविका ग्राम संगठन

- वीणा देवी को उसके पति ने छोड़ दिया। वीणा देवी अपने दोनों छोटे बच्चों के भरोसे रह गयी।
- मायके वालों ने भी मदद नहीं की।
- इलाज के अभाव के कारण 10 वर्षीय बेटी की मौत हो गयी।
- इसी बीच वह जीविका समूह से जुड़ी, जहां उन्हें जिन्दगी जीने का मकसद मिल गया।
- समूह से ऋण लेकर उसने सत्तू की दुकान खोली।

नाम	:	अनिता देवी
पति	:	राजकुमार साह
पता	:	सरौनीकला, ग्वालपाड़ा
समूह	:	भगवती जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन	:	सेवा जीविका ग्राम संगठन

- अनिता के पति प्रदेश में काम करते हैं, लेकिन घर चलाने के लिए हमेशा पैसा नहीं भेज पाते थे।
- जीविका समूह से अनिता जुड़ी और उन्होंने व्यवसाय के लिए ऋण लिया।
- ऋण से घर पर एक होटल खोला।
- होटल से 3 से 4 हजार रूपये की आमदनी अनिता को प्राप्त हो रही है। जिससे घर सही तरीके से चला रही है, वहीं समूह के ऋण भी वापस कर रही हैं।
- अनिता कहती हैं अब अपने पति को भी परदेश से वापस बुला लेंगी।

अनिता देवी : समूह से आयी समृद्धि

अनिता देवी आजकल काफी खुश रहती हैं। उनकी खुशी का राज उनकी आर्थिक कठिनाईयों का समाधान है। कल तक वे एक सामान्य महिला थीं, जो मुश्किल से अपने परिवार का भरण–पोषण कर पा रही थीं। पति परदेश में काम करते हैं और वहां से वो इतना कमा कर घर नहीं भेज पाते थे कि घर की आर्थिक कठिनाईयों का समाधान हो सके। मात्र पांचवी तक पढ़ी अनिता देवी काफी दिनों से अपने परिवार को आर्थिक मदद पहुंचाने के लिए कुछ नया करना चाहती थी कि लेकिन उन्हें कोई भी रास्ता नजर नहीं आ रहा था। इसी बीच अनिता देवी वर्ष 2012 में जीविका समूह से जुड़ी। समूह में जुड़ने के बाद उनमें कुछ नया करने का जज्बा आया। उन्हें लगा कि अगर वो कोई व्यवसाय करती हैं तो उससे वो अपने परिवार को बेहतर तरीके से चला सकती हैं। इसी बीच समूह में आईसीएफ की राशि आई और अनिता देवी ने अपनी आर्थिक स्थिति का हवाला देकर होटल के व्यवसाय के लिए 35 हजार रूपया का ऋण समूह से मांगा। समूह द्वारा उनकी आवश्यकता को देखकर उन्हें ऋण उपलब्ध करा दिया गया। समूह से मिले पैसे से अनिता देवी ने वर्ष 2013 में होटल खोला। आरंभ में थोड़ी बहुत कठिनाई आई लेकिन बाद में सब ठीक हो गया। अनिता देवी को प्रतिमाह 3–4 हजार रूपया तक की बचत हो जाती है। धीरे–धीरे वे अपने होटल को बेहतर भी बना रही हैं और समूह से लिये गये ऋण को भी वापस कर रही हैं।

अनिता देवी के पास अब समूह से लिये गए ऋण में से करीब 5 हजार रूपया अभी भी बकाया है। अनिता देवी का कहना है कि इस ऋण को वापस करने के बाद थोड़ा पैसा और ऋण के रूप में लेंगी और अपने इस होटल में पूंजी लगाकर इसे और बेहतर बनायेंगी जिससे ज्यादा आमदनी हो ताकि अपने पति राजकुमार साह को परदेश से वापस बुला सकें। अनिता देवी द्वारा अपने परिवार के लिए जिस प्रकार अपना व्यवसाय आरंभ किया और उसमें सफलता पाई, उससे आस–पास और समूह की अन्य महिलाओं में भी कुछ अपना करने की प्रवृति बढ़ी है और यही कारण है कि इस क्षेत्र में महिलाएं विभिन्न व्यवसायों से जुड़कर अपने एवं अपने परिवार को आर्थिक मदद पहुंचा रही है।

पूजा कुमारी : बदलावों की प्रतीक

अब पूजा अपने फैसले खुद लेने में सक्षम है। अच्छे और बुरे का फर्क अब वह बखूबी कर पाती है। पहले की तरह न चेहरे पर शिकन, और झिझक। उसकी जिन्दगी में हुए इस बदलाव का श्रेय वे जीविका के स्वयं सहायता समूहों की बैठकों को देती हैं। पूजा बताती हैं कि जब जून 2014 में वे समूह के साथ जुड़ीं तो उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि मेरी जिन्दगी इतनी बदल जाएगी। मैं दसवीं पास जरूर थी लेकिन हमेशा किसी दूसरे व्यक्ति से बात करने में डर लगता था लेकिन समूह की बैठकों में निरंतर जाने–आने से मेरा हौसला बढ़ा। समूह की दीदियों के साथ बात करने, किसी मुद्दे पर अपनी राय देने से मेरा हौसला धीरे–धीरे बढ़ने लगा। समूह में मेरे द्वारा दिये गए सुझावों से जब दीदियों द्वारा प्रशंसा होती तो मेरा हौसला और भी बढ़ जाता था।

पूजा बताती हैं कि मैंने कई बार सोचा कि मेरे पति, साइकिल से कपड़े की फेरी लगाते हैं, इधर–उधर धूप–पानी में कपड़े बेचने के लिए भटकते हैं, उनके लिए एक कपड़े की दुकान खुलवा दिया जाए। लेकिन जब महाजनों से कर्ज लेने का सोचती तो कर्ज का ब्याज इतना अधिक होता था कि कर्ज लेने की हिम्मत नहीं होती थी। इसी बीच जीविका से जुड़ने के बाद मेरे मन में दबी कपड़े की दुकान खोलने की बात एक बार फिर सामने आने लगी। मैंने समूह से 10 हजार का ऋण लिया और कुछ पैसा अपना लगाकर घर पर ही एक कपड़े की छोटी दुकान खोल ली। धीरे–धीरे अब हमारे कपड़े की दुकान में ग्राहक बढ़ने लगे। कल तक जहां हम महीने में 4–5 हजार रूपया बड़ी मुश्किल से कमा पाते थे, वहीं अब 9–10 हजार की आमदनी आराम से हो जाती है। मैं भी व्यवसाय में मदद कर देती हूं। अब हमारी आर्थिक स्थिति भी बेहतर हो गयी है। पूजा बताती हैं कि आरंभ में जब कपड़े की दुकान खोली थी तो उस दुकान में चोरी हो गयी थी तो हमलोग काफी निराश हो गए थे, लेकिन हमने फिर नये हौसले से कारोबार शुरू किया। हमारे हौसले ने हमें जीत दिलवाई।

पूजा कहती हैं आज आप जिस पूजा को देख रहे हैं वह कल वैसी नहीं थी। मुझमें काफी परिवर्तन आ गया है और इसके लिए वे जीविका को धन्यवाद देती हैं।

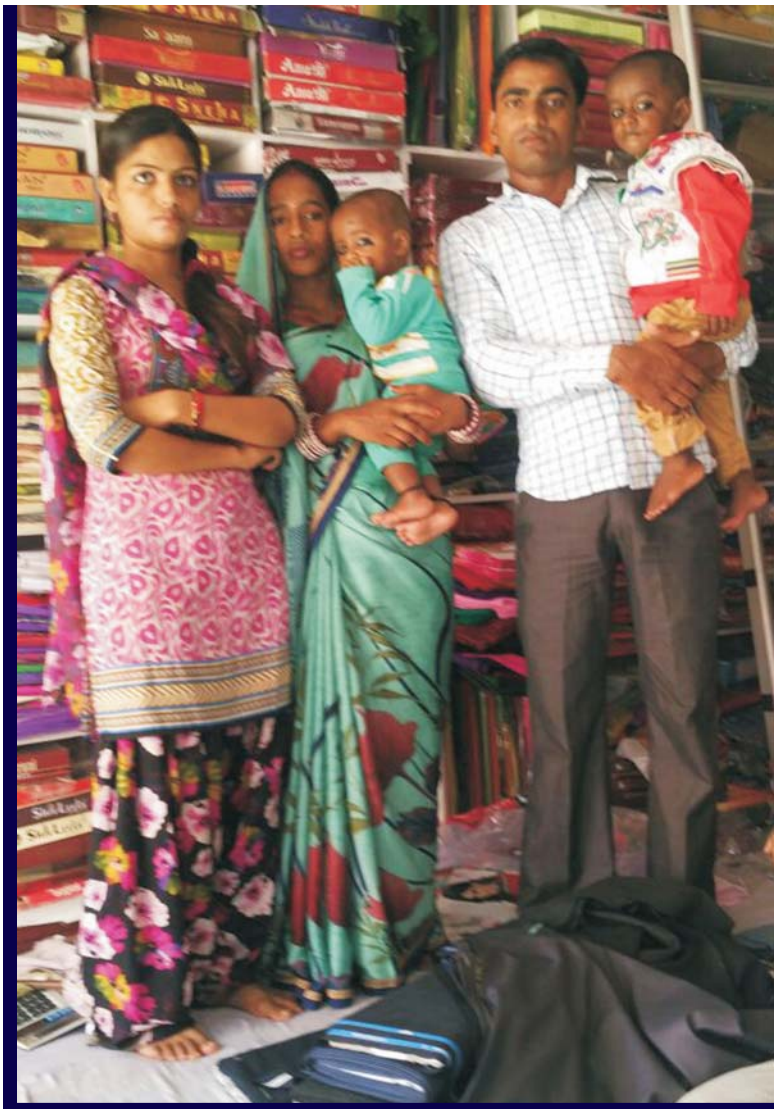

नाम	:	पूजा कुमारी,
पता	:	गोठबस्ती, दुर्गापुर, पुरैनी, मधेपुरा
समूह	:	प्रीति जीविका स्वयं सहायता समूह
ग्राम संगठन	:	अनुपम जीविका ग्राम संगठन

- पूजा के पति फेरी का काम करते थे, जिसमें उन्हें काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था।
- 2014 में समूह से जुड़कर पूजा ने ऋण लिया और कपड़े की दुकान खोल ली।
- अब पूजा के पति को यत्र–तत्र भटकना नहीं पड़ता है और पति के व्यवसाय में पूजा भी मदद करती है।
- समूह से जुड़ने के बाद जहां पूजा आर्थिक रूप से सशक्त तो हुई हीं, वहीं उनके व्यक्तित्व का भी काफी विकास हुआ

नाम	:	रौशन खातुन
पति	:	मो0 इबराम
पता	:	वार्ड–4, चुल्हारी, ग्वालपाड़ा
समूह	:	शक्ति जीविका स्वयं सहायता समूह
संगठन	:	एकता जीविका ग्राम संगठन
संघ	:	जागृति संकुल स्तरीय संघ

- रौशन खातुन जीविका से जुड़ने के पूर्व एक छोटी व्यवसायी थी।
- जीविका समूह में जुड़ने के बाद आज उनके व्यवसाय को एक नई उंचाई मिली है।
- आज रौशन खातुन अपने समय प्रबंधन एवं कार्य प्रबंधन के कारण महीने में 10 से 12 हजार रूपया तक कमा लेती हैं।

रौशन खातुनः शुरूआत छोटी पर सफलता बड़ी

हंसमुख, मिलनसार, शांत और सुशील स्वभाव वाली रौशन खातुन ने अपनी सफलता की ऐसी इबादत लिख डाली। ग्वालपाड़ा के वार्ड–04 चुल्हारी की रौशन खातुन अपने समय प्रबंधन और कार्य प्रबंधन के लिए सबों के लिए आज उदाहरण बन चुकी हैं। शक्ति जीविका स्वयं सहायता समूह से 2011 में जब रौशन खातुन जुड़ी तो उनका मकसद मात्र थोड़ी बहुत बचत का था। समूह में किये जाने वाले बचत के लिए उन्होंने एक श्रृंगार की छोटी दुकान खोली। इसी दुकान की कमाई से उन्होंने समूह में बचत करना आरंभ कर दिया। इसी दौरान उन्हें सूक्ष्म नियोजन प्रक्रिया में यह जानकारी मिली की कि जरूरतमंद दीदियों को जीविका द्वारा ऋण दिया जाएगा। रौशन कहती हैं कि– जब उन्हें यह पता चला कि उन्हें भी आवश्यकतानुसार ऋण की प्राप्ति हो सकती है तो उसने भी ऋण की मांग कर दी। समूह द्वारा उन्हें 10 हजार का ऋण दिया गया। इस पैसे को मैंने अपने छोटे से दुकान में पूंजी के रूप में लगा दिया। रौशन खातुन कहती हैं कि मैंने खुद मुजफ्फरपुर और मधेपुरा की मुख्य मंडी से सामान लाना शुरू कर दिया। धीरे–धीरे बाजार की समझ होते ही मैंने अपने घर पर चूड़ी, साड़ी, लहठी आदि का होलसेल व्यवसाय करना शुरू कर दिया। सुबह 11 बजे तक घर से ही छोटे–छोटे फुटकर व्यवसायियों को होलसेल दर पर माल देती हैं और फिर वहां से ग्वालपाड़ा बाजार आकर अपनी दुकान में ग्राहकों को सामान बेचती हैं। रौशन खातुन बताती हैं कि उन्हें दोनों कामों में 7–8 हजार रूपये की आमदनी आसानी से हो जाती है। साल में लगने वाले मेले के समय यह आमदनी बढ़कर दस से 12 हजार तक पहुंच जाती हैं। रौशन खातुन के पति मो0 इबराम फल एवं सब्जी के व्यवसाय से जुड़े हुए हैं। रौशन खातुन अपने पति के काम में भी मदद करती है। दोनों मिलकर अब अपने 4 बच्चों का लालन–पालन सही तरीके से कर रहे हैं।

रौशन कहती हैं कि–अगर मैं आपसे बात कर पा रही हूं, अपने व्यवसाय के लिए बाहर जा पा रही हूं या कहीं भी अपनी बातों को रख पा रही हूं तो यह सब जीविका की देन है और सबसे जरूरी बात यह कि मेरी दुकान के अधिकांश ग्राहक जीविका की मेरी दीदियां ही हैं। जिनके बल पर ही मैं छोटे से दुकान से होलसेल व्यवसायी बन पाई। रौशन खातुन का गर्व से भरा चेहरा उसकी सफलता की कहानी खुद–ब–खुद बयान कर रहा था।

समरून खातुनः संघर्ष से खुशियों की सौगात का सफर

कल तक समरून खातुन गली–गली में घूम–घूम कर चुड़ी बेचने का काम किया करती थीं। इस भाग दौड़ में जहां हमेशा अनिश्चिता की स्थिति बनी रहती थी, वहीं आमदनी का भी कोई ठिकाना नहीं था और दिन भर की भागमभाग उन्हें काफी थका और परेशान कर देता था। समरून खातुन की इच्छा होती थी कि कहीं छोटी सी ही सही अपनी दुकान खोल लें ताकि उन्हें इस भाग दौड़ से मुक्ति मिल सके। लेकिन काफी प्रयास से यह संभवन नहीं हो पा रहा था। इसी बीच समरून खातुन दिसंबर 2014 में जीविका से जुड़ीं। जब वो जीविका से जुड़ी तो उन्हें साप्ताहिक बचत में भी परेशानी होती थी। आमदनी कम और खर्चे ज्यादा था। पर समूह की बैठकों में छोटी–छोटी बचतों के फायदे के बारे में जानकर समरून ने नियमित बचत करना जारी रखा। इसी बीच उन्हें 600 रूपया की जरूरत पड़ी तो उसने समूह से 600 रूपया का ऋण लिया। इस ऋण से उसने गांव के हाट में चुड़ी की एक रेहड़ी लगा ली। उसने निर्णय लिया कि अब वे यहीं पर एक ही जगह बैठकर अपने चुड़ी का कारोबार करेंगी। उनका फैसला रंग लाने लगा और उनकी छोटी–सी दुकान चल निकली। इसी बीच समूह में सामुदायिक निवेश निधि की राशि आई, जिसमें से समरून खातुन ने अक्टूबर 2015 में 5400 रूपया का ऋण लिया। इस ऋण से उसने अपनी दुकान का विस्तार किया और वहीं अपनी दुकान खोल ली। दुकान खुलने से अब समरून की अधिकांश समस्या खत्म हो गयी। चुड़ी का जब कारोबार बढ़ने लगा तो उनके पति ने भी उनकी मदद करनी शुरू कर दी। अब पति और पत्नी दोनों मिलकर अपने कारोबार को सफलता पूर्वक संचालित कर रहे हैं। कल तक हजार–दो हजार की आमदनी करने वाली समरून अब महीने में 8 से 10 हजार तक की बचत कर रही हैं। आमदनी के इन पैसों से वे समूह के ऋण को भी वापस कर रही हैं, वहीं और अपने घर के अन्य आवश्यक कार्यों को भी निपटा रही हैं। जीविका की मदद से समरून की जिन्दगी में खुशियां लौट आई हैं।

नाम : समरून खातुन
पति : मो0 अब्बास
पता : रेशना, ग्वालपाड़ा
समूह : अल्लाह जीविका स्वयं सहायता समूह
संगठन : उजाला जीविका ग्राम संगठन

- समूह में जुड़ने के पहले समरून घुम–घुम कर चुड़ी बेचने का काम करती थी। इससे जहां उसकी निश्चित कोई आमदनी नहीं थी और ना ही कोई ठिकाना।
- समरून चाहती थी कि वो अपनी एक छोटी दुकान खोले मगर पैसे के अभाव के कारण वो ऐसा न हो सका।
- समूह से जुड़ने के बाद उसने अपने दुकान के लिए ऋण लिया।
- अब समरून का व्यवसाय एवं आमदनी भी बढ़ गयी है।

नाम : रंजू देवी,
पति : अजय कुमार,
पता : राजगंज,बिहारीगंज,मधेपुरा
समूह : जयगुरू जीविका स्वयं सहायता समूह
संगठन : गांधी जीविका ग्राम संगठन
संघ : मुस्कान संकुलस्तरीय संघ

- रंजू देवी आज अपने कुशल व्यवसायिक सोच के कारण अपना जेनरल स्टोर तो चला ही रही हैं, वहीं दूध के व्यवसाय से भी जुड़ गयी हैं।
- समूह से लिये गए ऋण के कारण ही उनकी आमदनी आज 3 से 4 हजार रूपया हो जाती है।
- दुकान एवं दुध की आय से उन्होंने अपना ऋण भी वापस कर रही हैं।

रंजु देवीः जीविका ने बदल दी जीवनधारा

रंजू देवी कहती हैं कि तब यह मेरे लिए बहुत मुश्किल था, मैं यह सोच भी नहीं सकती थी कि समूह से जुड़कर मुझमें अपने जीवन को निखारने का प्रेरणा और साहस आ पायेगा। 5 लीटर दूध देने वाली गाय की मालकिन एवं जेनरल स्टोर दुकान को चलाने वाली रंजू देवी 2011 में जीविका के जयगुरू स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। नियमित बैठक, बचत एवं अन्य मुद्दों पर सक्रिय रूप से भाग लेने वाली रंजू देवी की आंखों में आशा की एक नई किरण तब दिखाई दी, जब समूह में चर्चा की गयी कि हम समूह से ऋण लेकर अपना छोटा–मोटा कारोबार किया जा सकता है। सूक्ष्म नियोजन प्रक्रिया में हमारी माली हालत और हमारी भावी योजना पर बात हुई। रंजू देवी कहती हैं कि– मैंने भी अपनी स्थिति से सबों को अवगत कराया तथा यह इच्छा जाहिर की कि अगर मुझे कुछ रूपये उधार मिल जाते तो मैं अपना व्यवसाय शुरू करती। इस प्रक्रिया के कुछ ही दिन बाद मुझे समूह से 10 हजार रूपया का ऋण प्राप्त हुआ। इस पैसे से मैंने अपने घर पर ही एक जेनरल स्टोर की दुकान खोल ली।

ऋण के पैसे से खोली गयी इस दुकान से जब रंजू देवी को थोड़ा लाभ होने लगा तो उन्होंने लिये गए ऋण को वापस कर दिया, और दुकान में पूंजी भी बढ़ा ली। इसी बीच उन्होंने फिर से समूह से दुबारा 10 हजार का ऋण लिया और उन पैसों को भी दुकान में लगा दिया। मात्र आठवीं पास रंजू देवी बताती हैं कि–दुकान से प्रतिमाह करीब–करीब 3 से 4 हजार रूपये की बचत हो जाती है। जीविका से जुड़ने के बाद के फायदों के बारे में बताते हुए रंजू देवी कहती हैं कि–पहले तो सिर्फ घरेलू महिला के रूप में मेरी पहचान थी। लेकिन अब मेरी पहचान एक व्यवसायी के रूप में हो रही है। दुकान का सारा हिसाब मैं खुद करती हूं, ऐसे पति अजय कुमार मेरी इन कामों में मदद करते हैं। रंजू के चारों बच्चे विद्यालय में पढ़ाई कर रहे हैं। आगे की योजना के बारे में रंजू कहती हैं कि मैंने जीविका से जुड़ने एवं इस दुकान के खोलने के बाद अपने मकान की मरम्मत करवाई लेकिन अब पहले बड़ी लड़की की शादी कर लूं तो आगे सोचूंगी कि अब क्या करना है? यह कहते–कहते रंजू देवी की आंखों में एक चमक दिखाई देती है, जो उनकी सफलता की कहानी को कहती है।

सोनी देवीः सामाजिक विरोध के बाद बनी बदलाव की वाहक

'अरे समूह से जुड़कर क्या होगा?' ऐसा सवाल करने वाले अब सोनी देवी के बगल से गुजरने में कतराते हैं क्योंकि वे जान चुके हैं कि सोनी देवी ने सन् 2011 में समूह से जुड़कर आज वह मुकाम हासिल की है, जिस पर किसी भी परिवार को गर्व होता है। लोगों के लाख चिढ़ाने के बावजूद सोनी देवी, गुलाब जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। पहले नियमित आमदनी का कोई स्रोत नहीं था।

सोनी देवी बताती हैं कि– 4 बच्चों के लालन–पालन के लिए पति संजय कुमार को परदेश जाकर कमाना पड़ता था। तब भी परिवारिक स्थिति अच्छी नहीं थी। मैं घरेलू महिला थी, पर घर की माली हालत के कारण मुझे दूध का व्यवसाय करना पड़ा। दूध बेचकर ही समूह की बचत के लिए पैसे का इंतजाम करती थीं। इसी बीच सूक्ष्म नियोजन प्रक्रिया के बाद मुझे समूह से 25 हजार का ऋण दिया गया। इस पैसे से मैंने जेनरल स्टोर की दुकान खोल ली। मैंने घर के काम के साथ दुकान का काम भी करने लगी। इसी बीच पति को भी परदेश से वापस बुला लिया। पति भी मेरे काम में मदद करने लगे। दुकान की बिक्री से उत्साहित होकर जहां वह समूह से लिये गए ऋण को वापस भी कर रही हैं, वहीं उन्होंने अपने पति के लिए वीडियोग्राफी की दुकान खोल दी। अब सोनी देवी और उसके पति हमकदम बनके अपने व्यवसाय को नई ऊंचाई देने में लगे हुए है। सोनी देवी ने बताया कि प्रत्येक माह 5 से 6 हजार रूपये तक की आमदनी हो रही है। ऋण के 25 हजार में अबतक 15 हजार रूपये लौटा चुकी हैं।

आगे की योजना की चर्चा करते हुए सोनी देवी कहती हैं कि इसी दुकान में हमलोग फोटोस्टेट की मशीन एवं कम्प्यूटर सिस्टम भी लगाना चाहते हैं। सोनी देवी यह भी बताती हैं कि पहले बच्चे विद्यालय नहीं जाते थे, अब उन्हें विद्यालय भी भेजती हूं। पहले मेरी अपनी कोई पहचान नहीं थी, अब गांव–समाज में मेरी अपनी पहचान है। मेरी पहल पर समूह से जुड़े सारे सदस्यों को बैंकों में व्यक्तिगत खाता खुलवाया।

नाम : सोनी देवी,
पति : संजय कुमार,
पता : राजगंज,बिहारीगंज,मधेपुरा
समूह : गुलाब जीविका स्वयं सहायता समूह
संगठन : गांधी जीविका ग्राम संगठन
संघ : मुस्कान संकुलस्तरीय संघ

- सोनी देवी के पति घर चलाने के लिए परदेश में थे। लोगों के परेशान करने एवं चिढ़ाने के बाद भी सोनी देवी जीविका समूह से जुड़ी।
- समूह से जुड़ने के बाद नियमित बैठक में भाग लेना, नियमित बचत, आपसी लेन–देन आदि काफी सक्रियता पूर्वक किया।
- समूह से कर्ज लेकर सोनी ने जेनरल स्टोर खोला जिससे आज उनकी आमदनी काफी बढ़ गयी, वहीं उन्होंने अपने पति को भी परदेश से बुला उन्हें व्यवसाय में लगा दिया।

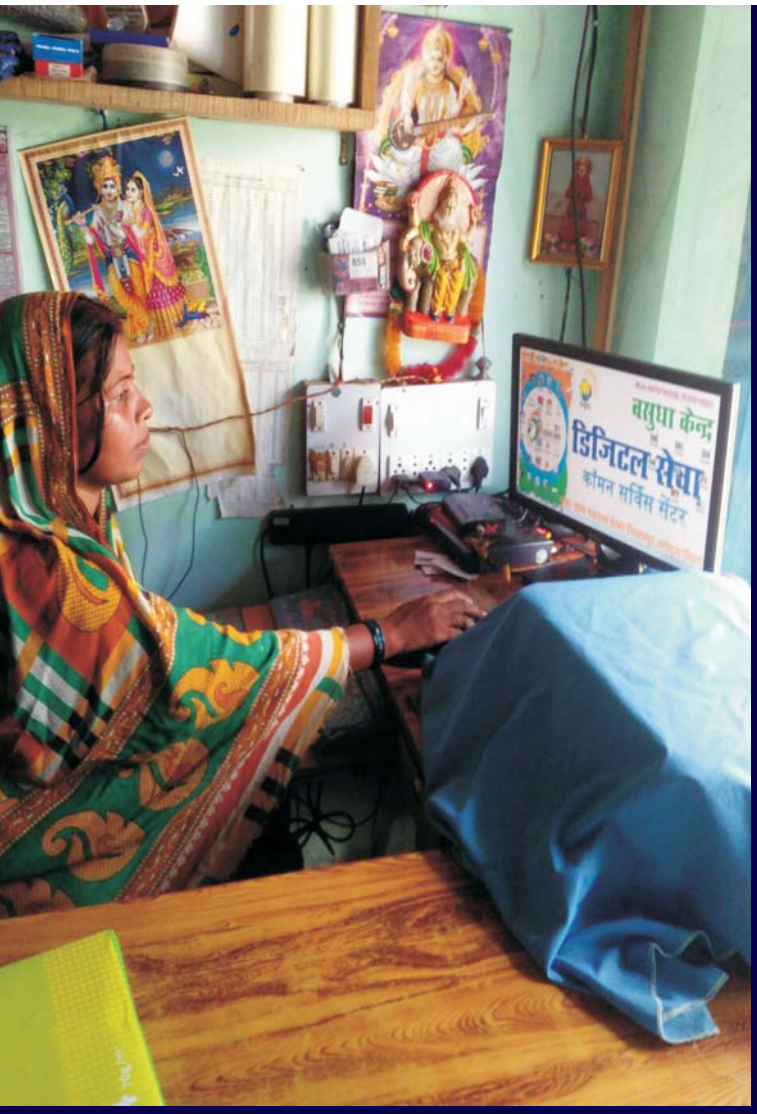

नाम : अंशु देवी
पति : अरविन्द कुमार राम
पता : ईटवा, जीवछपुर, गम्हरिया
समूह : रामजानकी जीविका स्वयं सहायता समूह
संगठन : अंबेडकर जीविका ग्राम संगठन

- अंशु देवी एक सामान्य महिला थी।
- आर्थिक कठिनाईयों के कारण उन्हें महाजन से ऋण लेना पड़ा।
- समूह से जुड़ने के बाद अंशु देवी ने समूह से फोटो स्टेट की दुकान के लिए ऋण लिया।
- इसी दौरान अंशु देवी ने कम्प्यूटर चलाना सीखा और दुकान पर कम्प्यूटर से जुड़ा कार्य करने लगी।

अंशु देवी : पूरे हुए सपने

कहते हैं कि जिनके पास जज्बा होता है वह पहाड़ के सीने को चीरकर अपना रास्ता बना लेते हैं। ऐसा ही कुछ कर दिखाया है गम्हरिया प्रखंड अन्तर्गत ईटवा जीवछपुर की अंशु देवी ने। कल तक अंशु देवी एक सामान्य महिला थी। जो अपने घर के कामों में व्यस्त रहती थीं। पति के पान का व्यवसाय उस गति से नहीं चल रहा था कि घर की आर्थिक कठिनाइयों का समाधान हो सके। कई बार तो घर चलाने एवं दुकान में पूंजी के लिए महाजन से ऋण लेने तक की नौबत आ गयी। इन कठिनाइयों एवं परेशानियों के बीच अंशु देवी जून 2014 में समूह से जुड़ गयीं। रामजानकी जीविका स्वयं सहायता समूह में उन्हें सचिव के रूप में चुना गया। समूह में जुड़ने के समय सामाजिक एवं पारिवारिक स्तर पर थोड़ी कठिनाईयों का भी उन्हें सामना करना पड़ा लेकिन बीतते समय के साथ सब कुछ ठीक हो गया। आरंभ में तो नियमित बचत करना काफी कठिन जान पड़ता था लेकिन अब यह बचत उनकी आदतों में शामिल हो चुका है।

समूह से जुड़ने के साथ अंशु की आंखों में कई सपने तैर रहे थे। उन्हें लग रहा था कि उनके सपनों को पूरा करने का वक्त आ गया है। इसी बीच समूह से उन्होंने 10 हजार के ऋण की मांग की जिसे समूह द्वारा उपलब्ध करवा दिया गया। इन पैसों से अंशु देवी ने अपने घर पर ही फोटो स्टेट एवं फोटो बनाने का काम शुरू किया। मात्र आठवीं पास अंशु देवी जानती थीं कि हाथ का हुनर ही किसी की भी तरक्की का जरिया होता है इसलिए उन्होंने खुद फोटो स्टेट करना, फोटो बनाना सीखा और आज वो आसानी से इन तकनीकी कार्यों को कर रही हैं। अब अंशु देवी कम्प्यूटर से भी फोटो बना लेती हैं। अंशु के आत्मविश्वास को देख अन्य महिलाएँ भी प्रेरित हो रही हैं। कल तक बड़ी मुश्किल से 3–4 हजार कमाने वाले परिवार को अब आराम से 7–8 हजार की आमदनी हो रही है।

इसी आमदनी से अंशु ने महाजन से लिये ऋण एवं समूह के ऋण को भी वापस कर रही हैं। अंशु देवी की इच्छा है कि वे अपने इस व्यवसाय को और आगे बढ़ायें और अपने तीनों बच्चों को अच्छी शिक्षा उपलब्ध करायें। अंशु देवी ने न सिर्फ सामाजिक परिवेश बदलने का साहस जुटाया, नामुमकिन को मुमकिन कर दिखाया।

अध्याय - 09

आजीविका का खुला नया द्वार

जीविकोपार्जन के प्रारम्भिक साधनों, मसलन खेती, पशुपालन, दुकानदारी आदि के अलावा और भी ऐसे कई छोटे–मोटे काम हैं, जिनके सहारे महिलाएँ अपने परिवार की आमदनी में अच्छा अंशदान कर रही हैं। इस तरह के कामों में कपड़ों की सिलाई, बांस की टोकरियों की बुनाई से लेकर कर्ज लेकर ऑटो खरीदने, गाँव–गाँव घूमकर चूड़ियां–साड़ियां बेचने और विभिन्न तरह की आजीविका गतिविधियाँ शामिल हैं। गाँव की इन महिलाओं ने साबित किया है कि वे लीक से हटकर अलग तरह के कामों में हाथ आजमा सकती हैं और इससे वे अपना जीवन स्तर सुधार सकती हैं। अपने कारोबार को सफल बनाकर उन्होंने यह भी साबित किया है कि उनमें उद्यम करने की साहस है और सूझबूझ भी। बस उन्हें थोड़ी वित्तीय मदद और प्रोत्साहन की दरकार है।

- समूह की 58 दीदियों ने मिलकर कृषि आधारित उत्पादक समूह का गठन कर सत्तु एवं बेसन बनाना प्रारंभ किया।
- जीविका सत्तु ब्रांड नाम के साथ बाजार में सत्तु की बिक्री की जा रही है।
- बाजार से समूह को अच्छी गुणवत्ता के कारण काफी प्रशंसा प्राप्त हो रही है।
- बिक्री से उत्पादक समूह को काफी बचत भी हो रही है।
- उत्पादक समूह मसाला निर्माण की भी योजना बना रही है।

महिला सशक्तीकरण व आत्मनिर्भरता की मिशाल मधेपुरा सदर प्रखंड की शक्ति उत्पादक समूह की सदस्य हैं। कभी चुल्हा–चौकी तक सिमटी रहनेवाली महिलाएं अब अपने घरों की तस्वीर बदलने लगी हैं। ये महिलाएं आज खुद अपना प्रोडक्ट बनाती हैं और उसकी ब्रांडिंग भी करती हैं। यही कारण है कि आज ये कुशल व्यवसायी की तरह अपने लाभ और हानि को समझ पा रही हैं। चकला, सुखासन में 22 सितम्बर 2014 को एक आमसभा आयोजित कर समूह की सदस्यों ने कृषि आधारित उत्पादक समूह शक्ति जीविका महिला कृषि उत्पादक समूह का गठन किया। इस उत्पादक समूह से कुल 58 दीदी जुड़ी हुई हैं। उत्पादक समूह गठन के बाद सारी दीदियों ने फैसला किया कि वे सत्तू और बेसन निर्माण का कार्य करेंगी। इस व्यवसाय को आंरभ करने के पीछे दीदियों की यह सोच थी कि बेसन और सत्तु सभी लोगों के उपयोग में आता है और इसके निर्माण की विधि भी है। इसके लिए बहुत ज्यादा प्रशिक्षण या अन्य सामानों की जरूरत नहीं होती है।

जीविका द्वारा सहयोग राशि की उपलब्धता के बाद दीदियों ने इस कार्य की शुरूआत की। सभी दीदियों ने प्रत्येक काम के लिए अलग–अलग दीदियों को चिह्नित किया। चिह्नित दीदियों को प्रतिदिन की दर से मजदूरी का भी निर्धारण कर दिया गया। सत्तू निर्माण के लिए चिन्हित चार दीदियों ने पहली बार में 1 क्विंटल चना से सत्तु बनाने की प्रक्रिया आरंभ की, जिसमें उन्हें 76 किलोग्राम सत्तु की प्राप्ति हुई। जीविका सत्तु ब्रांड के नाम से इसे खुले बाजार में बेचा गया। सारा खर्च काटकर पीजी को करीब 5000 रूपया का मुनाफा आया। इसके बाद तो दीदियों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। अब तक दीदियों द्वारा 4 क्विंटल सत्तु का निर्माण कर उसे बाजार में बेचा जा चुका है। दीदियों का कहना है कि प्रति क्विंटल सत्तू में उन्हें करीब 6 हजार रूपये का मुनाफा हो रहा है। भविष्य की योजनाओं पर बात करते हुए पीजी की सदस्य कहती हैं कि अब हमलोग बेसन निर्माण का भी कार्य करेंगे। वहीं, कुछ दीदी ने इस पर भी अपनी सहमति जताईं कि अगर सत्तु की तरह बेसन वाला हमारा कार्य अच्छा हुआ तो हमलोग मसाला निर्माण भी करेंगी और उसको बाजार में बेंचेंगी।

रंजु देवी : और अब नहीं होता है पलायन

रंजू देवी जुलाई 2014 से देवी जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हुई हैं और उन्हें आपसी एकता, बचत और छोटे–छोटे लेन–देन के फायदे बखूबी ज्ञात हो गये हैं। कल तक अपने परिवार के सुंदर और सुरक्षित भविष्य के लिए रंजू देवी अपने पति उदय कुमार साह के साथ पंजाब के लुधियाना में रहती थी। पलायन और परदेश का दंश मानों उनकी जिन्दगी का हिस्सा ही बन गया था। काफी विध्न बाधा के बाद अपने 8 लोगों के बड़े परिवार के लिए कुछ पैसे बचा पाती थीं। आखिर यह सब कितने दिन चलता? एक दिन उसने फैसला किया कि वापस गांव जाकर वहीं कुछ करेंगे। रंजू तो वापस अपने गांव आ गयी पर पति ने परदेश नहीं छोड़ा। पूंजी का अभाव किसी भी व्यवसाय को करने से रोकता था। इन्हीं विपरीत स्थितियों के बीच उन्हें किसी ने जीविका समूह से जुड़ने की सलाह दी। बेमन से रंजू समूह की सदस्य बनीं। अब उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती प्रति सप्ताह जमा होने वाले 10 रूपये की बचत की थी। आखिर यह 10 रूपया कहाँ से आये कहाँ से? काफी मुश्किलों के बीच रंजू ने बचत आरंभ की। इसी बीच सूक्ष्म नियोजन प्रक्रिया में रंजू ने अपनी समस्याओं से सभी दीदी को अवगत कराया। उसने बताया कि अगर उसे थोड़ी पूंजी मिल जाए तो वह अपना कोई व्यवसाय आरंभ करेगी और अपने पति को भी परदेश से यहां बुला लेगी। सभी दीदियों ने उसकी समस्या को देखकर उसे 35 हजार का ऋण दिया।

इसी बीच रंजू देवी ने अपने पति को गांव बुला लिया और कुछ और रूपया लगाकर एक मैजिक गाड़ी खरीद ली। इस मैजिक गाड़ी को उसके पति चलाते हैं। जबसे उन्होंने मैजिक गाड़ी चलाना आरंभ किया तब से 5 से 6 हजार रूपये की बचत हो रही है। इन बचत के पैसों से जहां रंजू देवी के परिवार की जिन्दगी आराम से कट रही है, वहीं उन्होंने ऋण के रूपये भी समूह को वापस करना शुरू कर दिया। यही नहीं रंजू देवी के सारे बच्चे अब स्कूल जा रहे हैं और अपने हाथों अपनी तकदीर लिख रहे हैं। रंजू देवी कहती हैं कि जीविका से जुड़ने के बाद मैं पूरी तरह बदल गयी हूं। मुझे अब समस्या का सामना करना आ गया है और मुझे यह भी पता चल गया है कि आपसी एकता और छोटी–छोटी बचत जिन्दगी में कितनी आवश्यक है।

नाम	:	रंजू देवी
पति	:	उदय कुमार साह
पता	:	गहुमनी, सिंहेश्वर, मधेपुरा
समूह	:	देवी जीविका स्वयं सहायता समूह
संगठन	:	नीति जीविका महिला ग्राम संगठन

- रोजगार के अभाव में इस क्षेत्र के लोगों की पलायन नियति है।
- परदेश में काम के बाद भी आर्थिक समस्या के कारण रंजू देवी गांव वापस आ गयी।
- गांव लौटने के बाद उसने कुछ काम धंधा करना चाहा, लेकिन सफल नहीं हुई।
- इसी बीच वे जीविका समूह से जुड़ी और ऋण लेकर एक पुरानी मैजिक गाड़ी खरीदी, जिसे उनके पति चला रहे हैं।
- अब रंजू देवी के पास रोजगार भी है और उनकी आर्थिक कठिनाइयों का समाधान भी।

नाम : कुंदन देवी
पति : सुशील मेहता
पता : राजगंज,बिहारीगंज,मधेपुरा
समूह : खुशबू जीविका स्वयं सहायता समूह
संगठन : नारी शक्ति जीविका ग्राम संगठन
संघ : मुस्कान संकुलस्तरीय संघ

- परंपरा से हटकर कुंदन देवी ने पुरूषों के वर्चस्व वाले क्षेत्र में अपना व्यवसाय आरंभ किया।
- समूह से ऋण लेकर उसने बर्फ मील खोला।
- महीने में कुंदन देवी को 3 से 4 हजार रूपये की आमदनी हो रही है।
- कुंदन देवी अपनी आय बढ़ाने के लिए आटा पीसने का मशीन भी लगाना चाहती हैं।

खुशबू देवीः हौसले से मिली उड़ान

अगर हौसला हो तो कुछ भी असंभव नहीं है। यह बात सटीक ढ़ंग से लागू होती है राजगंज, बिहारीगंज की कुंदन देवी पर। परंपरा से हटकर कुंदन देवी ने पुरूषों के वर्चस्व वाले काम, बर्फ जमाने की छोटी फैक्ट्री लगाने का मन बनाया। खुशबू जीविका स्वयं सहायता समूह से मिले हिम्मत एवं आर्थिक मदद से आज कुंदन देवी प्रतिमाह 3 से 4 हजार रूपये की आमदनी पा रही है।

खुशबू देवी बताती हैं कि– वर्ष 2011 में मुझे जीविका के बारे जानकारी मिली। उस समय मैं खेतों में काम किया करती थी। पति भी छोटे–मोटे रोजगार से जुड़े थे। 3 बच्चों एवं घर के अन्य सदस्यों का खर्च काफी कठिनाई से पूरा हो पाता था। जब मैं जीविका समूह से जुड़ी तो मुझे छोटी बचतों के फायदों के बारे में बताया गया। मैंने भी खेती–बाड़ी से मिले पैसे से छोटी–छोटी बचत करना आरंभ कर दिया। इसी दौरान समूह में हुए सूक्ष्म नियोजन प्रक्रिया में सारी दीदियों ने अपने बारे में पूरी जानकारी दी। मैंने भी अपनी सारी जानकारी देते हुए किसी व्यवसाय के लिए ऋण की मांग की। कुछ दिनों बाद मुझे 20 हजार रूपये का ऋण समूह द्वारा दिया गया। मैंने इस पैसे से बर्फ मिल खोलने का मन बनाया। खुशबू बताती हैं कि यह फैसला इसलिए भी था कि उनके पति को इस काम का अनुभव पूर्व से था। घर से थोड़ा और पैसा लगाकर मैंने छोटी बर्फ फैक्ट्री अपने गांव में ही लगा ली। मात्र मैट्रिक पास खुशबू देवी बर्फ मिल का सारा काम पति की मदद से सफलता पूर्वक संचालित कर रही हैं। खुशबू बताती हैं कि इस व्यवसाय से उन्हें प्रतिमाह 3 से 4 हजार रूपये की कमाई हो जाती है, लेकिन सीजन के बाद यानी ठण्डक के मौसम में यह व्यवसाय बंद करना पड़ता है। इस दरम्यान थोड़ी आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता है। खुशबू कहती हैं कि अगर जीविका से थोड़ी और मदद मिल जाए तो आटा पीसने वाला मशीन लगा लूँगी ताकि साल के 12 महीनों के लिए काम की कमी नहीं हो और बच्चों के पढ़ाई–लिखाई पर इसका कोई बुरा प्रभाव ना पड़े। खुशबू के तीनों बच्चे पढ़ाई कर रहे हैं और खुशबू चाहती हैं कि उनके बच्चे आगे चलकर अपना नाम रौशन करें।

लहरी देवीः और टूट गई वर्जनाएँ

बड़े–बड़े शहरों में होटलों और रेस्टोरेंट में महिलाओं का काम करना एक सामान्य सी बात है लेकिन ग्वालपाड़ा जैसे पिछड़े स्थान में किसी महिला द्वारा इस तरह का व्यवसाय किसी को भी अचंभित कर देता है। सही कहा गया है कि जब वर्जनाएं टूटती हैं तो इतिहास बनता है और इसी प्रकार का इतिहास सरौनीकला की लहरी देवी बना रही हैं। लहरी देवी जीविका समूह की मदद से ग्वालपाड़ा बाजार में अपने चाउमीन की दुकान का संचालन सफलतापूर्वक कर रही है। ममता देवी के पति नित्यानंद मंडल किसान हैं और बड़ी मुश्किल से किसानी कर अपने परिवारिक दायित्वों का निर्वहण कर पा रहे हैं। मात्र हस्ताक्षर साक्षर लहरी देवी ने पूर्व में कई तरह के कार्यों द्वारा परिवार को आर्थिक मदद पहुंचाने की कोशिश की लेकिन उसमें वे सफल नहीं हुईं। वर्ष 2011 में राम जीविका स्वयं सहायता समूह से लहरी देवी जुड़ी। समूह से जुड़ने के बाद उनमें फिर से कुछ नया काम कर अपने परिवार को आर्थिक कठिनाई से मुक्त करने का जज्बा उत्पन्न हुआ। समूह की बैठकों में निरंतर भाग लेने एवं छोटी–छोटी बचतों के फायदों से वे अवगत हुईं।

समूह से उसने अपने व्यवसाय से 15 हजार के ऋण की मांग की। समूह द्वारा उन्हें 15 हजार का ऋण उपलब्ध करवा दिया गया, जिससे उन्होंने चाउमीन की दुकान खोली। आरंभ में उन्हें दुकान चलाने में थोड़ी कठिनाई अवश्य हुई लेकिन धीरे–धीरे उनके व्यवसाय ने गति पकड़ी और उन्हें लाभ होना प्रारंभ हो गया। बचत के पैसों से उन्होंने समूह से लिये ऋण को भी वापस कर दिया और अपने व्यवसाय को और आगे बढ़ाया। लहरी देवी को प्रत्येक माह इस व्यवसाय से 4 से 5 हजार की बचत हो जाती है जिससे वे अपने बच्चों की पढ़ाई–लिखाई करवा रही हैं, वहीं परिवार की अन्य आर्थिक कठिनाइयों का भी समाधान कर रही हैं।

लहरी देवी आज अपनी सफलता की उड़ान से औरों को भी प्रभावित कर रही हैं, और कहती हैं कि अगर महिलाओं को मौका मिले तो वह कुछ भी कर सकती हैं।

नाम : लहरी देवी
पति : नित्यानंद मंडल
पता : वार्ड–सरौनीकला, ग्वालपाड़ा
समूह : राम जीविका स्वयं सहायता समूह
संगठन : सेवा जीविका ग्राम संगठन

- लहरी देवी जीविका की मदद से अपना चाउमीन की दुकान चला रही है।
- पूर्व में भी आर्थिक कठिनाई को दूर करने के लिए लहरी ने कई काम किये, लेकिन उसमें उन्हें सफलता नहीं मिली।
- समूह से जुड़ने के बाद उसने अपने व्यवसाय के लिए ऋण लिया।
- ऋण के पैसे से उसने चाउमीन की दुकान खोली, जो काफी अच्छी चल रही है।
- इस दुकान से लहरी देवी को महीने में 4 से 5 हजार की आमदनी हो रही है।

नाम	:	मंजू देवी
पति	:	विनोद रजक,
पता	:	वार्ड–ग्वालपाड़ा
समूह	:	गुरू महाराज जीविका स्वयं सहायता समूह
संगठन	:	मेही जीविका ग्राम संगठन

मंजु देवी : हुनर की उड़ान

जिन्दगी में छोटी सी बात भी कब अहम साबित हो सकती है, इसे मंजू से बेहतर कोई नहीं जान सकता है। शादी के पहले सिलाई का लिया हुआ प्रशिक्षण आज उनके जीवन का अहम हिस्सा बन चुका है। हंसी–हंसी में हासिल यह हुनर आज उनके जीवनयापन का जरिया बन चुका है। गुरू महाराज जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी मंजू देवी जीविका से जुड़ने से पूर्व एक आम गृहणी थी। पति किसान थे और आर्थिक कठिनाइयों के बीच परिवार की गाड़ी किसी प्रकार चल रही थी। मंजू देवी के मन में कई बार कोई काम कर परिवार को आर्थिक मदद पहुंचाने का विचार आता था, पर सही रास्ता नहीं मिल पाने एवं आर्थिक समस्या आने के कारण वह चाह कर भी कुछ नहीं कर पाती थी।

जब वर्ष 2012 में मंजू देवी समूह से जुड़ी तो उन्हें कई नई सूचनाएं, महिला सशक्तीकरण, गरीबी, बचत के फायदे आदि क बारे में जानकारी मिली। इन जानकारियों के बाद मंजू देवी के मन में यह विचार आया कि अगर जीविका से उन्हें आर्थिक मदद मिले तो उनके पास सिलाई कटाई का जो अनुभव है, उसका इस्तेमाल कर आर्थिक लाभ कमा सकती हैं। आखिर समूह के सामने अपनी कठिनाइयों को रखा और ऋण की मांग की। समूह द्वारा उन्हें सिलाई मशीन खरीदने के लिए वर्ष 2013 में 7000 रूपया का कर्ज दिया गया। इन पैसों से मंजू देवी ने एक सिलाई मशीन खरीदी और घर पर ही सिलाई का काम प्रारंभ किया। धीरे–धीरे मंजू देवी के हाथों के हुनर ने उन्हें लोकप्रिय बना दिया। समूह की दीदियों को भी जब मंजू देवी के बारे में पता चला तो वे भी उन्हीं के पास अपने काम के लिए आने लगी। इसके बाद मंजू देवी की आमदनी में निरंतर ईजाफा होने लगा। मंजू अपने इस व्यवसाय का सारा काम खुद संभालती हैं। मंजू देवी अब महीने में 3 से 4 हजार रूपया महीना कमा रही हैं। समूह से लिये ऋण को भी उन्होंने वापस कर दिया है। मंजू देवी बचत के पैसों से घर में आर्थिक सहयोग प्रदान तो कर ही रही हैं, और वो अपने कारोबार को और विस्तार देना भी चाहती हैं। मंजू देवी के काम करने के तरीके और उनके लगन को देखकर यह असंभव भी नहीं लगता है। मंजू देवी जरूरतमंद महिलाओं को प्रशिक्षण देने का भी काम कर रही हैं। आज मंजू देवी अपने क्षेत्र में एक कुशल व्यवसायी के रूप में लोकप्रिय हैं।

- मंजू देवी 2012 में समूह से जुड़ी।
- समूह से उसने सिलाई मशीन खरीदने के लिए ऋण लिया।
- सिलाई मशीन से उसने अपने टेलरिंग का कार्य आरंभ किया।
- समूह की दीदियां भी उन्हीं के पास ग्राहक के रूप में आने लगी। जिससे उनका व्यवसाय काफी फलने–फुलने लगा।
- मंजू देवी अब जरूरतमंदों को प्रशिक्षण भी देने का कार्य कर रही हैं।

बीबी हाजराः पायी गरीबी से मुक्ति

ग्वालपाड़ा बाजार में ताज टेलर्स की अपनी अलग पहचान है। इस टेलर्स का संचालन करती हैं बीबी हाजरा। बीबी हाजरा और ताज टेलर्स दोनों के एक दूसरे के पर्याय हैं। कल तक बीबी हाजरा का जीवन कठिनाईयों का हमकदम हुआ करता था। आर्थिक कठिनाइयों के कारण उनके परिवार का विकास रूक ही गया था। पति मो0 हाफिज काफी कठिनाईयों के बीच अपने परिवार को आर्थिक मदद पहुंचा पाते थे। इन्हीं कठिनाइयों के बीच बीबी हाजरा 2013 में बिस्मिला जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। समूह से जुड़ने के बाद उन्हें गरीबी से कैसे मुक्ति पा सकते हैं के तरीकों के बारे में जानकारी मिली। उन्हें समूह में आपसी एकता और छोटी–छोटी बचत के फायदे भी बताये गये। बीबी हाजरा द्वारा बड़ी मुश्किल से समूह की बचतों में अपना अंशदान दे पाती थी। समूह में जब वह महिला सशक्तिकरण की बातें सुनती थीं तो उन्हें भी लगा कि उन्हें भी अपने परिवार के आर्थिक मदद के लिए कुछ करना चाहिए। उन्होंने समूह से 2000 रूपया का ऋण लिया। इस ऋण से उन्होंने एक पुरानी सिलाई मशीन खरीद ली। इस मशीन से उन्होंने घर पर ही आस–पास के लोगों का काम करना प्रारंभ कर दिया। उनके काम के तरीके एवं समय की प्रतिबद्धता ने उन्हें धीरे–धीरे लोकप्रिय बना दिया। इसी बीच समूह में सूक्ष्म नियोजन की प्रक्रिया हुई, जिसमें उन्होंने अपने टेलर्स की दुकान के लिए 10 हजार रूपये की मांग की। जिसके बाद समूह द्वारा उन्हें 10 हजार की राशि प्रदान की गयी। ऋण के पैसों एवं उनके पास की बचत के कुछ पैसों को मिलाकर उन्होंने ग्वालपाड़ा बाजार में एक टेलर्स की दुकान खोल ली जिसे उन्होंने ताज टेलर्स का नाम दिया। शुरू में उन्हें दुकान खोलने के फैसले पर डर भी लग रहा था लेकिन ग्राहकों के सहयोग एवं पारिवारिक सहयोग के बाद उनका यह भी डर जाता रहा। धीरे–धीरे उन्होंने बचत के पैसों से दो और सिलाई मशीनें खरीदीं। साथ ही मदद के लिए एक कर्मचारी भी रखा। बीबी हाजरा के कुशल व्यावसायिक प्रबंधन का ही नतीजा है कि आज प्रतिदिन उन्हें 400 से 500 रूपये की आमदनी हो रही है। कल तक महीने में 2 से 3 हजार की कमाई करने वाली बीबी हाजरा आज महीने में 14 से 15 हजार रूपये की आमदनी ताज टेलर्स से कर रही हैं। बीबी हाजरा की आर्थिक समस्या के निदान के बाद उन्होंने अपने बच्चों को विद्यालय भी भेजना प्रारंभ कर दिया है। उनकी आंखों में अब कई नये सपने तैरने लगे हैं। बीबी हाजरा की कार्यशैली एवं कुशल प्रबंधन से वह दिन दूर नहीं दिखता जब उनके सारे सपने पूरे होंगे।

नाम	:	बीबी हाजरा
पति	:	मो0 हफीज
पता	:	वार्ड–13, फुलवड़िया, शाहपुर, ग्वालपाड़ा
समूह	:	बिस्मिला जीविका स्वयं सहायता समूह
संगठन	:	सपना जीविका ग्राम संगठन

- जीविका से जुड़ने के पहले बीबी शाहिदा की आर्थिक स्थिति काफी बुरी थी।
- 2013 में बीबी शाहिदा जीविका समूह से जुड़ी और नियमित बचत और बैठकों में भाग लेना शुरू किया।
- समूह से ऋण लेकर उन्होंने सिलाई मशीन खरीद, कपड़ा सिलने का काम आरंभ किया।
- दुकान की बचत से और दुबारा ऋण लेकर बीबी शाहिदा ने ग्वालपाड़ा बाजार में टेलर्स की दुकान खोल ली।
- अब शाहिदा को महीने में 12 से 15 हजार रूपया की आमदनी हो रही है।

अध्याय - 10

मलबरी की खेती : सुनहरे भविष्य की तस्वीर

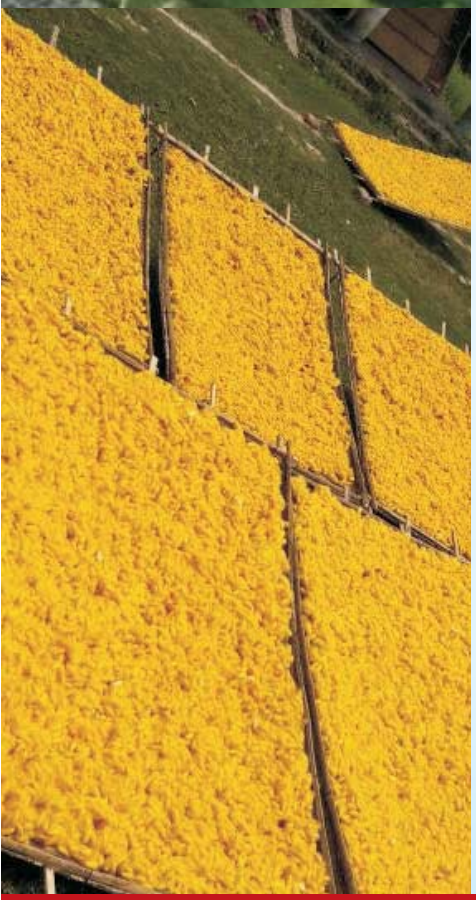

कोसी मलबरी विकास परियोजना मुख्य रूप से ग्रामीण विकास (जीविका एवं मनरेगा), उद्योग विभाग एवं कृषि विभाग के समन्वित प्रयास से कार्यान्वित की जा रही है। इस परियोजना का उद्देश्य राज्य में मलबरी रेशम का उत्पादन बढ़ाने के साथ–साथ इस कार्य से जुड़े हजारों परिवारों की आय में वृद्धि करना है। राज्य के कुल 2900 एकड़ पर शहतूत की खेती के माध्यम से कुल 171.91 मिट्रिक टन रेशम धागे के उत्पादन का लक्ष्य है ताकि राज्य में करीब 6,000 परिवारों एवं 17,000 व्यक्तियों को वर्ष भर रोजगार/आय के अवसर प्रदान हों एवं परियोजना में 80 प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित हो सके। यह लक्ष्य मनरेगा कार्यक्रम के अन्तर्गत वृक्षारोपण के लक्ष्यों के साथ मिलकर प्राप्त किया जाना है। इसके लिए किसानों को उत्प्रेरित करने की जवाबदेही ''जीविका'' की है।

मलबरी की खेती में किसानों को सरकारी सहायता

मलबरी की खेती में किसानों को सरकार की ओर से आर्थिक मदद पहुंचाई जाती है। एक इकाई यानी आधा एकड़ खेत में मलबरी के 2700 पौधे लगाए जाते हैं। प्रति पौधे 1.50 रुपये की दर से पैसे का भुगतान मनरेगा मद से किया जाता है। इसके अलावा मनरेगा से ही किसानों को 177 रुपये प्रतिदिन के हिसाब से 100 दिनों के मानव श्रम की मजदूरी एवं बोरिंग के लिए 5,000 रुपये की सहायता राशि उद्योग विभाग की तरफ से उपलब्ध कराई जाती है। कुल मिलाकर आधा

क्र.	विवरणी	सामग्री/मद	दर	धनराशि रु.
1.	मलबरी के 2700 पौधे की कीमत	सैपलिंग/कटिंग्स की आपूर्ति	1.50 रुपये प्रति पौधे	4,050
2.	पौधे के लिए जमीन की खुदाई	34 मानव दिवस का श्रम	177 रुपये प्रति दिन	6,018
3.	मलवरी पौधे की देखरेख	100 मानव दिवस का श्रम	177 रुपये प्रति दिन	17,700
4.	जैविक खाद, फफूंद नाशक	—	——	2,500
5.	बोरिंग/सिंचाई के लिए			5,000
6.	**कुल राशि**			**35,268**

एकड़ खेत में मलबरी की खेती करने वाले किसानों को 35,268 रुपये दिए जाते हैं। इसका विवरण इस तालिका में दिया जा रहा है।

इसके अतिरिक्त किसानों को दूसरे एवं तीसरे वर्ष भी मलबरी पौधों की देखभाल के लिए मनरेगा निधि से प्रत्येक साल 177 रुपये की दर से 100 मानव दिवस के श्रम के लिए 17,700 रुपये दिए जाते हैं। इस तरह उक्त परियोजना के तहत कोसी क्षेत्र में मलबरी की खेती करने वाले किसानों को आर्थिक सहायता प्राप्त हो रही है।

मधेपुरा में मलबरी की खेती

कोसी क्षेत्र की मिट्टी एवं जलवायु शहतूत की खेती कर रेशम कोसा उत्पादन के लिए अनुकूल है। इसकी खेती के लिए मटियार दोमट एवं बलुई दोमट मिट्टी उपयुक्त होती है। मिट्टी अम्लीय क्षारीय एवं जल जमाव वाली नहीं होनी चाहिए। बाढ़ प्रभावित क्षेत्र होने की वजह से जिन खेतों में मुख्य फसलें नहीं उगाई जा सकती हैं वहां शहतूत की खेती की जा सकती है। यही कारण है कि पहले चरण में यह परियोजना कोसी क्षेत्र के सुपौल, सहरसा और मधेपुरा जिले में शुरू की गई है। वैसे करीब दशक भर पहले भी इन क्षेत्रों में परंपरागत तरीके से शहतूत की खेती की जाती थी। लेकिन हाल के वर्षों में यह पूरी तरह उपेक्षित हो गई। सरकार के प्रयास से अब यहाँ नए सिरे से वैज्ञानिक पद्धति के साथ मलबरी की खेती शुरू की जा रही है। वैज्ञानिक पद्धति से मलवरी की खेती में लागत कम और लाभ अधिक होता है। साथ ही उत्कृष्ट गुणवत्ता वाली पत्तियों का उत्पादन किया जाता है, जिससे रेशम की गुणवत्ता एवं मात्रा बेहतर होती है। यही कारण है कि इस क्षेत्र के किसान शहतूत की खेती करने में दिलचस्पी ले रहे हैं।

मधेपुरा में मुख्यमंत्री कोसी मलवरी परियोजना का सफल क्रियान्वयन हो रहा है। वित्त वर्ष 2014–15 में इस परियोजना के तहत मलवरी की खेती शुरू कर दी गई थी और इसी साल मधेपुरा में 309 महिला किसानों ने अपने खेतों में मलवरी के पौधे लगाए। वहीं वित्त वर्ष 2016–17 में 121 मलवरी की खेती करने वाले किसानों की संख्या बढी। 2017–2018 में 478 किसानों द्वारा मलवरी की खेती का मन बनाया है।

शुरू हो गई कोकून की बिक्री

किसानों को मलवरी एवं केंद्रीय रेशम बोर्ड से पर्याप्त सहायता प्राप्त हो रही है। इनमें ज्यादातर किसानों ने अब कीटपालन करना भी शुरू कर दिया है। वे अब रोजाना मलबरी पौधों से पत्तियों की कटाई कर कीड़ों को खिलाते हैं। यह प्रक्रिया पिछले 7–8 महीनों से जारी है। इस बीच उन्होंने मलबरी के कीटों से ककून उत्पादित कर बेचना भी शुरू कर दिया है इसी साल जनवरी महीने में किसानों ने 54 किलोग्राम ककून का उत्पादन कर इसे 200 रुपये प्रति किलोग्राम की दर पर बेचा है। जबकि दूसरी खेप में इन किसानों ने कुल 200 किलो कोकून 90 से 300 रुपये प्रति किलोग्राम की दर पर बिक्री की है। यह इस बात को अभिप्रमाणित करता है कि मलबरी की खेती कर कीटपालन गतिविधि से जुड़ने वाले किसान अतिरिक्त आमदनी अर्जित करने में सक्षम हैं।

क्र.	प्रखंड	किसान
1.	कुमारखंड	311
2.	मुरलीगंज	61
3.	मधेपुरा सदर	64
4.	सिंघेश्वर	20
5.	ग्वालपाड़ा	22
	कुल	478

नाम : चंदन देवी
पति : वीरेन्द्र यादव
पता : बैसाढ़ वीथा, पं0–वैसाढ़, कुमारखंड
समूह : सावित्री जीविका स्वयं सहायता समूह,
संगठन : गौतम जीविका ग्राम संगठन,
संघ : किरण संकुल स्तरीय संघ

- रेशम कीट पालन व्यवसाय से पहली बार जुड़ी।
- पति को काफी समझाने के बाद वे मलबरी की खेती के लिए तैयार हुए।
- काफी कठिनाईयों के बाद इस काम में सफलता मिली।
- जीविका सहित उद्योग विभाग एवं मनरेगा ने इस कार्य में काफी मदद पहुंचाई।

चंदन देवीः संघर्ष पथ की सारथी

जीविका की बैठक में जब उसे पहली बार मलबरी की खेती और रेशम के कीड़े पालने तथा उससे होने वाले फायदों के बारे में जानकारी मिली तो 'मां भगवती स्वयं सहायता समूह, जोरगामा की अध्यक्ष रेखा देवी ने मन ही मन इस नई पहल को सरजमीं पर उतारने का निश्चय कर लिया। घर आकर उन्होंने अपने पति को इसके लिए राजी किया। वर्ष 2014 जुलाई, अगस्त में उन्होंने खेतों में मलबरी का पौधा (सेपलिंग) लगा दिया। उन्हें इस काम में विभिन्न कार्यक्रमों और विभागों यथा–मनरेगा, उद्योग विभाग आदि से मदद मिली। पर पहली बार मलबरी की खेती और रेशम उत्पादन के बहुत अनुभव अच्छे नहीं रहे। जानकारी के अभाव एवं नई पहल का भय के कारण पहली बार कोकुन की क्वालिटी काफी खराब हो गयी। साथ ही, खरीददार की भी समस्या हुई, हमें काफी निराशा हुई। लेकिन हमने हिम्मत नहीं हारी। हमने फिर से इस साल कीट पालन कर कोकुन उत्पादन किया। इस बार की स्थिति पिछले बार से भिन्न है। इस बार जिस तरह से कोकुन उत्पादन की प्रक्रिया बेहतर तरीके से संचालित हो रही है, उससे उम्मीद है कि इस बार हमें लाभ होगा। वे बताती हैं कि इन कठिनाईयों के साथ हमें मनरेगा से जो सहयोग मिलना चाहिए, वह नहीं मिल पा रहा है। साथ ही कोकुन खरीददारों यानी बाजार की उपलब्धता की भी कमी है जिसे दूर करने की जरूरत है।

जिले में जीविका द्वारा 840 किसानों के साथ मलबरी की खेती का कार्य किया जा रहा है। वर्तमान में रेशम उद्योग में स्त्रियों की भागीदारी काफी महत्वपूर्ण है। आज कई परिवारों में रेशम एक कुटीर उद्योग के रूप में अपना स्थान बना चुका है जिसके कारण समूह की दीदियों को अब कामों की कमी नहीं है। अब मलबरी का कार्य महिलाओं द्वारा किया जाने वाला तथा महिलाओं के लिए ही है। अब रेशम उद्योग जीविकोपार्जन के स्तर से वाणिज्यिक स्तर पर पहुंच रहा है।

अध्याय - 11

मुर्गी पालन : बदली जीविका दीदियों की किस्मत

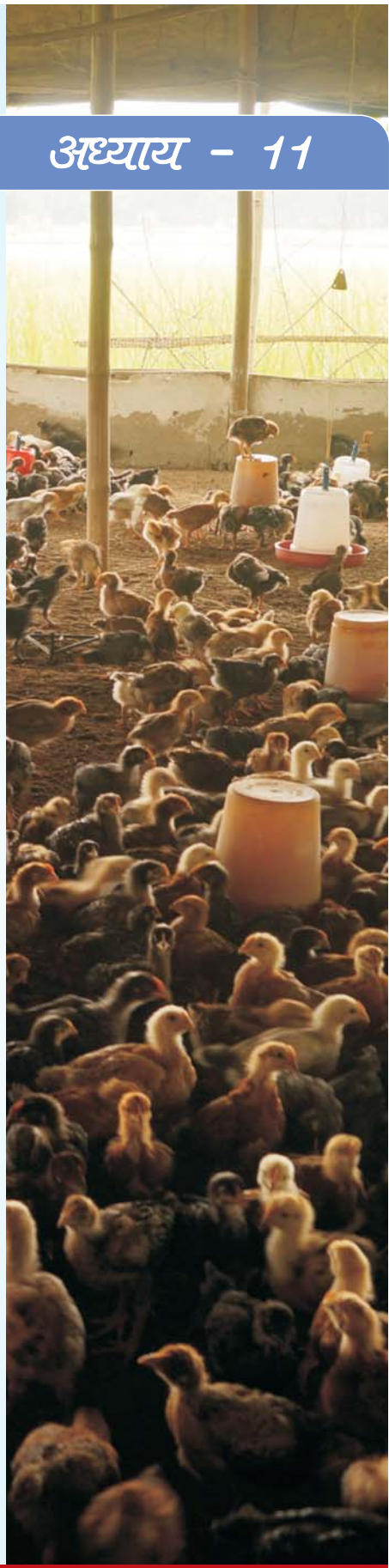

भारत में मुर्गी पालन प्राचीन काल से होता रहा है। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले परिवार संसाधनों की कमी एवं तकनीकी जानकारी के अभाव में व्यावसायिक स्तर पर मुर्गी पालन नहीं कर पाते हैं। कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण जोखिम उठाने में प्रायः सक्षम नहीं होते हैं। अतः इस परिस्थिति में ग्रामीण परिवारों के लिए बैकयार्ड कुक्कुट पालन जीविकोपार्जन का एक लाभदायी साधन है, जिसे घर के पिछवाड़े एवं कम जगह में आसानी से किया जा सकता है। इस व्यवसाय को घर की महिलाएँ एवं बुजुर्ग भी आसानी से कर सकते हैं।

जीविका गाँव की गरीब महिलाओं को बैकयार्ड मुर्गी पालन जैसी गतिविधियों से जोड़ने के लिए सार्थक प्रयास कर रही है ताकि उनके घर की आमदनी बढ़े और वे गरीबी के दुश्चक्र से बाहर निकल सकें। इस दिशा में सतत प्रयास करते हुए जीविका गरीब महिलाओं में बैकयार्ड मुर्गी पालन की आदत विकसित करने के लिए कई प्रकार के प्रोत्साहन दे रही है। उन्हें रियायती दर पर चूजे उपलब्ध कराए जाने के अलावा चूजों की देखभाल के लिए तकनीकी मदद, आर्थिक सहायता, टीकाकरण, बीमारियों की रोकथाम के लिए उचित उपाय से लेकर अन्य सहायता पर उपलब्ध कराई जा रही है।

बैकयार्ड मुर्गी : गुण एवं विशेषता

बैकयार्ड कुक्कुट पालन के लिए सबसे उपयुक्त लो–इनपुट प्रजाति वाली मुर्गी होती है, जो कम लागत में अधिक मांस एवं अंडे का उत्पादन करती है। यह प्रजाति न तो पूरी तरह देशी होती है और न ही पूरी तरह ब्वायर? दूसरे शब्दों में कहें तो यह दोनों प्रजाति का मिश्रित रूप है। बैकयार्ड मुर्गियां देशी मुर्गियों की तरह गाँव के परिवेश एवं परिस्थितियों में आसानी से ढल जाती है और इसमें रोग निरोधक क्षमता होती है। ये घरों के अपशिष्ट पदार्थों को खाने में सक्षम होती हैं। दूसरी तरफ, देशी किस्म की मुर्गियों की तुलना में इस प्रजाति की मुर्गियां ज्यादा तेजी से बढ़ती हैं और अधिक संख्या में अंडे देती हैं। इससे बैकयार्ड मुर्गी पालन करने वाले परिवारों को ज्यादा लाभ मिलता है। बैकयार्ड किस्म की मुर्गियों का विकास दोनों किस्म की मुर्गियों के सम्मिलित रूप से किया गया है।

घरेलू स्तर पर मुर्गी पालन से ग्रामीण परिवारों की मासिक आय में नियमित वृद्धि होती है। यही कारण है कि जीविका के स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी गरीब महिलाओं को घरेलू स्तर पर मुर्गीपालन

के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। सुपौल जिले में सतपुरा देसी नाम की प्रजाति को बढ़ावा दिया गया है। यह प्रजाति कम लागत में अधिक उत्पादन देने में सक्षम है। इसे कलर्ड बर्ड भी कहा जाता है क्योंकि इस प्रजाति की मुर्गियाँ विभिन्न रंगों की होती है। यह तीन महीनों में 2.5 किलो वजन प्राप्त करती है एवं यह सालाना 150 से ज्यादा अंडों का उत्पादन करती है।

बैकयार्ड मुर्गी पालन : एक परिदृश्य

जीविका परियोजना के अंतर्गत मुर्गी पालन करने के लिए सबसे पहले मदर यूनिट की स्थापना की जाती है। प्रत्येक मदर यूनिट से लगभग 300 परिवार जुड़े होते हैं। इन परिवारों को 3 से लेकर 6 चक्रों में 45–150 चूजे (28 दिन की उम्र बाल) दिए जाते हैं। प्रति चक्र चूजों की संख्या और एक सदस्य को कितने चक्रों में चूजे दिए जाएं, यह सदस्य की क्षमता और उसकी तकनीकी जानकारी पर निर्भर करेगा। एक मदर यूनिट में औसतन 2500 से 3000 चूजों के पालने की व्यवस्था होनी चाहिए।

जीविका ने पहले ही प्रायोगिक तौर पर कई प्रखंडों में बैकयार्ड मुर्गी पालन आधारित मदर यूनिट की शुरुआत की है, इससे तकरीबन 10,000 सदस्य लाभान्वित हो रहे हैं। अब तक के अनुभवों से यह ज्ञात होता है कि आमतौर पर परिवार शुरुआत में प्रति चक्र कम संख्या में चूजों के साथ मुर्गी पालन का काम शुरू करते हैं। अपने अनुभवों और इस काम में लाभ दिखने के बाद परिवारों का विश्वास बढ़ता है और फिर धीरे–धीरे वे अधिक संख्या में चूजों की मांग करते हैं।

मुर्गी पालन गतिविधि से जुड़ने के लिए जीविका के स्वयं सहायता समूह की सदस्य सबसे पहले ग्राम संगठन स्तर पर उत्पादक समूह का हिस्सा बनती है। इसके पश्चात उत्पादक समूह प्रत्येक सदस्य से 50 रुपये जमा लेकर व्यावसायिक गतिविधि के लिए पंजीकृत करता है। सदस्यों द्वारा जमा की गयी अंश पूंजी संकुल स्तरीय संघ या नोडल ग्राम संगठन में व्यावसायिक समूह के पास रखी जाती है। इसके अतिरिक्त सदस्यों से प्रति चूजा 10 रुपये की दर से प्राप्त होने वाला अंशदान की राशि संकुल स्तरीय संघ या नोडल ग्राम संगठन में जमा कराई जाती है। संकुल स्तरीय संघ या नोडल ग्राम संगठन के द्वारा यह राशि आंशिक रूप से मुर्गी पालन करने वाले परिवार के स्तर पर प्रशिक्षण, निगरानी एवं टीकाकरण के खर्च में उपयोग की जाती है। कुल 150 चूजों पर होने वाले संभावित खर्च की राशि मुर्गी पालन करने वाले सदस्यों को प्रदान की जाती है। सदस्यों के कुल अंशदान का विवरण निम्नानुसार है हालांकि समय–समय पर आवश्यकतानुसार इन सभी खर्चों में किया जा सकता है।

- **150 एक दिवसीय चूजे की लागत :**
  150 X 19 = 2850/- रु.
- **पालन–पोषण पर खर्च :**
  150 X 31 = 4650/- रु. (भोजन, दवाई, उद्यम आदि खर्च शामिल)
- **पी.आर.पी. सेवा शुल्क :**
  150 X 4 = 600/- रुपये
- **सदस्यों के घर तक पहुँचने के पूर्व 28 दिन के 150 चूजों की कुल लागत :**
  2850+4650+600 = 8100/- रु.
- **पिंजरे की लागत :** 2000 रु. (इसमें से 1000 रु. योजना के अंतर्गत उन्हें अनुदान के रूप में दिया जाता है।)

सदस्यों का कुल अंशदान :

- 150 चूजों के लिए सदस्यों का योगदान : 10 X 150= 1500/- रु.
- पी.आर.पी. सेवा शुल्क : 150 X 4 = 600/- रु.
- पिंजरे के लिए सदस्यों का योगदान : 1000/- रुपये
- पंजीकरण शुल्क की राशि : 50/- रु.
- इस तरह सदस्यों का कुल अंशदान : 1500+600+1000+50 =3150/- रु.

शेष राशि का भुगतान सदस्यों को अनुदान के रूप में पहले चक्र में किया जाता है।

रेखा देवीः मुर्गी पालन व्यवसाय ने दिया नया मुकाम

वर्ष 2008 की कोसी की त्रासदी ने मधेपुरा के कई प्रखंडों का सब कुछ बर्बाद कर दिया। बाढ़ से तबाह हुए प्रखंडों में एक है–मुरलीगंज प्रखंड। इसी प्रखंड के रजनी पंचायत के एक गांव कवैया में मार्च 2015 को जीविका की मदद से एकता मदर यूनिट की स्थापना की गयी। यह मदर यूनिट आज सफलतापूर्वक संचालित है और कई परिवारों के रोजगार का साधन बना हुआ है। मदर यूनिट संचालिका रेखा देवी बताती हैं कि, मदर यूनिट की स्थापना में करीब 60 हजार रूपये का खर्च आया। मदर यूनिट में अभी तक मुर्गी पालन के दो चक्र पूरा हो चुके हैं और तीसरा चक्र चल रहा है। मदर यूनिट संचालक को मदर यूनिट से प्रति चक्र औसतन 10 हजार रूपये से ज्यादा की आमदनी हो रही है। मदर यूनिट के संचालक को जहां जीविका द्वारा प्रत्येक स्तर पर प्रशिक्षण प्रदान दिया गया है, वहीं आर्थिक रूप से सहयोग भी प्रदान किया गया है। साथ ही आजीविका विशेषज्ञ द्वारा जीविका के सहयोग से मदर यूनिट में दवाएँ और टीकाकरण जैसी सुविधाएं उपलब्ध करवाई गयीं।

रेखा देवी बताती हैं कि इन पैसों से जहां पिछला कर्ज तोड़ दिया, वहीं कुछ पैसे अपने परिवार के ऊपर भी खर्च कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि इस मदर यूनिट से एकता ग्राम संगठन, अवतार ग्राम संगठन, प्रकाश ग्राम संगठन, आकाश ग्राम संगठन एवं हरियाली ग्राम संगठन की करीब 325 दीदियाँ जुड़ी हैं और उन्हें मुर्गे एवं मुर्गियां उपलब्ध करवाये जाते हैं।" रेखा देवी उत्साहित होकर बताती हैं कि –"यह काफी अच्छा काम है। कहीं कोई परेशानी नहीं है। हाँ, हैचरी से चूजे आने में काफी कठिनाई होती है। मांग के बाद भी चूजे उपलब्ध करवाने वाली कंपनियां समय पर चूजे उपलब्ध नहीं करवा पाते हैं। उन्होंने बताया कि इन मुर्गों की बाजार में काफी मांग है। लोग इसकी कीमत भी काफी अच्छी देते हैं। उन्होंने बताया कि अगर उन्हें भविष्य में जीविका का सहयोग नहीं भी मिलेगा तो वे इस व्यवसाय को संचालित करती रहेंगी।"

नाम	:	रेखा देवी
पति	:	शंकर दास
यूनिट का नाम	:	एकता मदर यूनिट, कवैया
पता	:	टोला–कवैया, ग्राम–रजनी, पंचायत–रजनी, प्रखंड– मुरलीगंज, जिला–मधेपुरा
समूह	:	भगवती जीविका स्वयं सहायता समूह, कवैया

- जीविका की मदद से मदर यूनिट खोला।
- मदर यूनिट का संचालन सफलतापूर्वक कर रही हैं।
- मदर यूनिट के संचालन से उन्हें काफी आर्थिक मदद प्राप्त हो रही है।
- समूह से लिये ऋण को भी वापस कर चुकी हैं।
- रेखा देवी की पहचान क्षेत्र में एक सफल व्यवसायी के रूप में हो रही है।

अध्याय - 12

महिला किसान सशक्तीकरण परियोजना

महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना की शुरुआत वर्ष 2012 में की गई जिसमे, बिहार के 9 जिलों–पूर्णिया, खगड़िया, नालंदा, गया ,मधुबनी, मुजफ्फरपुर के साथ ही कोशी प्रमंडल के सहरसा, सुपौल और मधेपुरा के 15 प्रखंडों में इसकी शुरुआत की गई। महिला किसान सशक्तीकरण परियोजना का उद्देश्य किसानों को कम कीमत पर अच्छी उपज के साथ ही किसानों की उपज का सही मूल्य दिलाना है। इसकी भी कोशिश उत्पादक समूहों और उत्पादक कम्पनी के माध्यम से की जाती है। इसके तहत जैविक खेती के बारे में लोगो को जानकारियाँ दी गई। जीवामृत, नीमास्त्र द्वारा जैविक खेती करने की तकनीक से किसानों को जोड़ा गया। इससे उन्हें दोहरा लाभ होने लगा। एक तरफ तो रासायनिक खाद पर हो रहे खर्च से किसानों को मुक्ति मिली तो दूसरी तरफ फसलों की पैदावार भी अच्छी होने लगी। इस परियोजना के तहत अबतक एक लाख उन्नीस हजार किसानों को जोड़ा जा चुका है। इन सब के साथ ही किसानों को अनुकूल मौसम में कैसे खेती करनी चाहिए–इसके लिये भी जीविका ने वर्ष 2016 से बिहार के दो जिलों गया और मधुबनी के दो–दो प्रखंडो में इसकी शुरुआत की है। इसके तहत अगले तीन साल छह महीनों में 200 गॉवों में कार्य किया जायेगा। इसका मकसद किसानों को खराब मौसम के बीच भी उन्नत किस्म के बीजों के द्वारा अच्छी फसलों की उपज करना है। इस परियोजना के पायलट के तौर पर सूखा प्रभावित गया जिला और बाढ़ प्रभावित मधुबनी जिले का चयन किया गया है।

पिछड़े गाँव में इस्तेमाल हो रहे खेती के हाइटेक तरीके

प्राकृतिक आपदा के बाद लोग टूट जाते हैं। यह बात एक हद तक सच भी है, लेकिन यह भी उतनी बड़ी हकीकत है कि इसके बाद उनमें जीवन को लेकर एक नया जोश आ जाता है। वे अपने पैरों पर फिर से खड़े होने के लिए बेताब होते हैं। आपदा उन्हें और भी ज्यादा जीवट देती है। इसका एक बड़ा उदाहरण मधेपुरा जिले का कुमारखंड प्रखंड है। वर्ष 2008 की बाढ़ ने इस प्रखंड को काफी नुकसान पहुंचाया लेकिन इस प्रखंड के लोगों उससे सीख लेकर आज कुछ नया कर रहे हैं। आज इस प्रखंड की महिलाएँ मजबूती से अपने कामों को अंजाम दे रही हैं, खासकर खेती के कामों को। जब यहां की महिलाओं को आधुनिक तकनीक से खेती करते देखेंगे तो सहसा आपको विश्वास नहीं होगा। यहां की महिलाएं खेती में नित्य नये प्रयोग कर ही रही हैं, वहीं हाइटेक तरीकों एवं संसाधनों का भी इस्तेमाल अपने खेती के कार्य में करती दिख जाती हैं। परंपरागत खेती से अलग हटकर काम करने के कारण इन महिलाओं की काफी चर्चा भी होती है।

यह सब संभव हो पाया महिला किसान सशक्तीकरण परियोजना के द्वारा। मधेपुरा जिले के कुमारखंड प्रखंड में परियोजना द्वारा अब तक 10934 महिलाओं को आधुनिक खेती के तरीकों पर प्रशिक्षण दिया जा चुका है। वहीं इन महिलाओं को खेती करने के नये–नये साधन यथा– कोनोविडर, पंपसेट, एसआरआई मिडर विडर, एसडब्ल्यू विडर, बोरिंग, स्प्रेयर, स्प्रेयर डकोर आदि भी उपलब्ध कराये गये हैं। इन साधनों का उपयोग कर ये महिलाएँ अपनी हानि वाले खेती को लाभ का व्यवसाय बना रही है। इस परियोजना के अंतर्गत महिलाओं द्वारा 260 वर्मी कम्पोस्ट का निर्माण भी किया गया है ताकि उसका उपयोग खेती कार्य में किया जा सके।

- महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना की मदद से महिलाओं को आधुनिक खेती के तकनीकों की दी जा रही जानकारी।
- 10934 महिलाओं को आधुनिक खेती प्रशिक्षण।
- महिलाओं को खेती हेतु नये–नये साधन यथा–कोनोविडर, पंपसेट, एसआरआई मिडर विडर, स्प्रेयर, स्प्रेयर डकोर आदि उपलब्ध करवाया गया है।

बारह पूर्वी, भटनी की निवासी एवं जीविका से जुड़ी शांति देवी कहती हैं कि पहले तो झिझक भी होती थी और डर भी लगता था, लेकिन अब हमारा आत्मविश्वास भी बढ़ा है और हमें खेती के काम में मजा भी आता है। दीपक कुमार की पत्नी पूजा देवी भी खेती के कार्यों से जुड़ी हुई हैं और बताती हैं कि जीविका के द्वारा हमें काफी सशक्त किया गया है। अब हम खेती जैसे कार्यों में काफी रूचि लेती हैं और हमारे घर की आमदनी भी बढ़ गयी है। वहीं भरनी के ही दिनेश राम की पत्नी रीता देवी का मानना है कि आज जीविका के कारण ही हम इस प्रकार की आधुनिक खेती कर पा रहे हैं। पहले तो लोग मजाक भी उड़ाते थे लेकिन अब स्थिति उलट है। अब खेती के कार्यों का नेतृत्व भी हम कर रही हैं।

अध्याय - 13

बदलाव: 'खुले में शौच से मुक्ति अभियान' में अग्रणी

02 अक्टूबर 2019 तक बिहार को 'खुले में शौच से मुक्त' करने के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में काफी तेजी से कार्य किया जा रहा है। राज्य सरकार की प्राथमिकताओं में शामिल इस कार्य को अंजाम तक पहुंचाने के लिए अभिनव रणनीति का प्रयोग किया जा रहा है। सरकार की रणनीति के कारण आज शौचालय का निर्माण संपूर्ण मधेपुरा में जनआंदोलन का रूप धारण कर चुका है। लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान के तहत राज्य को खुले में शौच से मुक्त बनाने के संकल्प को जीविका के सहयोग से सफलता तक पहुंचाने का कार्य प्रारंभ कर दिया गया है। स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) एक केन्द्रीय सहायता प्रदत योजना है, और इसके अंतर्गत ग्रामीण परिवारों को वैयक्तिक पारिवारिक शौचालय एवं इसके उपयोग के लिए प्रोत्साहन, सार्वजनिक स्थानों पर सामुदायिक स्वच्छता परिसरों का निर्माण तथा समुदाय आधारित ठोस एवं तरल कचरा प्रबंधन जैसे कार्यक्रम का कियान्वयन किया जाना है। वहीं, लोहिया स्वच्छता योजना राज्य द्वारा सहायता प्रदत योजना है, जिसके तहत शौचालय निर्माण के संदर्भ में क्षेत्र विशेष के संपूर्ण आच्छादन हेतु वैसे अन्य चिन्हित श्रेणी के एपीएल परिवारों, जो स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के अंतर्गत सम्मिलित नहीं हैं – के लिए व्यक्तिगत पारिवारिक शौचालय का निर्माण कराया जाना है।

खुले में शौच से मुक्त वार्ड, ग्राम बनाने हेतु निर्धन परिवारों को जीविका के संकुल संध, ग्राम संगठनों द्वारा चिन्हित कर विशेष रूप से व्यक्तिगत शौचालय निर्माण हेतु नियमित रूप से उनका उत्प्रेरण किया जा रहा है। वैसे निर्धन परिवार जिनकी मासिक आय काफी कम है उन्हें शौचालय निर्माण हेतु आवश्यक ऋण राशि उपलब्ध करवाई जा रही है जिसमें, परिक्रमी निधि ग्राम संगठन के माध्यम से गरीब परिवार को ऋण के रूप में उपलब्ध कराया जा रही है। शौचालय निर्माण तथा प्रोत्साहन राशि मिलने के बाद लाभार्थी परिक्रमी राशि को ग्राम संगठन को लौटा भी रही हैं। जीविका समूहों से जुड़े निर्धन परिवारों को शान फंड या सीआईएफ फंड एवं अन्य निर्धन परिवारों को बैंक लिंकेज के माध्यम से भी राशि उपलब्ध करायी जा रही है। इन गतिविधियों के साथ इस बात का विशेष ध्यान रखा जा रहा है कि शौचालय निर्माण रणनीति में दिव्यांग अनुकूल शौचालय को भी प्राथमिकता दी जाय।

लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान के क्रियान्वयन हेतु
ग्रामीण स्वच्छता मार्ट
हिमालय जीविका महिला संकुल संघ के द्वारा संपोषित

जीविका
(गरीबी उन्मुलन हेतु बिहार सरकार की पहल)
बिहार सरकार
बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति
लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान, बिहार सरकार
खुले में शौच मुक्त
स्वच्छ भारत

नाम : सोनिया देवी
समूह : भगवान जीविका स्वयं सहायता समूह
संगठन : रौशन जीविका महिला ग्राम संगठन
संघ : सद्भावना जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ
पंचायत : धैलाढ़, इनरवा, वार्ड–08, प्रखंड– धैलाढ़,
जिला : मधेपुरा

- मेरे ससुराल में घर के सब लोग खुले में शौच के लिए जाते थे।
- जब मैंने खुले में जाने से मना किया तो ससुराल में मैं हंसी का पात्र बन गयी।
- मेरे प्रयास से दर्जनों दीदियों ने शौचालय का निर्माण करवाया। मैं अपना गुस्सा दूसरों के घरों में शौचालय का निर्माण कर निकाल रही थी।

सबों की प्रेरणा बनी सोनिया

सोनिया देवी शादी के पहले कभी घर से बाहर खुले में शौच के लिए नहीं गयी थी। सोनिया देवी ने कभी नहीं सोचा था कि उनकी जहां शादी हो रही है, वहां उन्हें खुले में शौच के लिए जाना होगा। सोनिया देवी बताती हैं – पहली सुबह ससुराल में कुछ महिलाओं ने मुझे जगाया और बाहर शौच के लिए चलने के लिए कहा। यह सुनकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ और मैं परेशान भी हो गयी। पहली बार तो मैंने मना कर दिया और अपने पति से इस बारे में बात की। मैंने जब उनसे बात की तो उन्होंने बताया कि हम सब शौच के लिए बाहर ही जाते हैं। तुम्हें भी बाहर ही जाना होगा। यह सुनकर मेरी आंखों में आंसू आ गये। मुझे कुछ कहते ही नहीं बना। आखिर, मुझे भी उन महिलाओं के साथ खुले में शौच के लिए जाना पड़ा। बहुत मुश्किल से मेरे दिन कट रहे थे। 15 दिनों के बाद जब मायके से मेरे पिता मुझे लेने आये तो मेरी जान–में–जान आई। मुझे लगा कि मैं जेल से आजाद हुई हूँ। इसके बाद सोनिया वापस अपने ससुराल वापस नहीं गयी। इस मुद्दे पर मेरे पति और मेरी सास से मेरा काफी झगड़ा हुआ। उनलोगों का कहना था कि जब घर के सारे लोग शौच के लिए बाहर जाते हैं तो तुम्हें क्या परेशानी है? मैंने उनसे कहा मैं तबतक वापस ससुराल नहीं आऊंगी, जब तक वहां शौचालय नहीं बनेगा। यह सिलसिला करीब एक वर्ष चला। पति ने कई बार आश्वासन भी दिया, एक दिन मेरे पति झूठ बोलकर मुझे ससुराल ले गए कि शौचालय बनवा दिया है। लेकिन ससुराल जाकर पता चला उन्होंने मुझसे झूठ कहा था। इस मुद्दे पर मेरी पति से बहस भी हो गयी। ससुराल में मैं हंसी का पात्र बन चुकी थी। लेकिन मैंने हार नहीं मानी। मैंने अपनी लड़ाई जारी रखी। इसी बीच समूह, ग्राम संगठन में जब शौचालय निर्माण के बारे में चर्चा होती थी और अन्य दीदियाँ को शौचालय के फायदों के बारे में बताती थीं। मेरे प्रयास से दर्जनों दीदियों ने शौचालय का निर्माण करवाया। मैं अपना गुस्सा दूसरों के घरों में शौचालय का निर्माण कर निकाल रही थी। इधर, मैंने अपनी ससुराल में शौचालय निर्माण के लिए प्रयास जारी रखा। इधर, मेरे प्रयास से अपने–अपने घरों में शौचालय का निर्माण करवाने वाली दीदियों ने मेरी सास एवं मेरे ससुर को समझाना आरंभ कर दिया। उन दीदियों ने बताया कि कैसे मेरे प्रयास से उन्होंने घरों में शौचालय का निर्माण करवाया और अब काफी बेहतर जिन्दगी जी रही हैं। उन दीदियों ने मेरे सास–ससुर को को बताया कि आप पैसों की चिंता नहीं करें लेकिन तब भी मेरे सास–ससुर शौचालय बनवाने के लिए तैयार नहीं हुए। अंत में मैं वापस अपने मायके चली गयी। घर में काफी विवाद हुआ। ससुराल के लोगों ने फिर कहा कि अगर तुम पैसे का इंतजाम कर सकती हो तो शौचालय का निर्माण करवा लो। आखिर समूह से कर्ज लेकर मैंने ससुराल में शौचालय बनाया। अब घर के साथ ससुराल में भी खुले में कोई शौच के लिए बाहर नहीं जाता।

अन्नपूर्णा देवीः शौचालय के लिए लड़ी जंग

अन्नपूर्णा देवी की कहानी दीपक तले अँधेरा जैसी है। शादी के पूर्व अन्नूर्णा देवी शौच के लिए हमेशा शौचालय का ही प्रयोग करती थी। लेकिन उनकी शादी जहां हुई वहां घर में शौचालय नहीं था। अन्नपूर्णा देवी बताती हैं कि मैंने अपने ससुराल के लोगों को समझाने का काफी प्रयास किया लेकिन वे समझने के लिए तैयार नहीं हुए और न शौचालय बनाने के लिए तैयार हुए। मैं काफी परेशान थी। लेकिन मेरे लिए समूह एक आशा की किरण बनकर आया। समूह की बैठकों में शौचालय निर्माण पर चर्चा होती थी। हमसब खुले में शौच से काफी परेशान थीं। हमलोग आपस में इस पर काफी चर्चा करती थी। आखिर एक दिन हमलोगों ने यह निर्णय लिया कि इस सामाजिक कुरीति के खिलाफ ग्राम संगठन में चर्चा करें और किसी भी प्रकार इस समस्या का समाधान करें। ग्राम संगठन में जब खुले में शौच से मुक्त समाज के निर्माण एवं घरों में शौचालय निर्माण पर चर्चा हुई तो सभी दीदियों ने संकल्प लिया कि वे अपने–अपने घरों में किसी भी प्रकार शौचालय का निर्माण कर खुले में शौच रूपी कुप्रथा से निजात पायेंगी। अन्नपूर्णा देवी बताती हैं कि हमलोगों के संकल्प का नतीजा यह निकला कि सभी दीदियों ने समूह से कर्ज लेकर शौचालय का निर्माण करवाना प्रारंभ कर दिया। मैंने भी जब अपने घर में शौचालय निर्माण की बात की शौचालय निर्माण के फायदे बताये तो सभी ने अपनी सहमति दे दी। यह मेरे लिए खुशी की बात थी। क्योंकि मेरा सपना जो पूरा हो रहा था। मैंने समूह से कर्ज लेकर शौचालय का निर्माण करवाना आरंभ कर दिया। अन्नपूर्णा देवी बताती हैं कि आखिर मेरी लड़ाई एक मुकाम तक पहुंची। दूसरों के लिए भी प्रेरणा का कार्य कर रही है। आज हमारे गांव की सारी महिलाओं के घरों में शौचालय है और हमें गर्व का अनुभव हो रहा है।

नाम	:	अन्नपूर्णा देवी
समूह	:	जानकी स्वयं सहायता समूह
संगठन	:	दीपक जीविका महिला ग्राम संगठन
संघ	:	सद्भावना संकुल स्तरीय संघ
पता	:	पंचायत– धैलाढ़, इनरवा, वार्ड–08, प्रखंड–घैलाढ़, जिला–मधेपुरा

- शौचालय का निर्माण कर खुले में शौच रूपी कुप्रथा से निजात पाया।
- जीविका की मदद से आज मेरे घर में भी शौचालय का निर्माण हो सका।
- आज हमारे गांव की सारी महिलाओं के घरों में शौचालय है।

अध्याय - 14

प्रयास: मुख्यमंत्री संथाल सुनिश्चित रोजगार कार्यक्रम

मधेपुरा जिला में संथाल जाति की आबादी करीब 20 हजार है। राज्य में पूर्ण शराबबंदी के पश्चात् जिले के संथालों को वैकल्पिक रोजगार प्रदान हेतु जिला प्रशासन द्वारा जीविका एवं आरसेटी के संयुक्त प्रयास से मुख्यमंत्री संथाल सुनिश्चित स्वरोजगार कार्यक्रम की शुरूआत की गयी। यह कार्यक्रम मुख्य रूप से मधेपुरा के मुरलीगंज, बिहारीगंज एवं ग्वालपाड़ा प्रखंडों के संथाली परिवारों के बीच चलाया जा रहा है। जीविका द्वारा संथाली समुदाय की महिलाओं के बीच स्वयं सहायता समूहों का गठन किया गया है। अबतक गठित समूहों की संख्या 32 है, जिससे 384 परिवारों को जोड़ा जा चुका है। 2 ग्राम संगठन भी इन समुदायों द्वारा चलाया जा रहा है। साथ ही इन महिलाओं एवं इनके परिवारों के बीच रोजगार की उपलब्धता के लिए विभिन्न ट्रेडों में प्रशिक्षण भी दिया गया है। अभी तक वर्मी कंपोस्ट पर प्रशिक्षण, राजमिस्त्री एवं सहायक राज मिस्त्री ट्रेड पर प्रशिक्षण, कृषि कार्य के लिए प्रशिक्षण, सेना/पुलिस/सुरक्षा गार्ड भर्ती हेतु प्रशिक्षण, गव्य, बकरी एवं मुर्गी पालन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम से कुल 50 लोगों को प्रशिक्षित किया जा चुका है। इन प्रशिक्षणार्थियों में अधिकांश .ने खुद का रोजगार आरंभ कर दिया है।

मिशन अंत्योदय : ग्राम समृद्धि एवं स्वच्छता पखवाड़ा

अध्याय - 15

मधेपुरा, जीविका द्वारा 01 अक्टूबर से 15 अक्टूबर 2017 तक मिशन अंत्योदय के तहत ग्राम समृद्धि एवं स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन उल्लासपूर्ण वातावरण में 'सुंदर गांव–समृद्ध गांव' के संकल्प को पूरा करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया। जिले के विभिन्न प्रखंडों में जीविका द्वारा संपोषित 20 हजार से ज्यादा समुदाय आधारित संगठनों में एक लाख से अधिक जीविका दीदियों ने अपनी उपस्थिति विभिन्न गतिविधियों में प्रर्दशित की। जीविका दीदियों द्वारा इस पखवाड़े में विभिन्न गतिविधियों का आयोजन कर गांवों के वातावरण को स्वच्छ बनाने, ग्राम सभा की बैठकों में भागीदारी कर अपनी गांव की जरूरतों के हिसाब से गांव में ही प्रगति से जुड़े विषयों पर चर्चा कर कई महत्त्वपूर्ण फैसले लिए। मिशन अंत्योदय के तहत जिले की विभिन्न 170 पंचायतों जहां जीविका की पहुंच है में 1300 से ज्यादा ग्राम संगठनों द्वारा विभिन्न गतिविधियों में किसी न किसी रूप से भागीदारी निभाई गयी। इन गतिविधियों द्वारा खुशहाल, स्वच्छ और समृद्ध गांव का जो सपना राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का था, उसे जीविका, मधेपुरा द्वारा पूरा करने का प्रयास किया गया।

01 से 15 अक्टूबर 2017 को जीविका, मधेपुरा द्वारा विभिन्न समूहों, ग्राम संगठनों, संकुल स्तरीय संगठनों आदि में स्वच्छता के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखकर स्वच्छता अभियान चलाया गया, जिसमें 50 हजार से ज्यादा जीविका दीदियों ने अपनी प्रतिभागिता दी। जीविका दीदियों द्वारा ग्राम सभाओं में भी अपनी सक्रिय भागीदारी निभाई गयी और कई महत्वपूर्ण फैसलों के साथ कई पंचायतों को समूह निर्माण के मामले में संतृप्तता की घोषणा करवाई गयी। जीविका, समस्तीपुर द्वारा स्वच्छता, स्वास्थ्य एवं पोषण के मुद्दे पर विभिन्न प्रकार का प्रशिक्षण कार्यक्रम, सूचना प्रद सामग्रियों का प्रदर्शन एवं फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। हाथ धोने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने, शौचालयों का निर्माण एवं उसके उपयोग को बढ़ाने जैसी गतिविधियां गांव स्तर एवं व्यक्तिगत स्तरों पर भी संचालित की गयी।

बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने, बाल विवाह एवं दहेज प्रथाओं को रोकने के लिए भी जीविका दीदियां लामबंद हुईं। जीविका दीदियों ने जागरूकता रैली, प्रभात फेरी सहित कई शपथ समारोहों का भी आयोजन किया। जीविका दीदियां दहेज के खिलाफ अभियान और बाल विवाह को रोकने के लिए खुलकर सामने आईं। इन गतिविधियों में भी 50 हजार से अधिक जीविका दीदियों ने अपनी सक्रिय भागीदारी निभाई। विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों में भी जीविका दीदियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना के तहत जीविका, मधेपुरा द्वारा मधेपुरा सदर प्रखंड में रोजगार सह मार्गदर्शन मेला का आयोजन भी इस पखवाड़े के तहत किया गया जिसमें 2700 से ज्यादा युवाओं ने अपना निबंधन करवाया तथा 400 से ज्यादा युवाओं को रोजगार उपलब्ध करवाया गया। इसी गतिविधि के तहत कौशल पंजी में जिले से कुल 1200 से अधिक युवाओं का आन लाईन और ऑफ लाइन पंजीकरण किया गया। इसके अलावे भी जिले भर में विभिन्न विभागों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में भी जीविका दीदियों द्वारा अपनी सक्रिय प्रतिभागिता निभाई गयी और मिशन अंत्योदय के तहत ग्राम समृद्धि एवं स्वच्छता पखवाड़ा का सफल आयोजन किया गया।

अध्याय - 16

सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जीविका दीदियों की जंग

जीविका मधेपुरा से जुड़ी जीविका दीदियों ने सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ भी जंग लड़ी और उसमें विजयी हुई। मामला शराबबंदी का हो या बालविवाह या दहेज प्रथा का सभी में जीविका दीदियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया और इसे परिणति तक पहुंचाने का कार्य किया।

रेणु देवीः नशे के खिलाफ लड़ी जंग

नशा ने हमारे गांव को बर्बाद कर दिया, क्या बड़े, क्या छोटे –सभी गांजा व अन्य नशे के आदी होते जा रहे थे। हाल यह था कि शायद ही किसी परिवार का कोई बच्चा या पुरूष इससे बचा होगाा। यह कहते–कहते रेणु देवी चेहरे के तनाव साफ दिखने लगता है और मानों वे अतीत की स्याह गहराई में खो जाती हैं। लेकिन फिर वे सहज होकर कहती हैं, हमने कर दिखाया। हमने अपने गांव को नर्क बनने से बचा लिया। हमने बर्बाद हो रही पीढ़ी को बचा लिया। कुमारखंड प्रखंड के रहटा पंचायत स्थित भवानीपुर की रेणु देवी दीपक जीविका ग्राम संगठन की अध्यक्ष हैं। रेणु देवी बताती हैं कि–हमारे गांव में जबसे जीविका की गतिविधियां आरंभ हुई हम किसी न किसी सामाजिक मुद्दों पर पर सक्रिय थीं। परंतु गांव में बढ़ते नशे के चलन के सामने हम काफी विवश थे। गांव के अधिकांश पुरूष, बच्चे इसके शिकार हो रहे थे। हमारी आंखों के सामने हमारी पीढ़िया बर्बाद हो रही थी। हमने अपने पुरूषों, बच्चों को काफी समझाने का प्रयास किया पर हालात में कोई बदलाव नहीं आया। हमने गंजेरियों को गांजा से होने वाले नुकसान के बारे में बताया, पर कुछ नहीं हुआ। कमाने वाले पुरूष नशा के चक्कर में अपने काम–धाम पर भी ध्यान नहीं देते थे जिसके कारण घरों में आर्थिक समस्या भी आने लगी। रेणु देवी कहती हैं कि–आखिर हमसब दीदियों का धैर्य चूक गया। हमसब दीदियों ने ग्राम संगठन में यह फैसला लिया कि हमसब नशे की इस बुरी लत से अपने परिवार को बचायेंगे और इसका एक ही उपाय है कि जो व्यक्ति नशा उपलब्ध करवाता है, उसे ही समझाया जाए। करीब 50 दीदी गांजा वाले के पास गये और उसका सारा गांजा छीन लिया, चिलम को तोड़ दिया। हमने उसे समझाया कि अगर उसने फिर से गांजा बेचा तो हम पुलिस में शिकायत करेंगे। इसके बाद भी गांजा वाला नहीं माना। उसने हमें देख लेने की धमकी दी। इतने के बाद भी जब वह गांजा बिक्रेता नहीं माना तो हम दीदियों ने उसके खिलाफ थाने में एफआईआर करवाया। मात्र आठवीं पास रेणु देवी कहती हैं कि यह काम काफी जोखिम भरा था लेकिन हमने अपने बच्चों एवं समाज की बेहतरी के लिए यह जोखिम उठाया। अब गांव में शांति भी है और सभी पुरूष अपने–अपने कामों में लगे रहते हैं और बच्चे अपनी पढ़ाई में। पति दिलीप यादव, जो पेशे से किसान हैं, अपनी पत्नी के इस कार्य से काफी खुश हैं। वे गर्व से कहते हैं कि सब अपने परिवार के बारे में सोचते हैं, पर इसने तो पूरे समाज को बचा लिया।

नाम	:	रेणु देवी
पति	:	दिलीप यादव
पता	:	भवानीपुर,रहटा, वार्ड–4, कुमारखंड
समूह	:	शंकर जीविका स्वयं सहायता समूह,
संगठन	:	दीपक जीविका ग्राम संगठन
संघ	:	किरण संकुल स्तरीय संघ

- समाज में फैले नशे के खिलाफ आवाज बुलंद की।
- नशे में लिप्त लोगों को नशे से होने वाले हानियों के बारे में जानकारी दी तथा बचाव के उपाय बताया।
- ग्राम संगठन स्तर से इस कार्य को किया।

मधेपुरा मीडिया की नजर में –

उद्घाटन उदाकिशुनगंज के जीविका कर्मियों ने लगाया जागरूकता शिविर

पशुपालकों ने कराया मुफ्त में पशुओं का इलाज

भास्कर न्यूज | उदाकिशुनगंज

उदाकिशुनगंज की रामपुर खोड़ा पंचायत में बुधवार को पशु चिकित्सा जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर उदाकिशुनगंज के जीविका कर्मियों के तत्वाधान में लगाया गया था। पशु चिकित्सा जागरूकता शिविर का विधिवत उद्घाटन बीपीएम अमरेश अंशुमन ने फीता काटकर किया। जागरूकता शिविर में पंचायत के लगभग 280 पशुपालकों ने हिस्सा लिया और मुफ्त में अपने पशुओं के विभिन्न रोगों का इलाज

जागरूकता शिविर का शुभारंभ करते अतिथि।

करवाया। पशुओं के इलाज के दौरान पशुपालकों और पशुओं का निबंधन कराया गया। शिविर में पशुओं का उपचार होने के बाद जीविका द्वारा मुफ्त में दवाइयां उपलब्ध कराई गई। शिविर में मौजूद चिकित्सक डॉ भास्कर ने ठंड के मौसम में पशुओं का रख रखाव और उपचार से संबंधित सलाह दिया। मौके पर मौजूद पशुपालक राजीव कुमार सिंह, राजेंद्र मिश्र, राजेंद्र यादव ,विकास रजक, जवाहर सिंह, डॉ गजेन्द्र सिंहा,जटाशंकर मिश्र, गणेश सिंह, गोपाल सिंह आदि ने जीविका के इस कदम की प्रशंसा की। शिविर में बीपीएम अमरेश अंशुमन, प्रबंधक संचार विवेक कुमार ,रुपेश कुमार , क्षेत्रीय समन्वयक लाल बहादुर, अशोक कुमार, ज्योति कुमारी ,प्रीति कुमारी, चंदन कुमार, विनोद कुमार सिंह, मलिक ठाकुर ,सरोज कुमार, अजय कुमार ,सहित अन्य जीविका कर्मी मौजूद थे।

जीविका ने 3 साल में 1.93 करोड़ की हिस्सेदारी बनायी

भास्कर न्यूज| सिंहेश्वर

सिंहेश्वर प्रखंड में 1550 समूह कार्यरत हैं। जीविका समूह ने महिलाओं का विकास का द्वार खोल दिया है। जीविका द्वारा महज 10 रुपए की साप्ताहिक बचत से समूह ने 1 करोड़ 93 लाख की हिस्सेदारी बना ली है। कल तक सेठ साहूकारों के चंगुल में फंसकर पीस रही मध्य वर्गीय परिवार की महिलाएं आज समूह बनाकर रोजगार चला रही है। इनकी सहायता के लिए कई बैंक आगे आये है। नियमित लेनदेन से आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा है। जरूरत के मुताबिक ऋण का लेन-देन और नियमित वापसी और लेखा-जोखा से जागरूकता बढ़ी है। पहले महाजन से 10 से 30 प्रतिशत तक ब्याज पर ग्रामीण ऋण लेते थे। आज समूह मात्र एक प्रतिशत पर आर्थिक विकास के लिए ऋण दे रहा है। 13 पंचायत में 107 ग्राम संगठन जबकि 2 क्लस्टर लेवल फेडरेशन कार्य कर रहे हैं।

मालूम हो कि वर्ष 2014 में बिहार सरकार द्वारा स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया था। प्रखंड में इस समूह द्वारा 23 करोड़ 56 लाख 69 हजार का टर्न ओवर है। समूह का बैंक द्वारा प्रथम लीकेज में 8 करोड़ 88 लाख 25 हजार मिले।

जीविका

बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति

विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, टैली/फैक्स : +91–612–250 4980/60